# राजस्थान का इतिहास
# History of Rajasthan

1. इतिहास का परिचय
2. प्राचीन सभ्यताऐं
3. अभिलेख / शिलालेख
4. प्रशस्ति
5. सिक्के
6. राजपूतों की उत्पत्ति
7. मेवाड़ रियासत
8. मारवाड़ रियासत
9. बीकानेर रियासत
10. आमेर रियासत
11. अजमेर रियासत
12. रणथम्भौर रियासत
13. जैसलमेर रि
15. भरतपुर रिय
16. 1857 की क्रां
17. किसान आंदो
18. जनजाति आं
19. प्रजामण्डलों
20. एकीकरण
21. प्रमुख व्यक्ति
22. प्रमुख संगठ

RAS Prelims exam syllabus

**राजस्थान का इतिहास, कला, संस्कृति, साहित्य, परम्परा एवं विरासत**

- राजस्थान के प्रागैतिहासिक स्थल–पुरापाषाण से ताम्र पाषाण एवं कांस्य युग तक
- ऐतिहासिक राजस्थानः प्रारम्भिक ईस्वी काल के महत्वपूर्ण ऐतिहासिक केन्द्र। प्राचीन राजस्थान में समाज, धर्म एवं संस्कृति।
- प्रमुख राजवंशों के महत्वपूर्ण शासकों की राजनीतिक एवं सांस्कृतिक उपलब्धियाँ–गुहिल, प्रतिहार, चौहान, परमार, राठौड़, सिसोदिया और कच्छावा। मध्यकालीन राजस्थान में प्रशासनिक तथा राजस्व व्यवस्था।
- आधुनिक राजस्थान का उदय : 19वीं–20वीं शताब्दी के दौरान राजस्थान में सामाजिक जागृति के कारक। राजनीतिक जागरण : समाचार पत्रों एवं राजनीतिक संस्थाओं की भूमिका। 20वीं शताब्दी में जनजाति तथा किसान आन्दोलन, 20वीं शताब्दी के दौरान विभिन्न देशी रियासतों में प्रजामण्डल आन्दोलन। राजस्थान का एकीकरण।

# 1. इतिहास का परिचय

☞ **इतिहास** – घटनाओं का क्रमबद्ध अध्ययन।

☞ इतिहास को तीन भागों में बांटा गया है –

1. प्रागैतिहास – **आदिमानव काल**
2. आद्य इतिहास – **सभ्यताओं का युग**
3. इतिहास – **राजनैतिक घटना क्रम प्रारंभ**

- आदि मानव के इतिहास की जानकारी आधारित है –**अनुमानों पर**
- आद्य इतिहास की जानकारी के स्त्रोत – **साक्ष्य**
- इतिहास की जानकारी के प्रमुख स्त्रोत – **साहित्य**

**औजारों के क्रम में इतिहास –**

1. **पाषाण युग** 2. **ताम्र युग**
3. **कांस्य युग** 4. **लौह युग**

- सभ्यताओं का जन्म हुआ – **नवपाषाण युग में**
- सभ्यतायें नदी–घाटियों के किनारे फली– फूलीं।
- भारत की प्रमुख सभ्यता **हडप्पा कांस्य युगीन** सभ्यता है।
- राजस्थान में सभ्यताओं का जन्म **ताम्र पाषाण** युग में हुआ।
- राजस्थान में सभ्यताओं का चर्मोत्कर्ष काल – **ताम्र युग।**
  राजस्थान की सबसे प्राचीन सभ्यता– **बागौर की सभ्यता तिलवाडा**
- राजस्थान में ताम्रयुगीन सभ्यताओं की जननी – **गणेश्वर सभ्यता**
- इतिहास का पिता – **हेरोडोट्स**
- भारत में इतिहास का जनक/ पिता – **वेदव्यास**
- भारत की प्रथम एतिहासिक मानक पुस्तक माना जाता है – **राज तरंगिणी**
  इस पुस्तक में कश्मीर के इतिहास का वर्णन है।
- राज तरंगिणी के लेखक – **कल्हण**
- राजस्थान का समग्र इतिहास लेखन का प्रथम प्रयास – **मुहणौत नैणसी**
- **मुहणौत नैणसी** मारवाड शासक **जसवंत सिंह** का दरबारी कवि था।
- मुहणौत नैणसी को राजस्थान का **अबुल फजल** कहा जाता है।
- राजस्थान के इतिहास परक ग्रंथों को कहा जाता है–**विगत**
- राजस्थान के महत्वपूर्ण विगत साहित्य – **मारवाड रा परगना री विगत**
- राजस्थान के इतिहास का जनक – **कर्नल जेम्स टॉड**
- **कर्नल जेम्स टॉड** मेवाड रियासत के **पॉलिटिकल एजेन्ट** थे।
- कर्नल जेम्स टॉड को **घोडे वाले बाबा** के नाम से जाना जाता है।

**राजस्थान के इतिहासकाल को तीन भागों में बांटा गया है –**

1. प्राचीन राजस्थान – सभ्यता, शिलालेख, प्रशस्ति, सिक्के
2. मध्यकालीन राजस्थान – रियासतों का इतिहास
3. आधुनिक राजस्थान – संधियां, 1857 की क्रान्ति, किसान, जनजाति एवं प्रजामण्डल आंदोलन और राजस्थान का एकीकरण

**बात** – कथा–कहानी वाले ग्रन्थ

**ख्यात** – शासक की प्रशंसा वाले ग्रन्थ

**विगत** – इतिहास परक ग्रन्थ

**फरमान** – यह एक शाही आदेश होता था जिसे शहजादे या मुगल बादशाह जारी करते थे।

☞ **रूक्का**– राज्य के अधिकारियों के मध्य पत्र व्यवहार को रूक्का कहते थे।

☞ **सनद्**– एक प्रकार की स्वीकृति होती थी जिसके द्वारा मुगल बादशाह अपने अधीनस्थों को जागीर प्रदान करता था।

☞ **खरीता**– यह उन पत्रों को कहा जाता था जो एक शासक द्वारा दूसरे शासक को भेजा जाता था।

☞ **हकीकत बही** – इसमें राजा की दैनिक दिनचर्या का उल्लेख मिलता है।

☞ **खरीता बही** – इसमें राजा को प्राप्त होने वाले महत्वपूर्ण पत्रों की नकल होती थी।

☞ राजस्थान राज्य अभिलेखागार की स्थापना – **1955 (जयपुर)** 1960 में इसे **बीकानेर** परिवर्तित कर दिया गया।

☞ **न्यूमिस मेटिक्स** – सिक्कों के अध्ययन को न्यूमिस मेटिक्स कहा जाता है।

☞ **एपिग्राफी** – अभिलेखों (शिलालेख) के अध्ययन को एपिग्राफी कहा जाता है।

☞ **पेलियोग्राफी** – लिपिओं के अध्ययन को पेलियोग्राफी कहा जाता है।

☞ **पेलियन्टोलॉजी** –जीवाश्मों के अध्ययन को पेलियन्टोलॉजी कहा जाता है।

# 2. सभ्यताऐं

| सभ्यता | जिला | नदी | खुदाईकर्ता | सन् |
|---|---|---|---|---|
| बागौर | भीलवाडा | कोठारी | बीएन मिश्र | 1967 |
| आहड | उदयपुर | आयड/बेडच | ए.के. व्यास | 1953 |
| बैराठ | जयपुर | बाणगंगा | दयाराम साहनी | 1987 |
| गणेश्वर | सीकर | कांतली | आर.सी. अग्रवाल | 1977 |
| कालीबंगा | हनुमानगढ | घग्घर | बी.बी.लाल व बी.के. थापर | 1952 |
| बालाथल | उदयपुर | बनास | बी.एन. मिश्र | 1993 |
| नोंह | भरतपुर | रूपारेल | आर.सी.अग्रवाल | 1963 |
| गिलूण्ड | राजसमंद | बनास | बी.बी.लाल | 1957 |
| रंगमहल | हनुमानगढ | घग्घर | स्वीडिश दल | 1952–53 |

## बागौर सभ्यता –

जिला – **भीलवाडा**

नदी – **बनास (कोठारी)**

- बागौर राजस्थान की **सबसे प्राचीन** सभ्यता है।
- बागौर सभ्यता राजस्थान में **पाषाण युगीन** सभ्यता हैं
- बागौर सभ्यता का प्रमुख उपस्थल – **ओझियाणा (भीलवाडा)**
- बागौर सभ्यता के समकक्ष राजस्थान की एकमात्र सभ्यता – **तिलवाडा (बाडमेर)**

- बागौर सभ्यता के खुदाई कर्त्ता – **बी.एन. मिश्रा**
- आदिम संस्कृति का संग्रहालय कहा जाता है – **बागौर**
- मानव द्वारा बनाया गया पहला औजार – **कुल्हाडी**

## बालाथल सभ्यता –

जिला – **उदयपुर**

नदी – **बनास**

- उत्खनन – बी.एन. मिश्र
- **प्रमुख साक्ष्य** – तांबे के बर्तन व आभूषण के साक्ष्य मिले हैं।
- सांड एवं कुत्ते की मृदमूर्ति मिली हैं।
- बालाथल में **लोहे गलाने** की **पांच भट्टियां** पायी गयी है।
- राजस्थान में **कपडे** के साक्ष्य की दो सभ्यतायें – **बालाथल और बैराठ** में पाये गये है।
- बालाथल सभ्यता **कांस्य युगीन** सभ्यता है।

## आहड़ सभ्यता

जिला – **उदयपुर**

नदी – **आयड/ बेढच**

- आहड सभ्यता राजस्थान की सबसे **महत्वपूर्ण सभ्यता** मानी जाती है।
- आहड सभ्यता के अन्य नाम – **धूलकोट, ताम्रवती नगरी, आघाट पुर**
- आहड को पहले **अहार** कहा जाता था।
- **गोर** और **कोठ** – **आहड सभ्यता में अनाज भण्डार पात्र**।
- आहड में **तांबे** की **कुल्हाडियां** पायी गयीं है।
- आहड सभ्यता के खुदाई कत्ता – **अक्षय कीर्तिव्यास, एच. डी. सांकलिया**।
- आहड सभ्यता दक्षिण-पश्चिम राजस्थान की सभ्यताओं का केन्द्र मानी जाती है।
- एक घर में 6 चूल्हों के प्रमाण पाये गये हैं – **आहड**
- पत्थर की चक्की पाई गई है – **आहड में**
- सिल-लोडी पाई गई है – **आहड में**
- बिना हत्थे के छोटे जलपात्र – आहड में
- यूनानी देवता अपोलो वाली मुद्रायें मिली हैं – **आहड में**

## बैराठ सभ्यता

जिला – **जयपुर**

नदी – **बाणगंगा**

- बैराठ सभ्यता **महाकाव्य युग** से संबंधित है।
- राजस्थान में बौद्ध संस्कृति का प्रमुख केन्द्र – **बैराठ**
- सम्राट **अशोक** का **भाब्रू** शिलालेख बैराठ से मिला है।
- **भाबूं** शिलालेख से **अशोक** के बौद्ध मतानुयायी होने के प्रमाण मिलते है।
- जनपद काल में बैराठ **मत्स्य जनपद** की राजधानी था तथा इसे **विराट नगर** कहा जाता था।
- **पंचमार्क** तथा **इण्डोग्रीक सिक्के** बैराठ सभ्यता में पाये गये है।
- बैराठ में एक **स्वर्ण मंजूषा** प्राप्त हुई है।
- **बौद्ध स्तूप एवं मठ** (गोलमंदिर) बैराठ सभ्यता में पाये गये है।
- **ह्वेनसांग** ने राजस्थान में **भीनमाल** के अलावा बैराठ की यात्रा की थी।
- **बीजक की पहाडी, डूंगरी, भोमली** बैराठ सभ्यता के उपकेन्द्र है।
- अशोक का शिलालेख बैराठ में किसने खोजा था – **कैप्टन बर्ट ने**
- धार्मिक वास्तुकला का प्राचीनतम उदाहरण – **बौद्ध मंदिर (बैराठ)**
- शंख लिपि के प्रमाण – **बैराठ में**
- पाण्डवों ने अपने अज्ञातवास का समय बिताया था– **बैराठ में**

## कालीबंगा सभ्यता

जिला – **हनुमानगढ** नदी – **घग्घर**

- खोजकर्त्ता – **अमलानंद घोष**
- खुदाई कर्त्ता – **बी.बी. लाल तथा बी.के. थापर**
- कालीबंगा शब्द का शाब्दिक अर्थ – **काले रंग की चूडियां**
- **जुते हुये खेत के साक्ष्य** प्राप्त हुये हैं – **कालीबंगा से**
- **हवन कुण्ड** तथा **तंदूर** के साक्ष्य – **कालीबंगा**
- राजस्थान में हडप्पा संस्कृति का प्रमुख केन्द्र – **कालीबंगा**
- कालीबंगा सभ्यता के उपस्थल – **पीलीबंगा और रंगमहल** (हनुमानगढ)
- राजस्थान का वह स्थल (सभ्यता) जिले **यू.एन.ओ.** द्वारा संरक्षित स्थलों में शामिल किया गया है – **कालीबंगा**
- कालीबंगा सभ्यता हडप्पा के तीनों युगों से संबंध रखती है।
  1. **प्राक्हडप्पा काल**
  2. **हडप्पा काल**
  3. **उत्तर हडप्पा काल**
- इस सभ्यता में एक साथ दो फसलों का होना के साक्ष्य मिले हैं।
- कालीबंगा में भूकम्प के साक्ष्य मिले हैं।
- लकडी की नालियों के साक्ष्य मिले हैं – **कालीबंगा में**
- घरों में कुए के प्रमाण मिले हैं – **कालीबंगा में**
- शल्य चिकित्सा के प्रमाण मिले हैं – **कालीबंगा में**
- कांसे का सीसा मिला है – **कालीबंगा में**
- हाथीदांत का कंघा के साक्ष्य – **कालीबंगा में**
- कपास की खेती के साक्ष्य – **कालीबंगा में**
- व्याघ्र अंकित मिट्टी की मुहर के साक्ष्य – **कालीबंगा में**
- बहुधान्य कटक कहा गया है – **कालीबंगा को**
- गेंहू व जौ पाया गया है – **कालीबंगा में**
- शंख की चूडी पाई गई है – **कालीबंगा में**

## नोंह की सभ्यता

जिला – **भरतपुर**

नदी – **रूपारेल**

- उत्खननकर्ता – **आर.सी. अग्रवाल**
- शुंग, शक, कुषाण, गुप्त काल के सर्वाधिक साक्ष्य – **नोंह में**
- राजस्थान में **लौह** युगीन संस्कृति का प्रारंभ **नोंह** सभ्यता से माना जाता है।
- **पक्षी** चित्रित कुषाण कालीन **ईंटें** नोंह में पायी गयी है।
- कुषाण कालीन तथा गुप्त कालीन सर्वाधिक साक्ष्य नोंह में पाये गये है।

- नोंह से **यक्ष प्रतिमा (जाखम बाबा)** की मूर्ति प्राप्त हुयी है।
- नोंह सभ्यता के समकक्ष **गुप्त और कुषाण** कालीन स्थल- **बयाना, सोंख, अघापुर**
- राजस्थान का पहला विजय स्तंभ स्थित है - **बयाना**
- कुषाण कालीन सोने के सर्वाधिक सिक्के पाये गये है-**नोंह**

## गणेश्वर सभ्यता

जिला - **सीकर**

नदी - **कांतली**

- गणेश्वर की सभ्यता को **ताम्रयुगीन** सभ्यताओं की जननी कहा जाता है।
- गणेश्वर का प्रमुख उपस्थल - **सुनारी (झुंझनू)**
- तांबे के सर्वाधिक **औजार** गणेश्वर की सभ्यता में पाये गये है।
- गणेश्वर सभ्यता का प्रमुख साक्ष्य - **मछली पकडने का कांटा**
- अन्य साक्ष्य - **तीर, भाले, कुल्हाडी** आदि।
- गणेश्वर सभ्यता के लिये ताम्र आपूर्ति का केन्द्र - **खेतडी**
- हडप्पा सभ्यता के लिये **ताम्र** औजारों की आपूर्ति गणेश्वर सभ्यता से की जाती थी।
- गणेश्वर सभ्यता के प्रमुख खुदाई कर्त्ता - **आर.सी. अग्रवाल, विजय कुमार**
- पत्थरों से निर्मित बांध पाया गया है - गणेश्वर में
- पुरातत्व का पुष्कर कहा जाता है - गणेश्वर को
- गणेश्वर में **तांबे की सुईयां** पाई गई हैं।

## अन्य प्रमुख सभ्यता स्थल

- तिपटिया - दर्रा (कोटा)
- एलाना - जालौर
- सोंथी - बीकानेर
- रैंड - टोंक
- ओलाव, कुण्ड- जैसलमेर
- डाडा थोरा - बीकानेर
- ईसवाल - उदयपुर
- किराणोत - जयपुर
- नैनवा - टोंक
- पूगल - बीकानेर
- जोधपुरा - जयपुर
- कुराडा - नागौर
- पिण्ड पाडलिया चित्तौड
- जायल - नागौर
- गिलूण्ड - राजसमंद
- गरडदा - बूंदी
- ओझियाणा - भीलवाडा
- डडीकर - अलवर
- कालीबंगा प्रथम कहा जाता है - **सौंथी सभ्यता (बीकानेर)**
- प्राचीन राजस्थान का टाटानगर - **रैंड (टोंक)**
- राजस्थान में बौद्धकालीन प्रमुख केन्द्र - **बैराठ (जयपुर)**
- **औसिंया** (जोधपुर), **कोलवी की गुफायें** (झालावाड)
- राजस्थान का वह स्थल जो प्राचीन काल में जैन- बौद्ध-हिन्दु धर्म का प्रमुख केन्द्र था - **औंसिया (जोधपुर)**
- राजस्थान में जैन धर्म के प्राचीन केन्द्र - **औसिंया (जोधपुर), भीनमान (जालौर)**
- खेडा सभ्यता कहा जाता है - **नगर सभ्यता (टोंक)**
- मिट्टी की तलवार पाई गई है - **नलियासर (बीकानेर)**
- राज्य की प्रथम अलंकृत गुफा - **बांका गांव (भीलवाडा)**
- नृत्य मुद्रा में चकतेदार हिरण पाये गये हैं - **गिलूण्ड में**
- तौलने व मापने के बांट पाये गये हैं - **गिलूण्ड में**
- पहियेदार गाडी पाई गई है - **रंगमहल में**
- गुरू शिष्य की मृण्मूर्ति पाई गई है - **रंगमहल**
- बनास संस्कृति में शामिल हैं - **आहड, गिलूण्ड, बालाथल**
- भारत में पशुपालन के प्राचीनतम अवशेष - **बागौर में**
- गायों के साक्ष्य पाये गये हैं - **ओझियाणा (भीलवाडा)**
- भारत की प्राचीनतम भट्टियां - **सुनारी (झुंझुनू)**
- राजस्थान में खोदा गया प्रथम सभ्यता स्थल नगरी (चित्तौड)
- चक्राकार कुये पाये गये हैं - **नगरी (चित्तौड)**

# 3. अभिलेख/शिलालेख

## बडली का अभिलेख

जिला - **अजमेर**

समय - **443 ई.पू.**

- बडली का अभिलेख राजस्थान का सबसे **प्राचीन** अभिलेख माना जाता है।
- बडली अभिलेख से ही जानकारी मिलती है कि **पुष्कर** का प्राचीन नाम **कोंकण** तीर्थ था।
- बडली अभिलेख से पता चलता है कि **अजमेर** एवं **चित्तौड** क्षेत्र में **जैन धर्म** का प्रसार हुआ था।

## बिजौलिया अभिलेख

जिला -**भीलवाडा** समय - 1170

- यह शिलालेख बिजौलिया के **पार्श्वनाथ मंदिर की दीवार** पर उत्कीर्ण है।
- इस अभिलेख को जैन धर्म के **दिगम्बर सम्प्रदाय** से जुडे **श्रावक लोलाक** ने बनवाया था।
- **बिजौलिया** अभिलेख के रचयिता - **गुणभद्र**
- **बिजौलिया** अभिलेख से सर्वाधिक जानकारी **अजमेर व सांभर के चौहानों** की मिलती है।
- **बिजौलिया** अभिलेख में चौहानों को **वत्स गौत्रीय ब्राह्मण** कहा गया है।
- बिजौलिया अभिलेख में प्राचीन स्थल -

बिन्धवल्ली - **बिजौलिया**

शाकम्भरी - **सांभर**

ढिल्लिका - **दिल्ली**

श्रीमाल - **भीनमाल**

जवालीपुर - **जालौर**

## नान्दसा अभिलेख

जिला – **भीलवाडा** समय – **225 ई.पू.**

- नान्दसा अभिलेख **संस्कृत भाषा** में लिखित एक स्तंभ लेख है।
- नान्दसा अभिलेख **तालाब के बीचों बीच** स्थित है।
- ऐसा अभिलेख **जिसे गर्मी के दिनों में ही पढा** जा सकता है।

## चीखे का अभिलेख

जिला – **उदयपुर** समय – **1273 ई.**

- चीखे के अभिलेख से प्रमुख रूपसे **13वीं सदी** के राजस्थान की **राजनैतिक, सांस्कृति, धार्मिक एवं सामाजिक** स्थिति का पता चलता है।
- इस अभिलेख से **बप्पा रावल** के बारे में जानकारी मिलती है।

## घोसुंडी एवं नगरी का अभिलेख

जिला – **चित्तौडगढ** समय – **200–150 ई.पू.**

- **घोंसुडी** एवं **नगरी** अभिलेखों को **जुडवां** अभिलेख भी कहा जाता है।
- राजस्थान में **अश्वमेघ यज्ञ** की जानकारी का प्राचीनतम साक्ष्य – **घोंसुडी अभिलेख**
- **घोसुंडी** एवं **नगरी** अभिलेखों की भाषा **संस्कृत** एवं लिपि **ब्राह्मी** है।
- ये दोंनों अभिलेख वर्तमान में **उदयपुर संग्राहलय** में रखे हुये है।

## बढवा अभिलेख

जिला – **बारां , कोटा** समय – **238 ई.**

- बढवा अभिलेख राजस्थान में **बैष्णव** धर्म के प्रसार/प्रचार की जानकारी का प्राचीनतम स्त्रोत है।

## श्रृंग ऋषि अभिलेख

जिला – **उदयपुर** समय – **1428 ई.**

- राजस्थान में **आदिवासियों** की जानकारी से संबंधित अभिलेख – **श्रृंग ऋषि अभिलेख**
- यह अभिलेख **एकलिंग जी के मंदिर** के पास स्थित है।
- इस अभिलेख का निर्माण **मोकल** के समय बाकी **विलास योगेश्वर** ने करवाया।

## मानमोरी का अभिलेख

जिला – **चित्तौड** समय – 713 ईस्वी

- यह शिलालेख कर्नल जेम्स टॉड को एक स्तंभ पर मानसरोवर झील के किनारे मिला था।
- कर्नल जेम्स टॉड ने इग्लैण्ड जाते समय इसे समुद्र में फेंकवा दिया था।

## सांमोली का अभिलेख

जिला – **उदयपुर** समय – **646 ईस्वी**

- यह शिलालेख मेवाड के गुहिला शासक शिलादित्य से सम्बन्धित है।

## घटियाला का अभिलेख

जिला – **जोधपुर** समय – 861 ईस्वी

- यह शिलालेख चार लेखों के समूह में एक स्तम्भ पर उत्कीर्ण है।
- यह स्तम्भ एक जैन मंदिर में स्थित है।
- जिसे **माता की शाल** कहा जाता है।
- इस शिलालेख में प्रतिहार वंश के शासक **कुक्कुक** का वर्णन मिलता है।

## अन्य प्रमुख अभिलेख

| | | |
|---|---|---|
| **आदिवराह मंदिर का शिलालेख** | – | **उदयपुर** |
| **कणसवा का शिलालेख** | – | **कोटा** |
| **बरनाला का शिलालेख** | – | **जयपुर** |
| **गंगधार का शिलालेख** | – | **झालावाड** |
| **अपराजित** का अभिलेख | – | **नागदा** |
| **भ्रमर माता** का शिलालेख | – | **चित्तौड** |
| **विजयगढ स्तम्भ लेख** | – | **भरतपुर** |
| **चाटसू का शिलालेख** | – | **जयपुर** |
| **सारणेश्वर का शिलालेख** | – | **उदयपुर** |
| **बीठू का शिलालेख** | – | **पाली** |
| **रसिया की छतरी** | – | **चित्तौड** |
| **पाणाहेडा का शिलालेख** | – | **बांसवाडा** |
| **अचलेश्वर का लेख** | – | **आबू** |
| **खजूरी गांव का अभिलेख** | – | **कोटा** |
| **सारन का लेख** | – | **सोजत** |
| **सिवाना अभिलेख** | – | **बाडमेर** |
| **समद्वेश्वर अभिलेख** | – | **चित्तौडगढ** |
| **जामा मस्जिद अभिलेख** | – | **भरतपुर** |
| **जामी मस्जिद अभिलेख** | – | **मेडता** |
| **शैय्यद हुसैन शाह की दरगाह** | – | **तारागढ** |

- मेवाड के भर्तृहरि द्वितीय नामक शासक का उल्लेख है– **आदिवराह का अभिलेख**
- मौर्यवंशी शासक **धवल** का उल्लेख मिलता है – **कणसवा का अभिलेख**
- बरनाला का अभिलेख वर्तमान में आमेर संग्रहालय में है।
- गंगधार शिलालेख में पांचवी शताब्दी की सामंत व्यवस्था का उल्लेख है।
- मेवाड की धार्मिक स्थिति की प्राचीनतम जानकारी – **अपराजित**
- भरतपुर के शासक **बलबंतसिंह** द्वारा इस्लाम धर्म को प्रश्रय दिया एवं जामा मस्जिद का निर्माण करवाया यह जानकारी मिलती है – **जामा मस्जिद अभिलेख**
- राजस्थान में सबसे प्राचीन फारसी अभिलेख – **अढाई दिन का झोंपडा मस्जिद में**
- मित्र सोम और ब्रह्मसोम द्वारा रचित शिलालेख –**भ्रमरमाता**
- चाटसू शिलालेख का रचनाकार – **भानु**
- 'गंगोद्भव' का उल्लेख – **आदिवराह मंदिर के शिलालेख में**
- **रानियों के श्रृंगार** की जानकारी मिलती है – **रसिया की छतरी के लेख से**
- हारित ऋषि द्वारा नागदा में घोर तपस्या की जानकारी मिलती है – **अचलेश्वर लेख (सिरोही)**
- घोडे पर सवार राव चन्द्रेसन की प्रतिमा – **सारन (पाली)**

# 4. प्रशस्ति

## कीर्ति स्तम्भ प्रशस्ति

जिला – **चित्तौडगढ**

समय – **1460 ई.**

- इस प्रशस्ति में मेवाड के महाराजाओं की **वंशावली** की जानकारी मिलती है।
- महाराणा कुंभा की **मालवा विजय** के उपलक्ष्य में **विजय स्तंभ** का निर्माण करवाया गया जिस पर बाद में **प्रशस्ति लिखी** गयी
- कीर्ति स्तंभ प्रशस्ति के रचेता – **महेश भट्ट (अत्री ने प्रारंभ करवाया)**
- कीर्ति स्तंभ प्रशस्ति में **कुम्भा** द्वारा लिखी गयी पुस्तकों की जानकारी मिलती है।
- कीर्ति स्तंभ प्रशस्ति में मेवाड राज्य के चार भाग बताये गये हैं –

1. चित्तौड
2. अघाट
3. बागड
4. मेवाड

## राज प्रशस्ति

जिला – **राजसमंद** समय – **1676 ई.**

- राज प्रशस्ति **विश्व का सबसे बडा** अभिलेख है।
- यह प्रशस्ति **25 शिलालेखों** पर उत्कीर्ण है।
- यह राजसमंद झील की **नौचौकी की पाल** पर महाकाव्य के रूप में अंकित है।
- राज प्रशस्ति को महाराज **राजसिंह** द्वारा बनवाया गया।
- राज प्रशस्ति के रचेता – **रणछोड भट्ट**
- राज प्रशस्ति से जानकारी मिलती है कि **राजसमंद झील** का निर्माण **अकाल** राहत कार्यो के लिये करवाया गया।

## रणकपुर प्रशस्ति

जिला – **पाली**

समय – **1439**

- यह प्रशस्ति **चौमुखा मंदिर** के स्तंभ पर उत्कीर्ण है।
- इस मंदिर का निर्माण **कुम्भा** के समय **सेठ धरणक शाह** ने करवाया।
- चौमुखा मंदिर के प्रमुख शिल्पकार **देवाक** थे।
- **बप्पा रावल** से लेकर **कुम्भा** तक की जानकारी रणकपुर प्रशस्ति से मिलती है।

## जूनागढ प्रशस्ति

जिला – **बीकानेर**

समय – **1594 ई**

- यह महाराजा **रायसिंह** द्वारा बनवायी गयी।
- जूनागढ प्रशस्ति में **राव बीका** से लेकर **रायसिंह** तक का वर्णन है।
- बीकानेर प्रशस्ति के रचेता – **जैन मुनि जैता**
- बीकानेर के शासक **रायसिंह की काबुल विजय** की जानकारी जूनागढ प्रशस्ति से मिलती है।

## नेमीनाथ प्रशस्ति

जिला – **आबू, सिरोही**

समय – **1230**

- नेमीनाथ प्रशस्ति से **परमार** शासकों की जानकारी मिलती है।
- नेमीनाथ प्रशस्ति को **लूणवशही प्रशस्ति** भी कहा जाता है। इसे **तेजपाल** द्वारा बनवाया गया था।

## नाथ प्रशस्ति

**जिला** – उदयपुर

**समय** – 971 ईस्वी

- यह एकलिंग जी मंदिर के पास लकुलीश मंदिर से प्राप्त हुई है।
- इस प्रशस्ति के रचियेता **आम्र कवि** हैं।

## जगन्नाथ राय प्रशस्ति

**जिला** – उदयपुर

**समय** – 1652 ईस्वी

- यह उदयपुर के जगन्नाथ राय मंदिर में काले पत्थर पर उत्कीर्ण है।
- इस प्रशस्ति के रचनाकार **कृष्ण भट्ट** हैं।
- इस प्रशस्ति में वर्णन मिलता है कि महाराणा जगतसिंह ने पिछौला झील में मोहन मंदिर और रूपासागर तालाब का निर्माण करवाया था।

## अन्य प्रमुख प्रशस्ति

1. **हर्षनाथ** प्रशस्ति – **हर्षनाथ मंदिर, सीकर**
2. **नाथ** प्रशस्ति – **लकुलीश मंदिर, उदयपुर**
3. **वैद्यनाथ** मंदिर प्रशस्ति – **उदयपुर**
4. **पाशुपति प्रशस्ति** – **उदयपुर**
5. त्रिमुखी बावडी प्रशस्ति – **उदयपुर**
6. विष्णु मंदिर की प्रशस्ति – **बेणेश्वर**

# 5. सिक्के

- सिक्कों के अध्ययन को कहा जाता है – **न्यूमिस मेंटिक्स**
- भारत के ऐसे इतिहासकार जिन्होंने सिक्कों के आधार पर इतिहास लिखने का प्रयास किया – **डी.डी. कोशाम्बी, रैप्सन**
- वैदिक साहित्य में सिक्कों को कहा जाता है – **निष्क और सतमान**
- भारत एवं राजस्थान के सबसे प्राचीन सिक्कों को कहा जाता था – **आहत मुद्रा (पंचमार्क)**
- **आहत मुद्रा** पर कोई लेख नहीं होता था केवल **नदी** और **पर्वत, जानवर** आदि के चित्र होते थे।
- राजस्थान में **आहत सिक्के** पाये गये – **सांभर, विराटनगर, आहड, नोंह, रैड, नगरी** आदि।
- **रैड** से प्राप्त सिक्कों को कहा जाता था – **बच्छ घोष**
- **मुरूण्डा** नामक सिक्के पाये गये – **रंगमहल (हनुमानगढ)**
- **यज्ञवेदी का चिह्न** किन सिक्कों पर पाया गया है – **गुर्जर-प्रतिहार के सिक्के**
- **गुर्जर प्रतिहार** के सिक्कों को कहा जाता था – **वराह सिक्के**
- प्राचीन काल में **चौहानों** के जो सिक्के पाये गये हैं– **विषोपक सिक्के**
- प्राचीनकाल में **मेवाड** में पाये गये सिक्के – **पारूथ द्रुम**
- राजस्थान में **छत्रप** सिक्के पाये गये – **पुष्कर (अजमेर), सरवानिया ( बांसवाडा)**
- **भारत में स्वर्ण सिक्कों को प्रारंभ करने का श्रेय – कुषाण शासकों को**
- कुषाण शासकों के सोने-तांबे के सिक्के राजस्थान में पाये गये हैं – **खेतडी, जमवारामगढ, बीकानेर**
- **इण्डोग्रीक** सिक्के पाये गये – **बैराठ**
- राजस्थान में सर्वप्रथम **लेख** वाले सिक्के है –**इण्डोग्रीक**
- राजस्थान में **तांबे** के प्राचीनतम सिक्के –**रैंड (टोंक)**
- रैंड से प्राप्त कुछ सिक्कों के अंत में ''मित्र शब्द'' जुडा हुआ है।
- राजस्थान में सर्वाधिक **कुषाण** कालीन सिक्के –**नोंह**
- राजस्थान में **गुप्तकालीन स्वर्ण** सिक्के – **हुल्लन पुरा (बयाना)**
- गुप्तकाल में सिक्कों को कहा जात था – **दीनार**
- सिक्कों को **रूपया** नाम देने वाला पहला शासक – **शेरशाह सूरी**
- मुगलों द्वारा चलाये गये –**सिक्का एलची**
- अंग्रेजों द्वारा चलाये गये सिक्के – **कलदार**
- मेवाड में प्राचीन काल में चलाये गये सिक्के जिन पर चित्र **अस्पष्ट** होने के कारण नाम दिया गया है – **गधिया**
- **चान्दौडी** सिक्के सोने के सिक्के थे।
- राजस्थान की किस रियासत को **मुगलों** ने सिक्के **ढालने** के लिये सर्वप्रथम इजाजत दी – **आमेर**
- मध्यकालीन राजस्थान में **सबसे शुद्ध सिक्के** किस रियासत के थे – **जयपुर**
- जयपुर रियासत के **झाडशाही** सिक्कों पर **6 टहनियों के झाड** का चित्र होता था।
- **सलूम्बर ठिकाने** द्वारा चलाये गये सिक्के का नाम – **पदमशाही**
- भरतपुर रियासत के शासक सूरजमल ने **शाहआलम** नाम के चांदी के सिक्के चलावाये थे।
- पांच पंखुडी और फूल का चिन्ह अंकित था – **मदनशाही सिक्कों पर**
- मारवाड का तांबे का सिक्का कहलाता था – **ढब्बूशाही**
- **चांदोडी** नामक सिक्का चलाया था – महाराणा स्वरूपसिंह ने

## सिक्के एवं रियासतें

| रियासत | | सिक्के |
|---|---|---|
| अलवर | – | रावसाही |
| कोटा | – | गुमानसाही, मदनसाही, हाली |
| जयपुर | – | झाडसाही, मुहम्मदशाही |
| जैसलमेर | – | अखेशाही, डोडिया |
| जोधपुर | – | विजयशाही, भीमशाही |
| झालावाड | – | मदनशाही |
| प्रतापगढ | – | सालिमशाही |
| धौलपुर | – | तमंचाशाही |
| बांसवाडा | – | लक्ष्मणशाही |
| बूंदी | – | रामशाही, चिहराशाही, कटारशाही, ग्यारहसना |
| मेवाड | – | स्वरूपशाही, चान्दोडी, ढींगला, भिलाडी,त्रिशुलिया |
| सिरोही | – | ढब्बूशाही |
| बीकानेर | – | गजशाही, आलमशाही |
| डूंगरपुर | – | उदयशाही |

# 6. राजपूतों का उदय

- भारत की इतिहास से माना जाता है - **600 ई पू0**
- लगभग 600 ई.पू. मे जनपदो की संख्या - **16 जनपद**
- सबसे शक्तिशाली जनपद - **मगध जनपद**
- इन जनपदों में राजस्थान से संबंधित जनपद -

  **1. मत्स्य जनपद - विराट नगर**

  **2. सूरसेन जनपद - मथुरा**

  **3. कुरू जनपद - इन्द्रप्रस्थ**

**भारत में ऐतिहासिक क्रम** -

| | |
|---|---|
| **1. संभ्यतायें** | **5. कुषाण काल** |
| **2. वैदिक युग** | **6. गुप्तकाल** |
| **3. जनपद युग** | **7. हर्ष काल** |
| **4. मौर्यकाल** | **8. राजपूत युग** |

- राजस्थान में **वैदिक संस्कृति** के अन्तर्गत केवल जानकारी मिलती है -**सांस्कृतिक एवं धार्मिक**
- **महाभारत काल** में **द्रोणाचार्य का प्रवास** रहा था -**तालछापर (चूरू)**
- राजस्थान में **मौर्य वंश** का प्रभाव क्षेत्र -**चित्तौड एवं आसपास**
- **अशोक** के समय राजस्थान में **बौद्ध संस्कृति** का प्रमुख केन्द्र - **बैराठ**
- **चित्तौडगढ** का पहला मौर्य शासक था -**चित्रांगद मौर्य**
- राजस्थान का सबसे प्राचीन किला -**चित्तौडगढ का किला**
- चित्तौड का अंतिम मौर्य शासक - **मानमोरी**
- मानमोरी से चित्तौड किले को छीनने वाला गुहिल शासक -**बप्पा रावल**
- राजस्थान में बौद्ध धर्म का सर्वाधिक विकास हुआ -**मौर्यकाल में**
- कोटा से प्राप्त कणसवा गांव के अभिलेख के अनुसार किस मौर्य शासक की जानकारी मिलती है- **धवल**
- **मौर्यो** के चित्तौड शासन क्षेत्र को कहा जाता था -**मेदपाट**
- शिवी जाति आने के कारण इस क्षेत्र को कहा गया - **शिव जनपद**
- पाढनी की पुस्तक अष्टादायी से पता चलता है कि इस क्षेत्र की राजधानी थी - **मध्यमिका**
- राजस्थान के बौद्ध धर्म के प्रमुख केन्द्र -

  **बैराठ - जयपुर**

  **कालवी - झालावाड**

  **ओसियां - जोधपुर**
- राजस्थान आने वाले प्रमुख विदेशी -**कुषाण, सीथियन, हूण, पहलव**
- राजस्थान में सर्वाधिक सिक्के किस विदेशी आक्रमणकारी के है - **कुषाण**
- राजस्थान में कुषाणों का प्रभाव क्षेत्र था -**पूर्वी राजस्थानी**
- कुषाणों के सर्वाधिक **सिक्कों का भण्डार** हाल ही में कहा पाया गया है - **गंगानगर में**
- राजस्थान में किस विदेशी के सर्वाधिक आक्रमण हुये -**हूणों के**
- हूण शासक **तोरमण** ने राजस्थान के क्षेत्रों को जीता -**गुप्त शासकों से**
- तोरमण के पुत्र **मिहिरकुल** ने शिव मंदिर का निर्माण करवाया -**बाडौली में (चित्तौड)**
- हूणों के आक्रमण के समय राजस्थान में प्रमुख रूप से शासन कर रहे थे -**यौद्धेय, शिव अर्जुनायन, मालव**
- **कर्नल जेम्स टॉड** ने राजपूतों की उत्पत्ति किस विदेशी जाति से मानी है -**सीथियन**
- राजस्थान में गुप्तों का सर्वाधिक प्रभाव क्षेत्र -**पूर्वी राजस्थान**
- कुछ गुप्त शासकों ने दक्षिणी राजस्थान में भी शासन किया था।
- **समुद्रगुप्त** ने राजस्थान का पहला **विजय स्तंभ** बनवाया - **बयाना (भरतपुर)**
- राजस्थान में **वैदिक संस्कृति** का सर्वाधिक प्रसार हुआ - **गुप्त काल**
- ह्वेनसांग राजस्थान में आया - **भीनमाल और बैराठ**
- ह्वेनसांग के राजस्थान आगमन के समय भारत पर शासक था-**हर्ष (थानेस्वर)**
- ह्वेनसांग के राजस्थान आगमन का कारण - **बौद्ध धर्म की जानकारी लेना**
- ह्वेनसांग की पुस्तक का नाम - **सीयूकी**
- 11वीं शताब्दी में प्रतिहारों को मारवाड से निकाल कर सोमनाथ पर हमला करने में सफल हो गया -**महमूद गजनबी**

## राजपूतों का उदय

- राजपूतों के उदय का काल - **7वीं सदी से 12वीं सदी तक**
- राजपूतों की उत्पत्ति का सबसे प्रमुख कारण -**सामंतवाद**
- सामंतवाद का उदय - **गुप्तकाल में**
- सामंतवाद का चरम काल - **हर्ष का शासन काल**
- एतिहासिक युग में क्षेत्रीय शासकों को कहा जाता था - **सामंत**
- अधिकांश सामंतों का संबंध सीधे ही राज परिवारों से था इस कारण इन सामंतों को स्थानीय जनता कहती थी -**राजपुत्र**
- केन्द्रीय शक्तियों के कमजोर होने पर इन सामंतों ने स्वयं को स्वतंत्र कर दिया वही राजपुत्र कहलाये - **राजपूत**

## राजपूतों की उत्पत्ति के मत

**विदेशी मत**

| | |
|---|---|
| शक और सीथियन की संतान | – कर्नल जेम्स टॉड |
| हूणों की संतान | – बी.ए. स्मिथ |
| कुषाणों की संतान | – विलियम क्रुक |

**स्वदेशी मत**

| | |
|---|---|
| अग्नि कुण्ड से | – चन्द्रबरदाई |
| ब्राह्यमणों से | – दशरथ शर्मा |
| सूर्यवंशी (क्षत्रिय) | – गौरीशंकर हीराचंद ओझा |
| मिश्रित | – डी.पी. चट्टोपाध्याय |
| विशुद्ध भारतीय | – सीबी वैद्य |
| विदेशी ब्राह्यण | – एस.आर. भण्डारकर |
| ब्रह्मा की संतान | – चारण और भाट |

## राजवंश एवं केन्द्र

| राजवंश | | केन्द्र |
|---|---|---|
| राठौड वंश | – | जोधपुर व बीकानेर |
| यादव वंश | – | करौली, अलवर तथा धौलपुर |
| जाट वंश | – | भरतपुर, धौलपुर |
| कछवाह वंश | – | आमेर, अलवर |
| भाटी वंश | – | जैसलमेर |
| सिसोदिया | – | उदयपुर |
| परमार | – | जालौर और दाता रामगढ |
| हाडा वंश | – | कोटा और बूंदी |
| देवडा | – | सिरोही |
| प्रतिहार वंश | – | मारवाड |
| चावंडवंश | – | आबू तथा भीनमाल |
| गुहिल वंश | – | मेवाड, शाहपुरा, प्रतापगढ, बांसवाडा |
| चौहान वंश | – | अजमेर,बूंदी, कोटा, सिरोही |
| पिण्डारी वंश | – | टोंक |
| मौर्य वंश | – | चित्तौड |

| राजवंश | क्षेत्र | संस्थापक | सन् |
|---|---|---|---|
| चौहान | सांभर | वासुदेव | 591 ईस्वी |
| गुहिल | मेवाड | गुहिल | 566 ईस्वी |
| गुहिल | बागड | समरसिंह | 1177 ईस्वी |
| गुहिल | डूंगरपुर | सीहड | 16 वीं सदी |
| गुहिल | बांसवाडा | जगमालसिंह | 1518 ईस्वी |
| गुहिल | प्रतापगढ | राव बीका | 1561 ईस्वी |
| गुहिल | शाहपुरा | सुजानसिंह | 1631 ईस्वी |
| राठौड | बीकानेर | राव बीका | 1465 ईस्वी |
| राठौड | मारवाड | राव सीहा | 13वीं सदी |
| कछवाह | ढूंढाड | दूल्हे राय | 1137 ईस्वी |
| राव | आमेर | कोकिलदेव | 13वीं सदी |
| कछवाह | अलवर | प्रतापसिंह | 1771 ईस्वी |
| कछवाह | जयपुर | जयसिंह द्वितीय | 1727 ईस्वी |
| यादव | करौली | अर्जुनपाल | 1348 ईस्वी |

## स्थलों के ऐतिहासिक नाम

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| शाकम्भरी | – | सांभर | जाबालीपुर | – | जालौर |
| बिन्धबल्ली | – | बिजौलिया | मध्यमिका | – | चित्तौड |
| पूंगल | – | बीकानेर | श्रीमाल | – | भीनमाल |
| श्रीपंथ | – | बयाना | नंदग्राम | – | कोटा |
| मांच | – | जमवारामगढ | अलौर | – | अलवर |
| पत्तन | – | ओसियां | तक्षकपुर | – | टोडारायसिंह |
| कांठल | – | प्रतापगढ | बृजनगर | – | झालरापाटन |
| गोपालपाल | – | करौली | मांड | – | जैसलमेर |
| रूढेचा | – | रामदेवरा | कोठी | – | धौलपुर |
| अहिछत्रीपुर | – | नागौर | आभानगरी | – | डीडवाना |
| बरसाना | – | शेरगढ | मान्धातापुर | – | मेडता |
| शोणितपुर | – | बयाना | सत्यपुर | – | सांचौर |

## क्षेत्रों के ऐतिहासिक नाम

| | |
|---|---|
| यौदेय | – हनुमानगढ, गंगानगर |
| सूरसेन | – भरतपुर, करौली |
| मालव | – प्रतापगढ, झालावाड |
| मेवल | – डूंगरपुर, बांसवाडा |
| कोरू | – अलवर का उत्तरी भाग |
| मेरू | – अरावली पर्वतीय प्रदेश |
| माल | – दक्षिण-पूर्वी पठारी प्रदेश |
| जांगल | – बीकानेर के आसपास |
| आबुर्द प्रदेश | – सिरोही के आसपास |
| मेदपाठ | – मेवाड |
| गौडवाण | – जालौर व पाली |
| सपालादक्ष | – सांभर के आसपास |
| अर्जुनायन | – अलवर के आसपास |
| शाल्व | – बीकानेर-नागौर का सीमांत क्षेत्र |
| भादानक | – भरतपुर-बयाना क्षेत्र |
| मेदान्तक | – जालौर |
| उत्तमाद्रि | – ऊपरमाल के आसपास का क्षेत्र |

# 7. मेवाड़ रियासत

- **मेवाड** – उदयपुर एवं चित्तौड के आस पास के क्षेत्र को मेवाड कहा जाता है।
- मेवाड को प्राचीनकाल में कहा जाता था – **शिवी जनपद/प्राग्वाट/मेदपाट**
- **शिवि** एक ब्राह्यमण जाति थी जो उत्तर भारत से आकर इस क्षेत्र में बस गयी थी बाद में ये ब्राह्यण क्षत्रिय में परिवर्तित हो गये।
- चित्तौड का प्राचीन नाम था – **मध्यमिका नगरी**
- चित्तौड में प्राचीन काल में शासन था – **मौर्यों का**
- चित्तौड के किले का निर्माण करवाया – **चिंत्रागत मौर्य ने (चित्रांग)**
- बाद में कुम्भा ने इसका पुर्ननिर्माण करवाया।
- मेवाड का प्राचीनतम वंश – **गुहिल वंश**
- गुहिल वंश का संस्थापक – **(लगभग 566 ईस्वी) गुहादित्य**
- गुहिल वंश के अन्य प्रमुख शासक –**शिलादित्य, अपराजित, खुमाण, अल्लट, नरवाहन** आदि।
- गुहिलों (मेवाड) की प्राचीनतम राजधानी थी – **नागदा**
- गुहिल वंश की उपाधि थी – **रावल**
- मेवाड राज्य का आदर्श वाक्य – **जो दृढ राखै धर्म को, तेहि राखै करतार।**
- गुहिल वंश का पहला शक्तिशाली शासक – **बप्पा रावल**
- बप्पा रावल का मूल नाम था – **काल भोज**
- बप्पा रावल के पिता का नाम – **नागादित्य**
- बप्पा रावल के गुरू का नाम – **हारित ऋषि**
- इसे बापा (बप्पा) भी कहा जाता है।
- बप्पा रावल ने चित्तौड को विजित किया – **मौर्य शासक मानमोरी से**
- चित्तौड को गुहिलों की राजधानी बनाया – **जैत्रसिंह ने**
- राजस्थान में सर्वप्रथम सोने के सिक्के चलाने का श्रेय – **बप्पा रावल को**
- मेवाड के शासक स्वयं को **एकलिंग जी का दीवान** मानते थे।
- एकलिंग जी को **मेवाड का शासक** मानते थे।
- **आसकां लेना** – मेवाड रियासत के शासक राज्य से बाहर जाते समय एकलिंगजी का आशीर्वाद लेते थे इसे **आसकां लेना** कहते थे।
- एकलिंग जी (शिव) के मन्दिर का निर्माण करवाया था – **बप्पा रावल ने**
- इस मंदिर का निर्माण कैलाशपुरी नामक स्थान पर नागदा (उदयपुर) में करवाया गया।
- अमीर खुसरो को कहा जाता है – **तूतिये हिन्द (हिन्द का तोता)**
- अमीर खुसरो की ऐतिहासिक पुस्तक – **खजाइन उल फतह(खजाइन**
- बप्पा रावल की समाधि **नागदा (उदयपुर)** में बनी हुयी है।
- कहा जाता है कि वप्पा रावल पर **हारीत ऋषि का आशीर्वाद** था।
- गुहिल वंश के अंतिम शासकों का क्रम :-

**रण सिंह**
**पदमसिंह**
**सामंतसिंह** चौहान शासक कीर्तिपाल का आक्रमण
**जैत्रसिंह** इल्तुतमिश का आक्रमण
**तेजसिंह**
**समर सिंह** हम्मीर देव चौहान का आक्रमण
**रतनसिंह** अलाउद्दीन खिलजी का आक्रमण

- गुहिल वंश का अंतिम शासक था – **रतनसिंह**
- आहड को मेवाड की दूसरी राजधानी बनाया था – **अल्लट ने**
- मेवाड में सबसे पहले सोने के सिक्के जारी किये-**बप्पा रावल ने**
- कीर्ति स्तम्भ प्रशस्ति के अनुसार मेवाड राज्य चार भागों में बंटा हुआ था –

| | |
|---|---|
| 1. चित्तौड | 2. आघाट |
| 3. वागड | 4. मेवाड |

- सिसोदा ठिकाना बनाया था – **गुहिल शासक रणसिंह के पुत्र राहप ने**
- सिसोदा वर्तमान में राजसमंद में है।

## भूताला का युद्ध

- यह युद्ध जैत्रसिंह और इल्तुतमिश के मध्य हुआ था।
- चित्तौड के किले में श्याम पार्श्वनाथ मंदिर का निर्माण करवाया था – **तेजसिंह की पत्नी जयतल्ल देवी**
- मेवाड चित्रकला शैली का प्रथम चित्रित उपलब्ध ग्रन्थ **श्रावक प्रतिक्रमण सूत्र चूर्ण** का चित्रण किया गया – **तेजसिह के समय**
- मेवाड में पहलीबार नौकरशाही का आरंभ किया – **अल्लट ने**
- मेवाड में जीव हिंसा पर रोक लगाने वाला पहला शासक – **समरसिंह**
- **उभापति वरलब्ध प्रौढ प्रताप** की उपाधि धारण की थी – **तेजसिंह ने**
- आहड में बराह मंदिर का निर्माण करवाया था – **अल्लट ने**

## अलाउद्दीन खिलजी का चित्तौड आक्रमण –1303

- **अलाउद्दीन खिलजी** सल्तनतकाल का सबसे शक्तिशाली शासक था।
- अलाउद्दीन खिलजी को **द्वितीय सिकन्दर** अथवा **सिंकदर सानी** कहा जाता था।
- अलाउद्दीन खिलजीका प्रमुख दरबारी कवि – **अमीर खुसरो**
- अलाउद्दीन खिलजी का चित्तौड आक्रमण का प्रमुख उद्देश्य –**साम्राज्यवादी नीति**
- अलाउद्दीन खिलजी के चित्तौड आक्रमण के समय शासक था – **रतनसिंह (1303 में)**
- **गोरा –बादल** – रतनसिंह के दो वीर सेनापति जो इस युद्ध में वीरगति को प्राप्त हुये
- गोरा पद्मिनी का भाई और बादल पद्मिनी का चाचा था।
- इस युद्ध में रतनसिंह भी वीरगति को प्राप्त हुआ।

- राजस्थान में इन वीर गति की घटनाओं को कहा जाता है – **केसरिया**
- केसरिया के बाद रतनसिंह की पत्नी **पद्मिनी** के नेतृत्व में महिलाओं ने सामूहिक आत्महत्या की जिसे **जौहर** कहा जाता है।
- केसरिया और जौहर दोंनों मिलकर **''शाका''** कहलाते हैं।
- चित्तौड का पहला शाका हुआ – **पद्मिनी के नेतृत्व में (1303 में)**
- अलाउद्दीन खिलजी ने चित्तौड को जीतने के बाद शासक नियुक्त किया – **अपने पुत्र खिज्र खां को**
- चित्तौड का नाम बदलकर रखा गया – **खिज्राबाद**
- खिज्रखां ने 1313 ईस्वी तक चित्तौड पर शासन किया।
- 1313 ईस्वी में जालौर के सोनगरा चौहान मालदेव के चित्तौड का शासक नियुक्त किया गया।
- मालदेव ने अपनी पुत्री का विवाह राणा हम्मीर से किया था और चित्तौड का अधिकांश भाग दहेज में दे दिया।

**पदमावत के अनुसार** –

- पदमावत् पुस्तक 15 वीं सदी में लिखी गयी है।
- पदमावत पुस्तक के लेखक हैं – **मलिक मौहम्मद जायसी**
- **पदमावत** के अनुसार अलाउद्दीन खिलजी का चित्तौड आक्रमण का उद्देश्य – **पदमावती को प्राप्त करना**
- पद्मिनी के पिता का नाम – **गंधर्व सेन (गोवर्धन)**
- पदमिनी की माता का नाम – **चम्पावती**
- गंधर्व सेन शासक था – **सिंहल द्वीप (श्रीलंका)**
- रतनसिंह को पदमावती की जानकारी देने वाले तोते का नाम – **हीरामन तोता (गागरौनी तोते)**
- अलाउद्दीन खिलजी ने चित्तौड का घेरा डाले रखा – **8 वर्ष तक (वास्तव में 8 महीने रहा)**
- पदमिनी के बारे में अलाउद्दीन खिलजी को जानकारी देने वाले ब्राह्मण कानाम – **राघव चेतन**
- अलाउद्दीन खिलजी रतनसिंह को बन्दी बनाकर **दिल्ली** ले गया था।
- **गोरा** की मृत्यु रतनसिंह को मुक्त कराते समय हुयी थी।
- पदमावत पुस्तक में पदमिनी का नाम था –**पद्मावती**
- **बादल** और **रतनसिंह** चित्तौड में अलाउद्दीन खिलजी से लडते समय वीरगति को प्राप्त हुये तथा रानी **पद्मिनी** ने जौहर किया।

## सिसोदिया वंश

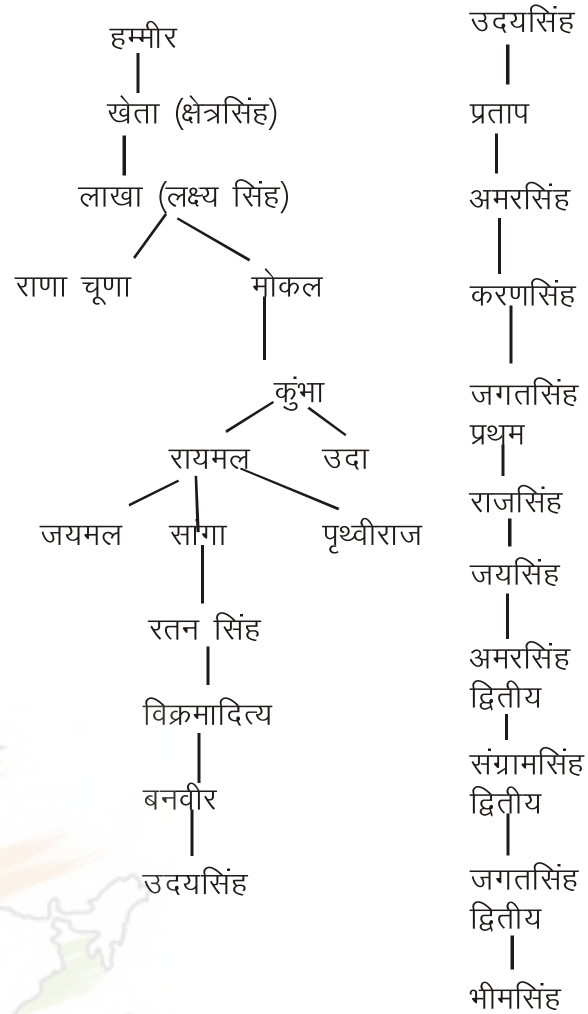


NEW INDIA नव भारत निर्माण

## सिसोदिया वंश

- संस्थापक – **हम्मीर राणा ( 1326 –1364)**
- राणा हम्मीर के पिता का नाम – **अरिसिंह**
- सिसोदिया **गुहिलों** की ही शाखा है।
- विश्व का सबसे प्राचीन वंश – **सिसोदिया (उदयपुर)**
- सिसोदिया वंश में उपाधि थी – **राणा**
- **हम्मीर सिसोदा गांव (राजसमन्द)** से संबंधित था।

## सिंगोली का युद्ध –1326 में

यह युद्ध राणा हम्मीर और मुहम्मद तुगलक के मध्य हुआ था। इस युद्ध में राणा हम्मीर विजयी हुआ।

- इतिहास में राणा हम्मीर को कहा जाता है – **विषमघाटी पंचानन, मेवाड का उद्धारक**

हम्मीर को **वीर राजा** भी कहा जाता है।

हम्मीर ने चित्तौड के किले में अन्नपूर्णा माता का मंदिर बनवाया।

- मेवाड के शासकों को कहा जाता था/है – **हिन्दुओं का सूरज (सिसोदिया वंश)**
- **जावर (उदयपुर)** में **सीसा की खानों** का सर्वप्रथम पता चला – **राणा लाखा के समय**
- एक **बंजारे** द्वारा **पिछौला झील** का निर्माण करवाया गया – **राणा लाखा** के समय
- राणा लाखा ने मारवाड के शासक (राठौडवंश) **रणमल** की बहिन **हंसाबाई** से विवाह किया।
- रणमल के पिता का नाम था – **राव चूणा**
- यह विवाह प्रस्ताव राणा लाखा के बडे पुत्र **राणा चूणा** के लिये आया।
- राणा चूणा ने अपने पिता लाखा की बात के लिये कभी भी विवाह न करने की शपथ ली इस कारण राणा चूणा को '**राजस्थान का भीष्म**' कहा जाता है।
- राणा चूणा ने **हंसाबाई** से होने वाले पुत्र के लिये गद्दी छोडने की शपथ ली।
- इस कारण राणा चूणा की तुलना ''**रघुकुल के राम**'' से की गयी है।
- हंसाबाई के पुत्र का नाम –**मोकल**
- **झोटिंग भट्ट और धनेश्वर भट्ट** – राणा लाखा के दरबारी विद्वान थे।
- **चाचा और मेरा** – खेता (क्षेत्रसिंह) की पासवान पत्नी के पुत्र थे।
- द्वारकानाथ मंदिर का निर्माण करवाया – **मोकल ने**

### रामपुरा का युद्ध – 1428 में

- यह युद्ध मोकल और नागौर के शासक फिरोजखां के मध्य हुआ था।
- इस युद्ध में मोकल विजयी हुआ।
- **मोकल की हत्या** – 1433 में जीलवारा नामक स्थान पर चाचा और मेरा द्वारा (दोंनों मोकल के चाचा थे)

## महाराणा कुम्भा

- जन्म – **1403 ई में**
- कुम्भा का राज्याभिषेक – **1433 ई0 में**

  कुंभा ने चाचा और मेरा का दमन करने के लिये भेजा था – **रणमल और राघवदेव**
- **सारंगपुर का युद्ध** – **1437 ई0 में**

  इस युद्ध में कुम्भा ने मालवा के शासक **महमूद खिलजी प्रथम** को पराजित किया।

**विजय स्तम्भ का निर्माण – 1440-48 में**

- कुम्भा ने विजय स्तम्भ का निर्माण **मालवा विजय** के उपलक्ष्य में करवाया था।

**विजय स्तम्भ/कीर्ति स्तम्भ** –

- मूल रूप से कीर्ति स्तंभ अलग है जिसे **जैन मुनि जीजाशाह** 11वीं शताब्दी ने बनवाया था।
- कुम्भा द्वारा बनवाये गये विजय स्तम्भ को इतिहासकारों द्वारा कीर्ति स्तंभ कहा जाने लगा।
- जीजाशाह द्वारा बनवाये गये कीर्ति स्तंभ को अब ''**जैन कीर्ति स्तंभ**'' कहा जाने लगा।
- जैन कीर्ति स्तम्भ की ऊंचाई **75 फुट** है।
- जैन कीर्ति स्तम्भ की मंजिलें **7** हैं।
- जैन कीर्ति स्तम्भ समर्पित है – **प्रथम तीर्थंकर आदिनाथ को**
- जैन कीर्ति स्तंभ तथा विजय स्तंभ दोंनों ही **चित्तौडगढ** में हैं।
- विजय स्तम्भ **भगवान विष्णु** को समर्पित है।
- विजय स्तंभ की ऊंचाई – **120 फीट**
- विजय स्तंभ की मंजिल – **9**
- विजय स्तम्भ में सीढियां – **157**
- विजय स्तम्भ के वास्तुकार – जैता, नापा, पोमा, पूंजा
- विजय स्तंभ को नौखण्डा महल भी कहा जाता है।
- विजय स्तंभ को भारतीय मूर्तिकला का विश्वकोष कहा जाता है।
- विजय स्तंभ को रोम का टार्जन कहा जाता है।
- विजय स्तंभ की तीसरी मंजिल पर नौ बार अल्लाह शब्द लिखा हुआ है।
- विजय स्तंभ को विष्णु ध्वज भी कहा जाता है।
- विजय स्तंभ राजस्थान पुलिस का प्रतीक चिन्ह है।
- विजय स्तंभ पर डाक टिकट जारी किया गया – **15 अगस्त 1949** (एक रूपये का)
- कर्नल जेम्स टॉड ने कुतुबमीनार से भी सर्वश्रेष्ठ बताया है।
- कुंभा का मारवाड आक्रमण – **1451-53 ई.**
- उस समय मारवाड का शासक था – **राव जोधा**
- कुंभा के इस आक्रमण के बाद हंसावाई की मध्यस्थता से एक संधि हुई – कुंभा और जोधा के मध्य
- इस संधि को इतिहास में कहा जाता है – **आंवल-बांवल की संधि**
- इस संधि के अनुसार राव जोधा ने अपनी पुत्री **श्रृंगार देवी** का विवाह किया – **कुंभा के पुत्र रायमल से**
- श्रृगार देवी ने घोसुण्डी की बावडी का निर्माण करवाया था।

**चम्पानेर (गुजरात) की संधि – 1456 ई. में**

- गुजरात के शासक **कुतुबुद्धीन** एवं मालवा के शासक **महमूद खिलजी-प्रथम** के मध्य कुंभा को पराजित करने के लिये यह सन्धि हुयी थी।
- इस संधि को कुंभा ने विफल कर दिया था।
- बैराठ गढ का युद्ध – **1457 में**
- इस युद्ध में कुंभा ने मुहम्मद खिलजी को पराजित किया था।
- इस विजय के उपलक्ष्य में बदनौर में कुंभा ने कुशालमाता के मंदिर का निर्माण करवाया था।
- कुंभा की हत्या – 1468 में
- कुंभा की हत्या उसके पुत्र ऊदा द्वारा कुंभलगढ दुर्ग में स्थित अन्तःदुर्ग कटारगढ में की गई।
- ऊदा को मेवाड का पितृहन्ता कहा जाता है।

**कुम्भा की उपलब्धियां :-**

(1) **हाल गुरू उपाधि** – गिरी दुर्गो का स्वामी होने के कारण
(2) **हिन्दू सुरताण** – मुस्लिम शासकों ने कहा
(3) **राणा-रासो** – विद्वानों का **आश्रयदाता** होने के कारण
(4) **अभिनव भरताचार्य** – संगीत ज्ञान के कारण

- महाराणा कुम्भा ने स्वयं विरूद्ध धारण किये थे –

**दानगुरू, परमगुरू चापगुरू**
**छापगुरू राजगुरू नरपति**
**गणपति महाराजाधिराज, रावराय**

**कुम्भा द्वारा लिखी गयी प्रमुख पुस्तकें :-**

**संगीतराज, रसिकाप्रिया,**
**संगीत मीमांसा, कामरजित सागर,**
**सूठ प्रबन्ध, चण्डीसतक**

**संगीत रत्नाकर** पुस्तक पर टीका लिखी थी।

- यह माना जाता है कि **एकलिंग महात्मय** नामक पुस्तक राणा कुम्भा द्वारा लिखी गयी लेकिन इस पुस्तक का मूल लेखक कान्ह व्यास था।
- **एकलिंग महात्मय** के लेखक – **कान्ह व्यास**
- **कान्ह व्यास** कुम्भा के **वैतनिक** कवि थे।
- **कवि श्यामलदास** ने अपनी पुस्तक वीर विनोद में बताया है कि महाराणा कुंभा ने मेवाड के **84 दुर्गों** में से **32 दुर्गों** का निर्माण करवाया।
- राजस्थान में स्थापत्य कला का जनक – **राणा कुम्भा**
- कुम्भा द्वारा बनवाये गये दुर्गो में सबसे महत्वपूर्ण दुर्ग – **कुम्भलगढ दुर्ग**
- कुभंलगढ दुर्ग को मेवाड की आंख कहा जाता है।
- कुंभा द्वारा गुजरात आक्रमण से बचने के लिये दुर्ग बनवाया गया– **अचलगढ दुर्ग (सिरोही)**
- कुंभा को कला, कलम, कटार की त्रिवेणी कहा है – **फारूख शियर ने**
- कुंभा के संगीत गुरू का नाम – **सारंग व्यास**
- कुम्भा के प्रसिद्ध शिल्पकार का नाम – **मंडन**
- भारतीय शासकों में सबसे बडा संगीतज्ञ माना जाता है – **राणा कुम्भा को**
- 1468 ई में कुंभा की हत्या करने के बाद उसके पुत्र **उदा** ने शरण ली थी –**बीकानेर रियासत में**
- **आसानंद** – कुंभा के दरबार में पुराण वाचक थे।
- **हीरानंद** – ये जैन आचार्य थे इन्हें महाराणा कुंभा अपना गुरू मानते थे।
- **सोमदेव** – ये भी जैन आचार्य थे इन्हें कुंभा ने **कविराज** की उपाधि दी थी।
- **रमाबाई** – कुंभा की पुत्री थी ये संगीतज्ञ थी इन्हें **वागीश्वरी** के नाम से जाना जाता है।

  रमाबाई ने जावर में **रमाकुण्ड** और **रमा मंदिर** का निर्माण करवाया।

  **जावर** का प्राचीनकाल में **योगिनीपट्टनम** कहा जाता था।

**कुंभा द्वारा प्रमुख निर्माण :-**

1. कुंभलगढ का किला
2. अचलगढ का किला
3. कुंभस्वामी मंदिर
4. कुशालमाता मंदिर
5. बसंतपुर
6. भोमट दुर्ग
7. मचान दुर्ग
8. एकलिंग जी का मीरा मंदिर
9. विजय स्तम्भ
10. श्रृंगार चंवरी

- कुंभा की मृत्यु के बाद मेवाड का शासक बना – **ऊदा (1468-73)**

  ऊदा के बाद मेवाड का शासक बना – **रायमल (1473-1509)**
- चित्तौड के किले में अद्‌भुत जी का मंदिर बनवाया था – **रायमल ने**
- रायमल के तीन पुत्रों में सत्ता संघर्ष हुआ –
  1. **कु. पृथ्वीराज**
  2. **सांगा (संग्रामसिंह)**
  3. **जयमल**
- कुंवर पृथ्वीराज को कहा जाता है – **उडना राजकुमार**
- पृथ्वीराज ने अपनी पत्नी ताराबाई के नाम पर अजमेर के दुर्ग का नाम तारागढ रखा।
- रायमल की छतरी स्थित है – **जावर में**
- कुंवर पृथ्वीराज की छतरी बनी हुई है – **कुंभलगढ में**

## राणा सांगा

- सांगा का **राज्यारोहण** हुआ – **1509 में**

  राणा सांगा को कहा जाता है – **हिन्दुपत**

  सैनिकों का भग्नावेश – **राणा सांगा को**

  भारत का अंतिम **हिन्दु शासक** –सांगा को माना जाता है।
- सांगा के समकालीन प्रमुख शक्तियां –

  (1) दिल्ली में – **इब्राहिम लोदी**

  (2) गुजरात में – **महमूद बेगडा (फतेह खा)**

  (3) मालवा में – **महमूद खिलजी –द्वितीय**

## सांगा के प्रमुख युद्ध :-

**(1) खातौली का युद्ध – 1518 ई. (बूंदी में)**

- यह युद्ध दिल्ली के शासक इब्राहिम लोदी व राणा सांगा के मध्य हुआ।
- इस युद्ध में राणा सांगा विजयी हुआ।
- इस युद्ध में सांगा का एक बाजू एवं एक पैर कट गया।

**(2) गागरौन का युद्ध – 1519 ई. (झालावाड में)**

- यह युद्ध मालवा के शासक **महमूद खिलजी-द्वितीय** एवं **सांगा** के मध्य हुआ।
- इस युद्ध में **सांगा** विजयी हुआ
- इस युद्ध में सांगा ने महमूद खिलजी को गिरफ्तार करके छोड दिया था।
- इस युद्ध में **सांगा** ने **महमूद खिलजी द्वितीय** से उसका **रत्नजडित मुकुट एवं रत्नजडित कमरबन्द** छीन लिया था।

**(3) बाडी युद्ध – 1519 ई0 में (धौलपुर)**

- यह युद्ध **महाराणा सांगा एवं इब्राहिम लोदी** की सेनाओं के मध्य हुआ।
- इस युद्ध में **राणा सांगा** विजयी हुआ
- इस युद्ध में **इब्राहिम लोदी** के दोंनों सेनापति हुसैन खां एवं मियां मक्खन मारे गये।

**(4) बयाना युद्ध – 1527 में (भरतपुर)**

- यह युद्ध सांगा एवं मुगल शासक **बावर** की सेनाओं के मध्य हुआ।
- इस युद्ध में राणा सांगा विजयी हुआ

**(5) पानीपत का युद्ध** – 1526 ई0 में (हरियाणा में)

- यह युद्ध बावर तथा इब्राहिम लोदी के मध्य हुआ
- इस युद्ध में **इब्राहिम लोदी** मारा गया
- इस युद्ध में भारत में पहली बार **बावर** द्वारा **तोप** एवं **बारूद** का प्रयोग किया गया
- बावर की युद्ध पद्धति का नाम – **तुगलमा युद्ध पद्धति**

**(6) खानवां का युद्ध – 17 मार्च 1527 में (भरतपुर)**

- यह युद्ध **राणा सांगा** तथा **बावर** के मध्य हुआ।
- इस युद्ध में **बावर** की विजय हुई।
- **खानवा युद्ध** को बावर ने जेहाद घोषित किया।
- **जेहाद** का अर्थ – **धर्मयुद्ध**
- युद्ध को जीतने के बाद बावर ने गाजी की उपाधि धारण की थी।
- गाजी का अर्थ – **धर्मयुद्ध को जीतने वाला।**
- खानवा युद्ध में सांगा के घायल होने के बाद नेतृत्व किया– **झाला अज्जा (काठियाबाड)**
- खानवा युद्ध में राणा सांगा का साथ देने वाले मुस्लिम शासक–
  (1) **हसनखां मेवाती**
  (2) **महमूद लोदी (इब्राहिम लोदी का भाई)**
- सांगा के घायल होने पर उसे बाहर ले जाने वाला सेनापति – **पृथ्वीराज (आमेर)**
- सांगा से बगावत करने वाला राजपूत शासक – **सरहिन्द तंवर** (रायसेन का शासक)
- राजस्थान का प्रथम युद्ध जिसमें राजपूत शासक एक नेतृत्व में इकट्ठे हुये–**खानवां का युद्ध**
- खानवां युद्ध में सांगा की पराजय के बाद कहा जाता है कि **राजपूत शक्तियां** 200 वर्ष के लिये मुगलों के आधिपत्य में चली गयीं।
- खानवां युद्ध में **'बावरनामा'** के अनुसार राणा सांगा की सेना में सैनिक थे – **2 लाख**
- खानवां का युद्ध विदेशियों के खिलाफ संयुक्त प्रदर्शन किसने कहा है –**श्रीराम शर्मा ने**
- राजस्थान के प्रसिद्ध इतिहासकार गोपीनाथ शर्मा ने सांगा को उपाधि दी है –**हिन्दूपत**
- हिन्दूपत का अर्थ –**हिन्दू धर्म एवं संस्कृति की रक्षा** करने वाला
- **पाती–परवन** – राजपूत परंपरा के अनुसार शासकों को युद्ध में साथ देने के लिये निमंत्रण पत्र भेजने की परंपरा पाती परवन कहलाती है।
- खानवां युद्ध में सांगा का साथ देने वाला प्रमुख शासक –

| | |
|---|---|
| मारवाड के रावमालदेव | चंदेरी के मेदनीराय |
| आमेर के पृथ्वीराज | बीकानेर के कल्याणमल |
| देवलिया के बाघसिंह | बागड के उदयसिंह |
| मेडतिया के वीरमदेव | |

- राणा सांगा की मृत्यु हुई – **1528 ई. में काल्पी (बसवा) दौसा जिले में।**
- सांगा की मृत्यु का कारण – **उसके ही सामन्तों द्वारा विष देना**
- सांगा युद्ध चाहता था किन्तु उसके **सामन्त** युद्ध से बचना चाहते थे।
- राणा सांगा का अंतिम संस्कार हुआ –**माण्डलगढ (भीलवाडा)**
- ''सैनिकों का भग्नावेश'' कहा जाता है – **राणा सांगा को**

## सांगा की मृत्यु के बाद मेवाड का इतिहास

- **1528** ई. में **राणा सांगा** की मृत्यु हुई।
- 1528 ई. राणा **रतनसिंह** मेवाड का शासक बना।
- सांगा के पुत्र भोजराज का विवाह मेडता के रतनसिंह की पुत्री मीरा से हुआ। जो इतिहास में मीराबाई के नाम से प्रसिद्ध है।
- **रतनसिंह** के बाद **मेवाड** का शासक बना – **विक्रमादित्य** (1531 में)
- **विक्रमादित्य** के समय उसकी मां **कर्णवती** प्रमुख संरक्षिका थीं।
- **1533–34** ई – गुजरात के शासक **बहादुरशाह** का मेवाड पर आक्रमण – **दो बार**
- इस आक्रमण से बचने के लिये **कर्णवती** ने **राखी** भेजी थी –**हुमांयु को** मेवाड को **हुमांयु** की सहायता प्राप्त नहीं हो सकी और मेवाड को **बहादुरशाह** ने जीत लिया।
- विक्रमादित्य को उसके भाई उदयसिंह सहित भेजा गया– **बूंदी**

**चित्तौड का दूसरा शाका – 1534 ई.**
**कर्णवती के नेतृत्व में**
**बहादुरशाह के आक्रमण के समय**

- **बीका पहाडी** – चित्तौडगढ के पास एक पहाडी है यहां 1534 में बहादुरशाह और विक्रमादित्य की सेनाओं के मध्य युद्ध हुआ था।
- विक्रमादित्य मेवाड का पुन: शासक बना – **1534 में हुमायुं की सहायता से**
- **विक्रमादित्य की हत्या** – 1536 ई. में पृथ्वीराज के **अनौरस पुत्र** (दासी पुत्र) बनवीर ने **विक्रमादित्य** की हत्या कर दी और मेवाड का शासक बन गया।
- **तुलजा भवानी** के मंदिर का निर्माण चित्तौड के किले में करवाया – **बनवीर ने**
- **बनवीर** ने विक्रमादित्य के भाई **उदयसिंह** को भी मारना चाहा लेकिन **पन्नाधाय** ने अपने पुत्र **चन्दन** की बलि देकर **उदयसिंह** को बचा लिया।
- उदयसिंह को लालन–पालन के लिये भेजा गया – **कुंभलगढ (आशादेवपुरा के संरक्षण में)**
  उदयसिंह को शासक घोषित किया गया – **1537 में**
- बनवीर को परास्त करके **उदयसिंह** मेवाड का शासक बना – **1540 ई.**
- उदयसिंह को शासक बनाने में प्रमुख भूमिका – **मालदेव (मारवाड का शासक)**

- उदयसिंह ने **उदयपुर** बसाया – **1559 ई.**
- **पन्नाधाय** के **त्याग** को राजस्थान का **सबसे बडा त्याग** कहा जाता है।
- त्याग एवं बलिदान का प्रतीक माना जाता है – **पन्ना धाय को**
- राजस्थान में स्वामिभक्ति का प्रतीक माना जाता है – **दुर्गादास राठौड को**
- राजस्थान में सबसे बडा दान – **भामाशाह**

## हरमाडा का युद्ध

- 1557 में
- यह युद्ध उदयसिंह और मेवात के हाजीखां के मध्य हुआ था।
- इस युद्ध में हाजी खां की सहायता मालदेव ने की थी।
- इस युद्ध में हाजी खां विजयी हुआ।

### मेवाड पर अकबर का आक्रमण

- आक्रमण का समय – **1567-68 (6 माह)**
- इस समय शासक था – **उदयसिंह**
- 1567-68 ई.-के मुगल आक्रमण के समय उदयसिंह ने युद्ध का नेतृत्व **जयमल और पत्ता** को सोंप दिया और स्वयं **गोगुन्दा की पहाडियों** में चला गया।
- अकबर के जीवन का एकमात्र आक्रमण जिसमें अकबर ने कत्ले आम का आदेश दिया-**चित्तौड आक्रमण**
- **जयमल और पत्ता** इस आक्रमण में वीरगति को प्राप्त हुये
- 1568 ई.-**जयमल और पत्ता** की पत्नियों के नेतृत्व में चित्तौड का **तीसरा शाका** संपन्न हुआ।

### चित्तौड का तीसरा शाका

- **समय** -1568
- **आक्रमण** – अकबर का
- **नेतृत्व** – फूलकंवर (पत्ता की पत्नी)
- कल्लाजी राठौड – उदयसिंह के सेनापति थे।
- ये 1567-68 के अकबर के आक्रमण में अकबर से लडते हुये वीरगति को प्राप्त हुये।
- बाद में कल्लाजी लोकदेवता के नाम से प्रसिद्ध हुये।
- अकबर ने जयमल और पत्ता की वीरता से प्रसन्न होकर दोंनों की **गजारूण मूर्तियां आगरा** के किले के द्वार पर बनवायीं।
- औरंगजेब ने इन मूर्तियों को तुडवा दिया था।
- राजस्थान में एकमात्र **बीकानेर के किले** के द्वार पर भी जयमल और पत्ता की गजारूढ मूर्तियां बनी हुयी हैं।
- बीकानेर में ये मूर्तियां **रायसिंह** ने बनवायीं थीं।
- जयमल पत्ता और कल्लाजी की छतरियां बनी हुई हैं – **चित्तौड के किले में**
- **मोहर मगरी** – यह स्थान चित्तौड जिले में है। यहां अकबर ने मेवाड आक्रमण के समय सोने की मोहर देकर मिट्टी का एक ऊँचा टीला बनवाया था जिसे मोहर मगरी कहते हैं।
- **पिण्डौली का युद्ध :-** यह युद्ध 1568 में उदयसिंह और अकबर की सेना के मध्य हुआ था।

## नागौर दरबार :-

- 1570 ई. में अकबर ने **नागौर दरबार** का आयोजन किया।
- अकबर ने राजपूत शक्तियों को बिना युद्ध किये अधीन करने के उद्देश्य से नागौर दरबार का आयोजन किया।
- नागौर दरबार में सर्वाधिक स्वामिभक्ति का परिचय दिया-**बीकानेर के शासक कल्याणमल ने**
- नागौर के दरबार का विरोध करने वाले शासक – **उदयसिंह, चन्द्रसेन**
- **शुक्र तालाब** का निर्माण अकबर ने नागौर दरबार के समय करवाया।

### उदयसिंह की मृत्यु :-

- **1572 ई.**-गोगुन्दा की पहाडियों में उदयसिंह की मृत्यु हुई
- **1572 ई.** में महाराण प्रताप का गोगुन्दा की पहाडियों में राज्याभिषेक हुआ।
- उदयसिंह की छतरी बनी हुई है – **गोगुंदा में**
  उदयसिंह का राज्याभिषेक हुआ था – **कुंभलगढ में**
  **ईश्वरदान चौहान** -अकबर के चित्तौड़ आक्रमण के समय अकबर के हाथी पर चढकर अकबर पर खंजर से वार किया था जिसमें अकबर बाल-बाल बच गया।

## महाराणा प्रताप

| | | |
|---|---|---|
| प्रताप का जन्म | – | **1540 में कुंभलगढ में** |
| प्रताप की माता का नाम | – | **जैवन्ता बाई** |
| प्रताप के पिता का नाम | – | **उदयसिह** |
| प्रताप का शासन काल | – | **1572 से 1597 तक** |
| महाराणा प्रताप के उपनाम | – | **कीका, मेवाडसिंह** |
| प्रताप का राज्याभिषेक | – | **1572 में गोगुन्दा की पहाडियों में** |

- अकबर ने महाराणा प्रताप से सुलह करने की लिये चार प्रतिनिथियों को प्रताप के पास भेजा था-
  1. **जलाल खां - (नवम्बर 1572)**
  2. **मानसिंह - (जून 1573)**
  3. **भगवन्त दास - (अक्टूबर 1573)**
  4. **टोडरमल - (दिसम्बर 1573)**
- टोडरमल अकबर का **राजस्व विभाग** देखता था।
- मानसिंह की प्रताप से मुलाकात **पिछौला झील के किनारे** हुई।
- मानसिंह के जाने के बाद पिछौला झील के किनारे को गंगाजल से धुलवाया गया।
- भगवन्तदास **मानसिंह का पिता** था।
- अकबर के चारों प्रतिनिधि मण्डल महाराणा प्रताप को झुकाने में सफल नहीं हुये।
- फलस्वरूप राजस्थान इतिहास का सबसे चर्चित युद्ध **हल्दी घाटी का युद्ध (जून 1576)** हुआ।

## हल्दीघाटी का युद्ध – 1576

- हल्दीघाटी वर्तमान में **राजसमंद** जिले में है।
- प्रताप की **सेना** का नेतृत्व **हकीम खां सूरी** ने किया।
- मुगल सेना का प्रमुख सेनापति **राजा मानसिंह** था।
- मुगल सेना के अन्य सेनापति – **आसफ खां, मिहत्तर खां**
- हल्दीघाटी युद्ध का रणनीतिकार **मानसिंह** था।
- युद्ध में **अकबर के आने की झूंठी सूचना** देने वाला व्यक्ति – **मिहत्तर खां**
- हल्दीघाटी युद्ध में **महाराणा प्रताप के राजचिन्ह** को लेकर लडने वाला सरदार – **राव झाला बीजा**
- हल्दीघाटी के युद्ध में अकबर का **आश्रित** इतिहासकार **अलबदायूंनी** उपस्थित था।

### हल्दी घाटी युद्ध को –

- कर्नल जेम्स टॉड ने **''राजस्थान की थर्मोपल्ली ''**
- अल बदायूंनी ने **''गोगुन्दा का युद्ध''** तथा
- अबुल-फजल ने **''खमनौर का युद्ध''** कहा।
- हल्दीघाटी का युद्ध कहा है – **कर्नल जेम्स टॉड ने**
- हल्दीघाटी युद्ध मे मुगलो का प्रमुख उद्देश्य **प्रताप को पकडना** था।
- हल्दीघाटी युद्ध को मुगलों की **विजय** के बावजूद **पराजय** माना जाता है क्योंकि इस युद्ध में मुगल **प्रताप को प्राप्त नहीं कर सके**।
- हल्दीघाटी युद्ध के बाद **मानसिंह** को **अकबर** ने **दक्षिण अभियान के लिये** भेज दिया।
- महाराणा प्रताप की सैनिक सहायता करने वाला भील – **पूंजा भील**

### मेवाड की राजधानियां –

| | | |
|---|---|---|
| नागदा | – | बप्पा रावल |
| आहड | – | अल्लट |
| चित्तौड | – | जैत्रसिंह |
| उदयपुर | – | उदयसिंह (1559) |
| गोगुन्दा | – | उदयसिंह (1568) |
| कुम्भलगढ | – | प्रताप (1576) |
| चावंड | – | प्रताप (1585-97) |

**प्रताप के समय की राजधानी** – **गोगुन्दा, कुंभलगढ, चावंड**

## दिवेर का युद्ध –1582

- दिवेर वर्तमान में **राजसमंद** जिले में है।
- यह युद्ध प्रताप और मुगलों में हुआ इसमें **प्रताप विजयी** हुआ।
- प्रताप की सेना का नेतृत्व **प्रताप के पुत्र अमरसिंह** ने किया।
- मुगल सेना का नेतृत्व किया – **हाकिम खां**
- दिवेर के युद्ध को कहा जाता है –**राजस्थान का मैराथन**
- महाराणा प्रताप ने **1585** में **चावंड** को अपनी राजधानी बनाया।
- महाराणा प्रताप की **मृत्यु 1597** में **चावंड** में हुई।
- महाराणा प्रताप की **छतरी** (आठ खम्भों की छतरी)- **उदयपुर (बाण्डोली) में**
- प्रताप का स्मारक (कांस्य प्रतिमा) – **मोती मगरी, उदयपुर** में **फतेहसागर झील**
- **चेतक की छतरी – हल्दीघाटी में**
  **मायरा की गुफा** (उदयपुर) – यह गुफा युद्ध के समय **प्रताप का शास्त्रागार** थी।
- **भामाशाह** – भामाशाह ने प्रताप को युद्ध में मदद के लिये अपनी समस्त **संपत्ति दान** कर दी थी। इस धन से प्रताप **12 वर्ष तक 25 हजार सैनिक** रख सकता था।
- भामाशाह को कहा जाता है। –**मेवाड का उद्धारक**
- **मेवाड कॉम्पलेक्स योजना** का संबंध है – **पर्यटन से** (प्रताप से जुडे पर्यटन स्थलों को आपस में जोडना)
- **चेतक परियोजना** का संबंध है –**सडक परिवहन से**
- **'भामाशाह सम्मान' का संबंध है – शिक्षा के क्षेत्र में**
- आधुनिक राजस्थान का भामाशाह **जमना लाल बजाज** को कहा जाता है।

### महाराणा प्रताप के बाद मेवाड के शासक :-

| | | |
|---|---|---|
| अमरसिंह प्रथम | – | 1597 – 1620 तक |
| कर्णसिंह | – | 1620 – 1628 |
| जगतसिंह | – | 1628 – 1652 |
| राजसिंह | – | 1652 – 1680 |
| जयसिंह | – | 1680 – 1698 |
| अमरसिंह –द्वितीय | – | 1698 – 1710 |
| संग्रामसिंह-द्वितीय | – | 1710 – 1734 |
| जगतसिंह –द्वितीय | – | 1734 – 1778 |
| भीमसिंह | – | 1778 – 1818 |

### अमरसिंह :-

- अमरसिंह के समय संपूर्ण इतिहास में मेवाड पहली बार झुका।
- मुगलों एवं **अमरसिंह** के मध्य संधि हुई –**1615 में**
- इस संधि में मुगल शासक जहांगीर की ओर से भाग लिया – **खुर्रम (शाहजहां)**

### इस सन्धि की प्रमुख शर्तें –

1. महाराणा **अमरसिंह** स्वयं मुगल दरबार में उपस्थित नहीं हो सका।
2. महाराणा का पुत्र **कर्णसिंह** मुगल दरबार में उपस्थित होगा
3. **चित्तौड** के किले का पुर्ननिर्माण नहीं होगा
4. मुगल सेना में महाराण अमरसिंह के पुत्र कर्णसिंह को **1000 का मनसब** प्राप्त होगा

- कर्णसिंह के समय जहांगीर के पुत्र **खुर्रम** ने अपने पिता के विरूद्ध विरोध किया था।
- कर्णसिंह ने खुर्रम को **पिछौला झील** में निर्माणाधीन **जगमन्दिरों** में शरण दी थी।

- कर्णसिंह ने पिछौला झील में जगमन्दिर तथा मोहन मन्दिर का निर्माण कार्य प्रारंभ करवाया।
- **जगमन्दिर** तथा **मोहन मन्दिर** का निर्माण कार्य पूर्ण करवाया– **जगतसिंह ने**
- उदयपुर में जगदीश मन्दिर का निर्माण करवाया – **जगतसिंह ने**
- यह मन्दिर **विष्णु** को समर्पित है। इस मन्दिर को **जगन्नाथ राय मन्दिर** भी कहा जाता है।
- इस मन्दिर में जगन्नाथ प्रशस्ति की रचना की थी – **कृष्ण भट्ट ने**
- **राजसिंह** ने जोधपुर के शासक **अजीतसिंह** को संरक्षण दिया था।
- राजसिंह ने राजसमन्द जिले में **राजसमंद झील** का निर्माण करवाया।
- इस झील के किनोर **25 शिलाखण्डों** पर **राजप्रशस्ति** उत्कीर्ण है जिसे विश्व का सबसे बडा अभिलेख माना जाता है।
- राजसिंह के समय **कृष्ण की मूर्ति** **वृन्दावन (मथुरा)** से **कांकरौली** में स्थापित करवायी गयी।
- मूर्ति को **श्रीनाथ** जी कहा गया तथा मन्दिर को **द्वारिकाधीश** मन्दिर कहा जाता है।
- राजसिंह ने उपाधि धारण की थी – **विजय कटकातु**
- राजसिंह ने उदयपुर में **अम्बा माता** का मन्दिर बनवाया।
- उदयपुर में **ढेवर** नामक स्थान पर **जयसमंद झील** का निर्माण करवाया – जयसिंह ने
- इस कारण जयसमंद झील को **ढेवर झील** भी कहा जाता है।
- **जयसिंह** ने मुगल शासक **आजम** के साथ सन्धि की थी।
- जोधपुर में **अजीतसिंह** को तथा आमेर में **सवाई जयसिंह** को शासक बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका थी –**अमरसिंह द्वितीय की**
- **सहेलियों की बाडी** का निर्माण करवाया – **संग्रामसिंह द्वितीय**

**हुरडा सम्मेलन :- (17 जुलाई 1734)**

- हुरडा सम्मेलन की योजना बनायी – **संग्रामसिंह द्वितीय**
- हुरडा सम्मेलन का आयोजन किया – **जगतसिंह द्वितीय**
- हुरडा सम्मेलन का उद्देश्य – **मराठों के आक्रमण को रोकने के लिये राजपूतों को एक करना**
- हुरडा सम्मेलन का आयोजन हुआ – **1734**
- हुरडा वर्तमान में भीलवाडा जिले में है।

मुख्य रियासतों के शासक थे :-

- मेवाड – **जगतसिंह द्वितीय**
- मारवाड – **अभयसिंह**
- आमेर – **सवाई जयसिंह**
- यह सम्मेलन **सवाई जयसिंह** की महत्वकांक्षा के कारण असफल हो गया।

## कृष्णा कुमारी विवाद –

- **कृष्णा कुमारी** मेवाड के शासक **भीमसिंह** की पुत्री थी।
- कृष्णा कुमारी का विवाह प्रस्ताव मारवाड के शासक **भीमसिंह** को भेजा गया।
- मारवाड के भीमसिंह की मृत्यु हो गयी।
- यह विवाह प्रस्ताव आमेर के शासक **जगतसिंह** को भेजा गया।
- मारवाड के **मानसिंह** ने इस विवाह प्रस्ताव का विरोध किया।
- फलस्वरूप आमेर के **जगतसिंह द्वितीय** एवं जोधपुर के मानसिंह के मध्य **1807** में युद्ध हुआ जिसे **गिगोंली युद्ध** कहा जाता है।
- गिंगोली युद्ध में **जगतसिंह ने मानसिंह** को हराया।
- इस विवाद को सुलझाने के लिये **1810 ई.** में **कृष्णा कुमारी** को **विष** देकर मार दिया गया।
- अंग्रेजों से सन्धि के समय मेवाड का शासक था – **भीमसिंह**
- 1857 की क्रान्ति के समय मेवाड का शासक –**स्वरूपसिंह**
- भारत की स्वतंत्रता के समय मेवाड का शासक था – **भोपाल सिंह**
- **केसरीसिंह बारहठ** ने मेवाड के किस शासक को दिल्ली दरबार में जाने से रोका – **फतेहसिंह (1911 में)**

# 8. मारवाड़ रियासत

- **मारवाड :-** जोधपुर के आस पास का समस्त क्षेत्र मारवाड कहलाता है।
- प्राचीनकाल में मारवाड को कहा जाता था -**गुर्जरात्रा तथा मरूकान्तर**
- गुर्जरात्रा क्षेत्र में प्रतिहार वंश का शासक था इस कारण प्रतिहार वंश को कहा जाता था -**गुर्जर प्रतिहार वंश**

**प्रतिहारों की दो शाखायें थीं -**

(1) मंडोर शाखा -**हरीशचन्द्र**

(2) भीनमाल शाखा - **नागभट्ट प्रथम**

- मंडोर शाखा के प्रमुख शासक - **कुक्कुल, राजिल्ल, नागभट्ट** आदि।
- मंडोर शाखा के नागभट्ट ने मंडोर से राजधानी को परिवर्तित किया- **मेडता (नागौर)**
- भीनमाल शाखा के प्रमुख शासक -**नागभट्ट प्रथम, भोजराज, महेन्द्रपाल, नागभट्ट द्वितीय**
- भोजराज ने उपाधियां धारण की थीं -**मिहिर, प्रभास, आदिवराह**
- भोजराज को ही मिहिर भोज कहा जाता है।
- महेन्द्रपाल के समय प्रसिद्ध साहित्यकार था - **राजशेखर**
- राजशेखर की प्रमुख पुस्तकें - **कर्पूर मंजरी, बादरायण**
- राजशेखर ने महेन्द्रपाल को उपाधि दी थी -**निर्भय नरेश**
- भारतीय इतिहास में चर्चित तीन वंशों के त्रिपक्षीय संघर्ष में राजस्थान का वंश शामिल था -**प्रतिहार वंश**
- तीन वंश थे -
  1. प्रतिहार वंश
  2. राष्ट्रकूट (दक्षिण से)
  3. पाल वंश (बंगाल से)
- नागभट्ट द्वितीय ने नई राजधानी बनाई -**कन्नौज (उत्तरप्रदेश)**
- कन्नौज में प्रतिहार वंश को कहा गया -**गहढवाल वंश**
- गहढवाल वंश का सबसे शक्तिशाली शासक था -**जयचन्द्र**

**जयचन्द्र के समय तीन शासकों का संघर्ष-**

1. जयचन्द - गहढवाल वंश- कन्नौज
2. पृथ्वीराज तृतीय - चौहान वंश- अजमेर
3. परमार्दी देव - चन्देल वंश - महोवा (उत्तरप्रदेश)

**आला-ऊदल :-** परमार्दी देव के दो वीर सेनापति

- आला-ऊदल, पृथ्वीराज तृतीय से लडते हुये वीरगति को प्राप्त हुये।
- जयचन्द्र के बाद कन्नौज में गहढवाल वंश कमजोर हो गया। जयचन्द्र के पौत्र सीहा ने मारवाड में वापस आकर किस वंश की स्थापना की - **राठौड वंश**

## राठौड वंश

- संस्थापक - **राव सीहा**
- राठौड वंश की प्राचीनतम राजधानी थी - **मंडोर**
- राठौड वंश की उपाधि थी -**राव**

**लाखा झंवर** -यह युद्ध राव सीहा और नसरूद्दीन महमूद के मध्य हुआ था।

यह स्थान **धौला चौतरा** कहलाता है।

- राठौड वंश का पहला शक्तिशाली शासक - **राव चूढा**
- राव चूढा ने अपने ज्येष्ठ पुत्र ''**रणमल**' की बजाय ''**कान्हा**' को उत्तराधिकारी बनाया।
- रणमल मेवाड रियासत की सेवा में चला गया।
- रणमल ने मेवाड के जिन शासकों की सेवा की -**लाखा, मोकल, कुंभा**
- रणमल मुख्य रूप से संरक्षक रहा - **मोकल**
- रणमल के पुत्र राव जोधा का शासनकाल -**1438-1489**
- राव जोधा ने जोधपुर बसाया - **1459 में**
- राव जोधा ने जोधपुर में '**चिडियाटुक पहाडी**' पर **किले** का निर्माण करवाया।
- जिसे '**मेहरानगढ**' का किला कहा जाता है।
- इसे '**मयूर ध्वज गढ**' भी कहा जाता है।

राजस्थान का एकमात्र किला जिसकी नींव में जिंदा आदमी (रजिया) की बलि दी गई थी।

- राव जोधा ने अपनी पुत्री का विवाह कुंभा के पुत्र '**रायमल**' से किया था।

सामंत पृथा का वास्तविक संस्थापक माना जाता है - **राव जोधा**

### सेवकी गांव का युद्ध (1529)

- यह युद्ध राव गंगा और नागौर के शासक दौलत खां के मध्य हुआ।
- इस युद्ध में राव गंगा विजयी हुआ।

**राव मालदेव :-1531-1562**

- राव मालदेव ने अपने पिता **राव गंगा** की हत्या करके **जोधपुर** की सत्ता संभाली।

राव मालदेव का राज्याभिषेक सोजत के किले में हुआ था।

- राव मालदेव के समय दिल्ली के शासक

(1) **शेरशाह सूरी** (2) **हुमायुं**

- शेरशाह सूरी का मूल नाम था -**फरीद खां**
- शेरशाह सूरी ने हुमायुं को लगातार दो युद्धों में पराजित किया।

(1) चौसा का युद्ध -**1539 ई में**

(2) विलग्राम का युद्ध -**1540 ई. में**

**राव मालदेव के प्रसिद्ध युद्ध :-**

**हीरावाडी का युद्ध ( 1533)**

- मालदेव और नागौर के शासक दौलत खां के मध्य हुआ। मालदेव की विजय हुई।

## पहोवा का युद्ध –1541 (नागौर)

- यह युद्ध मालदेव और बीकानेर के शासक **राव जैतसी** के मध्य हुआ।
- इस युद्ध को **मालदेव** ने जीता
- इस युद्ध को जीतने में महत्वपूर्ण भूमिका थी –**कूपा की**

## गिरि सुमेल का युद्ध 1544 में (जैतारण का युद्ध)

- यह युद्ध **शेरशाह सूरी और मालदेव** के मध्य हुआ।
- यह युद्ध **शेरशाह सूरी** ने जीता।
- इस युद्ध में मालदेव के दो वीर सेनापति **जैता** और **कूपा** वीरगति को प्राप्त हुये।
- इस युद्ध के बाद शेरशाह सूरी ने कहा था **''मैं मुट्ठीभर बाजरे के लिये हिन्दुस्तान की बादशाहत खो बैठता''**
- मालदेव ने प्रमुख किले बनवाये –
  **सोजत का किला (पाली में)**
  **मालकोट का किला (मेडता)**
  **पोकरण का किला (जैसलमेर)**
- मालदेव ने बीकानेर में लगभग **ढाई वर्ष** शासन किया।
- मालदेव का विवाह जैसलमेर के शासक **रावल लूणकरण** की पुत्री **उन्मादे** से हुआ।
- **मालदेव** तथा **उन्मादे** में झगडा हो गया तथा उन्मादे मालदेव से **रूठकर** जीवनभर अजमेर के **तारागढ दुर्ग** में रहीं
- इस कारण इतिहास में उन्मादे को **रूठी रानी** कहा जाता है।
- रूठी रानी का महल स्थित है – **उदयपुर में**
- मालदेव ने मेवाड के उदयसिंह को शासक बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
- 'रूठी रानी पुस्तक' के लेखक हैं – **केसरी सिंह बारहठ**
- मालदेव को इतिहास में कहा जाता है – **हसमत वाला शासक, पुरूषार्थी राजकुमार, हिन्दु बादशाह**

## चन्द्रसेन :– 1562–1581 ई.

- **चन्द्रसेन** मालदेव का तीसरा पुत्र था।
- राजस्थान में अकबर के विरूद्ध बगावत करने वाला पहला शासक –**चन्द्रसेन**
- चन्द्रसेन के विरूद्ध संघर्ष के समय अकबर का सेनापति – **हुसैन कुली खाँ**
- चन्द्रसेन को इतिहास में कहा जाता है – **भूला बिसरा शासक, प्रताप का अग्रगामी, मारवाड का प्रताप**
- चद्रसेन से संघर्ष के समय अकबर ने मारवाड में नियुक्त किया – **बीकानेर के रायसिंह को**
- चन्द्रसेन की मुगलों से संघर्ष करते हुये 1581 ई में मृत्यु हो गयी।
- चन्द्रसेन की मृत्यु के बाद उसके भाई **उदयसिंह** को शासक बनाया गया।

## राव उदयसिंह –1581–95

- इतिहास में राव उदयसिंह को कहा जाता है–**मोटा राजा राव उदयसिंह**
- मोटा राजा उदयसिंह की पुत्री **मानीबाई** का विवाह अकबर के पुत्र **जहांगीर** से हुआ था।
- **मानीबाई** को जोधपुर की होने के कारण **जोधाबाई** (वास्तविक जोधाबाई) कहा गया।

## राव उदयसिंह के बाद के शासक

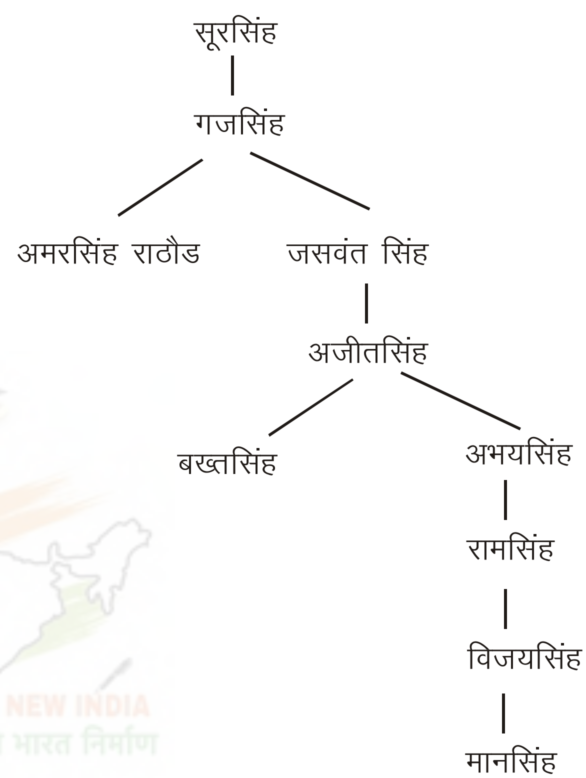


- **सूरसिंह** को अकबर ने सवाई राजा की उपाधि दी थी।
- **गजसिंह** को जहांगीर ने '**दलथम्बन**' की उपाधि दी थी।

## जसवन्त सिंह :–

- **मुहणोत नैणसी** दरबारी कवि था–**जसवन्त सिंह का**
- मुंहणोत नैणसी को राजस्थान का **अबुल–फजल** कहा जाता है।
- जसवन्त सिंह का शासन काल –1638–1678
- जसवन्तसिंह को महाराजा की उपाधि दी थी – **शाहजहां ने**
- जसवन्तसिंह का राज्याभिषेक हुआ था – **आगरा में (1638 में)**
- जसवन्त सिंह के समकालीन मुगल शासक – **शाहजहां व औरंगजेब**
- औरंगजेब के समय मारवाड का शासक था – **जसवन्त सिंह**

**औरंगजेब के दो उत्तराधिकार युद्ध-**

(1) धरमत का युद्ध – **मध्यप्रदेश 1658 में**

औरंगजेब और दारा के मध्य

औरंगजेब ने धरमत का नाम बदलकर रखा – **फतेहाबाद**

**धरमत युद्ध में** राजस्थान के दो शासक मारे गये थे – **सुजानसिंह (शाहपुरा) मुकुंदसिंह (कोटा)**

(2) दौराई का युद्ध – **अजमेर 1659 में**

- औरंगजेब और दारा के मध्य
- औरंगजेब ने दारा को पराजित करने के बाद किस किले में बंदी रखा – **कांकनवाडी (अलवर)**
- जसवंत सिंह ने धरमत के युद्ध में दारा का साथ दिया था।
- दौराई के युद्ध में जसवन्त सिंह ने औरंगजेब से मित्रता कर ली।
- जसवन्त सिंह ने औरंगजेब की कट्टरता का विरोध किया और कहा था कि **''यदि औरंगजेब एक मन्दिर तोडेगा तो मैं सौ मस्जिद तुडवा दुंगा''।**
- जसवंत सिंह की मृत्यु हुई थी-**1678 (जमरूद- अफगानिस्तान में)**
- जसवन्त सिंह की मृत्यु पर औरंगजेब ने कहा था कि **''आज कुफ्र का बांध टूट गया''**।
- 1678 में जसवन्त सिंह की मृत्यु के बाद जोधपुर रियासत को घोषित किया गया – **खालसा**
- खालसा का अर्थ – **केन्द्र के अधीन रियासत**
- औरंगजेब, जसवन्तसिंह के पूरे परिवार को **''दिल्ली''** ले गया।

  उस समय जसवन्तसिंह की दो पत्नी गर्भवती थीं।
- जसवन्तसिंह द्वारा लिखी प्रमुख पुस्तक – **भाषा भूषण आनन्द विलास, गीता महात्म्य, प्रबोध चन्द्रोदय**
- जसवन्तसिंह के प्रमुख दरबारी विद्वान –
  1. नरहरिदास
  2. दलपत मिश्र
- दलपत मिश्र की प्रमुख पुस्तक – **जसवन्त उद्योग**
- नरहरि दास की प्रमुख पुस्तक – **अवतार चरित्र और रामचरित कथा**
- जसवंतसिंह की पत्नी अतिरंग देने जोधपुर में जामसागर तालाब का निर्माण करवाया।

  जसवंतसिंह की एक अन्य पत्नी जसवंतदे द्वारा जोधपुर में राई का बाग और कल्याण सागर का निर्माण

## दुर्गादास राठौड

- **दुर्गादास राठौड** अजीतसिंह का स्वामीभक्त सरदार (सेनापति) था।
- अजीतसिंह को औरंगजेब के चुंगल से मुक्त करवाया – **दुर्गादास राठौड ने**
- अजीतसिंह की परवरिश उसे मुक्त कराने के बाद की गयी थी – **कालिन्दी (सिरोही)**
- दुर्गादास राठौड ने अजीतसिंह को शासक बनवाने के लिये संघर्ष किया – **लगभग 30 वर्ष**
- दुर्गादास को कहा जाता है – मारवाड का अणबिन्दियां मोती, राठौडों का यूलीसेस
- दुर्गादास राठौड ने अपना अंतिम समय बिताया था – **मेवाड रियासत में**
- दुर्गादास राठौड की मृत्यु हुई – **उज्जैन में**
- दुर्गादास राठौड की छतरी बनी हुई है – **उज्जैन में**

## अजीतसिंह

- अजीतसिंह का जन्म हुआ था- 1679 (दिल्ली में)
- अजीतसिंह को मुक्त कराने में प्रमुख भूमिका – **दुर्गादास राठौड**
- अजीतसिंह की धाय का नाम – **गोराधाय**
- 1707 में औरंगजेब की मृत्यु के बाद अजीतसिंह को दुर्गादास राठौड ने मारवाड का शासक बनवाया।
- शासक बनने के बाद अजीतसिंह ने मुगलों से सन्धि कर ली।
- राजस्थान की वह रियासत जिसने औरंगजेब की मृत्यु तक मुगलों से संघर्ष किया –**मारवाड रियासत**
- अजीतसिंह की हत्या उसके पुत्र **'बख्तसिंह'** ने की थी।
- अजीतसिंह ने अपनी पुत्री **'इन्द्रकुमारी'** का विवाह मुगल शासक **'फारूखशियर'** से किया था।
- अजीतसिंह उच्चकोटि का विद्वान था उसके द्वारा लिखे गये प्रमुख ग्रन्थ-**गुणसागर, निर्वाण दुहा, अजीत चरित्र**
- अजीतसिंह द्वारा जोधपुर में कराये गये प्रमुख निर्माण कार्य –

  (1) फतेह महल (2) घनश्याम जी का मन्दिर
- **दुर्गादास राठौड** ने मुगलों से सन्धि का विरोध किया था इस कारण अजीतसिंह ने उसे रियासत से बाहर कर दिया।
- दुर्गादास राठौड अपने जीवन के अंतिम वर्षों में रहे – **मेवाड रियासत में**

## अमरसिंह राठौड

- अमरसिंह राठौड **गजसिंह** का ज्येष्ठ पुत्र तथा जसवन्त सिंह का भाई था।
- अमरसिंह राठौड मुगलों की सेना में चला गया।
- अमरसिंह राठौड का शाहजहां के **साले सलावत खां** से झगडा हो गया और उसे दरबार में ही मौत के घाट उतार दिया।
- अमरसिंह राठौड वापस मारवाड आ गया तथा शासन किया– **नागौर में**

### मतीरे की राड़ (युद्ध)

- यह युद्ध अमरसिंह राठौड एवं बीकानेर के शासक कर्णसिंह के मध्य हुआ **1644** ई0 में।

# 9. बीकानेर रियासत

- बीकानेर को प्राचीनकाल में **जांगल प्रदेश** कहा जाता था।
- बीकानेर को अन्य नाम से भी जाना जाता है – **पूंगल**
- बीकानेर रियासत में शासन किया – **राठौड वंश ने**
- बीकानेर में राठौड वंश का संस्थापक – **राव बीका**
- **राव बीका, राव जोधा** का पांचवा पुत्र था
- बीकानेर रियासत बनी – **1465**
- बीकानेर शहर बसाया गया– **1488**
- मेवाड के पितृहन्ता उदा ने शरण ली थी – **राव बीका के दरबार में**
- बीठ सूजा ने अपनी पुस्तक जैतसी रो छन्द में राव लूणकरण को कहा है –**कलयुग का कर्ण**
- 1513 में बीकानेर पर आक्रमण करने वाले नागौर के शासक का नाम – **मुहम्मद खां (लूणकरण विजयी)**
- भटनेर के किले पर राव जैतसी के समय आक्रमणकारी कौन था –**बावर का पुत्र कामरान** (हुमांयू का भाई)
- राव जैतसी के समय बीकानेर पर आक्रमण करने वाले मारवाड का शासक –**राव मालदेव** (1541 ई.)
- मालदेव और जैतसी के मध्य इस युद्ध को कहा जाता है – **पहोवा युद्ध**
- इस युद्ध में **राव जैतसी** मारा गया।
- मालदेव ने बीकानेर में शासन किया – **लगभग ढाई वर्ष**
- कल्याणमल बीकानेर का शासक किसकी मदद से बना–**शेरशाह सूरी**
- मुगलों के प्रति सर्वाधिक स्वामी भक्ति दिखाने वाला बीकानेर का शासक – **कल्याणमल**
- कल्याणमल के दो पुत्र थे – **रायसिंह तथा पृथ्वीराज राठौड**
- 1570 के नागैर दरबार में सर्वप्रथम अधीनता स्वीकार की थी –**कल्याणमल ने**
- इस दरबार के बाद बीकानेर का शासक रहा – **कल्याणकल**
- मारवाड में नियुक्त किया गया – **रायसिंह (बीकानेर)**
- मुगल दरबार में चला गया– **पृथ्वीराज राठौड**
- पृथ्वीराज राठौड एक प्रसिद्ध साहित्यकार था।
- पृथ्वीराज राठौड द्वारा लिखी प्रमुख पुस्तक – **''बेलि कृष्ण रूकमणी री''**
- इस पुस्तक को राजस्थान में **''पांचवा वेद''** कहा जाता है।
- **कन्हैया लाल सेठिया** ने अपनी पुस्तक **पाथल और पीथल** में महाराण प्रताप को **पाथल** और पृथ्वीराज राठौड को **पीथल** कहा है।
- अकबर के समकालीन बीकानेर के शासक – **कल्याणमल और रायसिंह**
- रायसिंह के समय मुगल शासक थे – **अकबर और जहांगीर**
- जूनागढ किला बनवाया – **रायसिंह ने (1594)**
- मुंशी देवी प्रसाद ने रायसिंह को कहा है – **राजपूताने का कर्ण**
- रायसिंह ने एक पुस्तक लिखी थी – **''बाल बोधिनी''**
- बीकानेर के किले का नाम जूनागढ रखा गया – **रायसिंह के समय**
- **रायसिंह** के बाद **दलपत सिंह** एवं **सूरसिंह** ने शासन किया।
- दलपतसिंह एवं सूरसिंह दोंनों भाई थे।
- **खुर्रम** के विद्रोह के समय जहांगीर ने किसके नेतृत्व में सेना भेजी – **सूरसिंह के नेतृत्व में**
- बीकानेर का वह शासक जो औरंगजेब का विशेष सहयोगी था – **कर्णसिंह**
- कर्णसिंह को इतिहास में कहा जाता है – **जांगलधर बादशाह**
- गंगानन्द मैथिली द्वारा लिखित प्रमुख पुस्तकें
  (1) **कर्णभूषण**
  (2) **काव्यडाकिनी**
- औरंगजेब ने बीकानेर के शासक अनूपसिंह को उपाधि दी थी– **''माही भारतवि''**

## अन्य तथ्य

- अकबर ने जोधपुर आक्रमण किसके नेतृत्व में किया – **हुसैन कुली खाँ (1564)**
- नागौर दरबार के बाद अकबर ने जोधपुर में नियुक्त किया था – **रायसिंह (बीकानेर)**
- मोटा राजा उदयसिंह की मृत्यु हुई थी – **लाहौर में (1595)**
- **उदयसिंह के पुत्र किशनसिंह किशनगढ की स्थापना की थी ।**

**बाबरा :- जैतारण युद्ध के समय अजमेर से 28 किमी दूर शेरशाह सूरी ने अपना शिविर लगाया था।**

जोधपुर में फूलेला तालाब बनवाया गया – **सातलदेव की पत्नी फूला भटियाणी ने**

राठौडों की कुल देवी नागणेची माता के मंदिर का निर्माण करवाया – **राव जोधा ने**

**अनारा बेगम** – महाराजा गजसिंह की पासवान पत्नी थी।

खेजडली की घटना (अमृतादेवी का बलिदान) के समय मारवाड का शासक था – **अभयसिंह**

अभयसिंह के बाद मारवाड के शासक बने – रामसिंह, बख्तसिंह, विजयसिंह

**गुलाबराय** –महाराजा विजयसिंह की पासवान थी।

इसे **जोधपुर की नूरजहां** कहा जाता है।

इसने जोधपुर में रानी सागर, गुलाब सागर बनवाया था।

अंग्रेजों से संधि के समय मारवाड का शासक – **मानसिंह (1803-43)**

मानसिंह ने जोधपुर में **महामंदिर** का निर्माण करवाया।

मानसिंह ने मेहरानगढ किले में **मान पुस्तकालय** की स्थापना की।

# 10. आमेर रियासत

- आमेर रियासत का प्राचीन नाम था – **ढूंढाड राज्य**
- ढूंढाड राज्य विस्तृत था – दौसा के आस पास का क्षेत्र
- ढूंढाड राज्य का संस्थापक माना जाता है – **दूल्हेराव (तेजकरण)**
- दूल्हेराव ने जिस वंश की स्थापना की –**कछवाह वंश**
- कछवाह वंश की उत्पत्ति मानी जाती है – **ग्वालियर के कच्छपद्यात वंश से**
- कुछ इतिहासकार कछवाह वंश को राम के पुत्र कुश का वंशज मानते हैं।
- आमेर में प्राचीनकाल में शासन था – **मीणाओं का**
- आमेर को मीणाओं से छीनकर आमेर रियासत की स्थापना की –**कोकिल देव** (कछवाह वंश)
- आमेर के इतिहास की क्रमिकता **भारमल** से मानी जाती है।
  **भारमल – भगवान दास – मानसिंह प्रथम – भावसिंह – जयसिंह प्रथम – रामसिंह – बिशनसिंह – जयसिंह द्वितीय –ईश्वरीसिंह – माधोसिंह – प्रतापसिंह – जगतसिंह –जयसिंह तृतीय – रामसिंह द्वितीय – माधोसिंह द्वितीय**
- अकबर की राजस्थान यात्रा के समय आमेर का शासक था – **भारमल**
- भारमल की अकबर से पहली मुलाकात – **1556 ई.**
- भारमल ने अकबर की अधीनता स्वीकार की थी – **1562 में**
- **आमेर** (भारमल) पहला राज्य था जिसने अकबर की अधीनता स्वीकार की।
- अकबर एवं भारमल की संधि के समय अकबर का राजस्थान आगमन का उद्देश्य था –**धार्मिक यात्रा**
- इस सन्धि के पश्चात अकबर के अजमेर से लौटते समय भारमल ने अपनी पुत्री **'हरकूबाई'** का विवाह अकबर से किया।
- अकबर और हरकूबाई का विवाह हुआ था – **सांभर में**
- इतिहास में हरकूबाई को कहा जाता है –**मरियम उज्जमानी**
- अकबर ने भगवन्तदास को उपाधि दी थी – **अमीर–उल–उमराह**
- कुछ इतिहासकारों की गलती से **हरखूबाई** को जोधावाई भी कहा जाता है।
- यह विवाह पहला मुगल राजपूत विवाह माना जाता है।
- अकबर के राजस्थान में प्रवेश के समय प्रमुख रियासतों के शासक

| | | |
|---|---|---|
| (1) मेवाड में | – | उदयसिंह |
| (2) मारवाड में | – | मालदेव, चन्द्रसेन, मोटा राजा उदयसिंह |
| (3) आमेर में | – | भारमल, भगवन्तदास, मानसिंह |
| (4) बीकानेर में | – | कल्याणमल, रायसिंह |
| (5) जैसलमेर | – | हरराय |
| (6) बूंदी | – | सुर्जनसिंह |

## मानसिंह

- मानसिंह मात्र 12 वर्ष की अल्पायु में मुगल सेना में चला गया था।
- मुगलों की सर्वाधिक सेवा करने वाला आमेर का शासक – **मानसिंह**
- मुगलों के लिये सर्वाधिक युद्ध जीतने वाला आमेर का शासक– **मानसिंह**
- अकबर के नवरत्नों में शामिल आमेर का शासक – **मानसिंह**
- मानसिंह ने महाराणा प्रताप से पहली मुलाकात की थी – **1573 में पिछौला झील के किनारे**
- हल्दीघाटी के युद्ध मं मानसिंह के साथ प्रमुख सेनापति था – **आसिफ खां**
- मुगलसेना में सबसे बडा मनसव प्राप्त राजपूत शासक था– **मानसिंह (7000 का मनसव)**
- मानसिंह ने अपने पिता भगवन्तदास के साथ अकबर के किस अभियान में भाग लिया –**रणथम्भौर अभियान**
- अकबर का रणथम्भौर आक्रमण – **1569**
- 1589 में भगवन्तदास की मृत्यु के समय मानसिंह किस अभियान पर था – **बिहार अभियान**
- बंगाल एवं बिहार अभियान के समय मानसिंह ने दो नगर बसाये –**बंगाल में अकबर नगर एवं बिहार में मानपुर**
- मानसिंह ने बंगाल अभियान के समय उसके दो पुत्र मारे गये थे –**दुर्जनसिंह व हिम्मतसिंह**
- मानसिंह के शासनकाल में प्रसिद्ध साहित्यकार था – **पुण्डरीक बिठ्ठल**
- पुण्डरीक बिठ्ठल द्वारा लिखी गयी प्रमुख पुस्तकें – **रागमंजरी, रागचन्द्रोदय, नर्तन निर्णय, राग कल्पद्रुम**
- अकबर ने मानसिंह को उपलब्धियां दीं –**फर्जन्द और राजा**
- आमेर के महलों के निर्माण का श्रेय –**मानसिंह को**
- मानसिंह के समय प्रसिद्ध संत था –**दादू दयाल**
- दादू दयाल को **राजस्थान का कबीर** कहा जाता है।
- मानसिंह शिला माता की मूर्ति लेकर आया – **बंगाल अभियान से लौटते समय**
- मानसिंह ने आमेर में **शिलामाता** के मन्दिर का निर्माण करवाया था।
- मानसिंह ने **वृन्दावन** में **गोविन्द देव जी** के मन्दिर का निर्माण करवाया।
- मानसिंह की मृत्यु हुई – दक्षिण अभियान से लौटते समय **एलिचपुर** नामक स्थान पर (1614 ई. में)

**मिर्जा जयसिंह –प्रथम :–**

- जयसिंह प्रथम को मिर्जा की उपाधि दी थी – **शाहजहां ने 1637 ई.**
- मिर्जा जयसिंह प्रथम तीन मुगलशसकों के साथ रहा – **जहांगीर, शाहजहां, औरंगजेब**
- बिहारी नामक कवि जयसिंह प्रथम का दरबारी कवि था।

## पुरन्दर संधि :- 1665 ईस्वी में

- मराठा शासक शिवाजी एवं मुगलों के मध्य (औरंगजेब)
- इस सन्धि में प्रमुख भूमिका थी – **मिर्जा जयसिंह की**
- औरंगजेब तथा मारवाड के शासक जसवन्त सिंह के मध्य सन्धि करने का श्रेय –**मिर्जा जयसिंह प्रथम**
- 1659 के दौराई युद्ध में मुगल सेना का नेतृत्व किया –**जयंसिंह प्रथम ने**
- मुगलों के साथ विदेशी अभियान पर जाने वाला आमेर का शासक था –**जयसिंह प्रथम (कंधार, अफगानिस्तान)**
- जयसिंह प्रथम ने जयगढ किले का निर्माण करवाया
- जयगढ में तोप बनाने का कारखाना स्थित है।
- जयगढ में एशिया की सबसे बडी तोप जयबाण का निर्माण करवाया था – **जयसिंह प्रथम ने**
- जयगढ में **विजयगढी** नामक दुर्ग स्थित है।
- जयसिंह प्रथम ने जयसिंह पुरा नामक नगर बसाया – **औरंगाबाद (महाराष्ट्र)**
- जयसिंह प्रथम के शासनकाल को आमेर रियासत का **स्वर्णकाल** कहा जाता है।
- रामकवि नामक विद्वान हुआ है – **जयसिंह प्रथम के समय**
- राम कवि की प्रमुख पुस्तक – **जयसिंह चरित्र**

## जयसिंह द्वितीय (सवाई जयसिंह)

- जयसिंह द्वितीय **विशनसिंह** का पुत्र था।
- जयसिंह द्वितीय को सवाई की उपाधि औरंगजेब ने दी थी।
- **1707** में औरंगजेब की मृत्यु के बाद उसके पुत्रों में उत्तराधिकार युद्ध हुआ। इस युद्ध को **जाजऊ का युद्ध** कहा जाता है।

## जाजऊ का युद्ध :- (1707 ई. में)

- यह युद्ध औरंगजेब के पुत्रों **आजम** व **मुअज्जम** के मध्य हुआ।
- आजम का साथ **जयसिंह द्वितीय** ने दिया तथा **मुअज्जम** का साथ जयसिंह के भाई विजयसिंह ने दिया
- इस युद्ध में **मुअज्जम** विजयी रहा एवं **'बहादुरशाह'** के नाम से मुगल बादशाह बना।
- मुअज्जम ने आमेर के शासक जयसिंह द्वितीय को हटाकर विजयसिंह को नियुक्त किया।
- मुअज्जम ने आमेर का नाम बदलकर रखा – **मोमीनाबाद (इस्लामाबाद)**
- बहादुर शाह ने आमेर में अपना प्रतिनिध नियुक्त किया था – **सयैद हुसैन खां**
- जयसिंह द्वितीय मेवाड के शासक अमरसिंह द्वितीय के सहयोग से पुन: शासक बना।
- जयसिंह द्वितीय ने भरतपुर के शासक बदनसिंह को उपाधि दी थी – **बृजराज की**
- जयसिंह द्वितीय ने जयपुर बसाया – **1727 ई. में**
- जयपुर नगर का वास्तुकार था – **पण्डित विद्याधर भट्टाचार्य**
- जयसिंह द्वितीय का प्रधानमंत्री था – **मिर्जा इस्माइल (M.I.)**
- जयपुर की प्रमुख सडक (M.I. Road) इसी के नाम पर है।
- जयसिंह द्वितीय खगोल, **संस्कृत** तथा **ज्योतिष** का प्रखण्ड विद्वान था।
- इसने पांच वेदशालाओं का निर्माण करवाया – **दिल्ली, मथुरा, उज्जैन, बनारस, जयपुर**
- सवाई जयसिंह द्वार बनवायी गयी सबसे बडी वेदशाला – **जयपुर**
- इन वेदशालाओं को **'जंतर-मंतर'** कहा जाता है।
- विश्व की सबसे बडी सूर्य घडी जयपुर की वेदशाला में लगी हुई है – **सम्राट यंत्र**
- जयसिंह द्वितीय ने नक्षत्रों क बारे में एक सारणी बनवाई जिसे कहा जाता है – **जीज मुहम्मद शाही**
- जयसिंह द्वितीय ने जयपुर में चन्द्रमहल बनवाया जिसे कहा जाता है – **सिटी पैलेस**
- विश्व का सबसे बडा चांदी का पात्र रखा हुआ है – **सिटी पैलेस में**
- जयसिंह द्वितीय ने आमेर की तलहटी में निर्माण करवाया था– **जल महलों का**
- जयसिंह द्वितीय ने पाण्डुलिपि एवं दुर्लभ ग्रन्थ एवं दुर्लभ चित्रों के लिये एक पुस्तकालय बनवाया जिसे कहा गया है – **पोथीखाना**
- जयसिंह द्वितीय ने जगन्नाथ नामक विद्वान से यूक्लिड के रेखागणित का संस्कृत में अनुवाद करवाया
- भारत में अंतिम हिन्दु शासक जिसने अश्वमेघ यज्ञ किया – **सवाई जयसिंह ने**
- यह यज्ञ **'पुण्डरीक रत्नाकर'** नामक विद्वान की देखरेख में हुआ
- पुण्डरीक रत्नाकर की प्रमुख पुस्तक का नाम – **जयसिंह कल्पद्रुम**
- जयसिंह द्वितीय ने स्वयं कुछ पुस्तकें लिखीं –
  (1) **सम्राट सिद्धान्त** (2) **जयसिंह कारिका**

## ईश्वरी सिंह :-

- सवाई जयसिहं के बाद उसका पुत्र ईश्वरी सिंह जयपुर का शासक बना।

## राजमहल का युद्ध :- 1747 ई. टोंक

- यह युद्ध माधोसिंह व ईवश्वरीसिंह के मध्य उत्तराधिकारी युद्ध था जिसमें माधोसिंह ने सहायता ली थी– **मराठों से, कोटा तथा बूंदी से**
- राजमहल युद्ध को **'ईश्वरी सिंह'** ने जीता।
- इस युद्ध में विजय के बाद ईश्वरीसिहं ने जयपुर के त्रिपोलिया बाजार में निर्माण करवाया था–**ईसनलाट का**
- **ईसरलाट** को **सरगा सूली** भी कहा जाता है ।

## बगरू का युद्ध :- 1748 ई. जयपुर

- ईश्वरीसिंह एवं मराठों के बीच में
- ईश्वरीसिंह पराजित हुआ
- ईश्वरीसिंह द्वारा आत्महत्या – **1750 ई. में**
- मराठों के आक्रमण से तंग आकर आमेर शासक ईश्वरीसिंह ने आत्महत्या कर ली थी
- ईश्वरीसिंह की मृत्यु के बाद '**माधोसिंह**' जयपुर का शासक बना।

## मानपुर का युद्ध (1748) –

- इस युद्ध में ईश्वरीसिंह ने अहमदशाह अब्दाली की फौज को पराजित किया था।
- ईश्वरीसिंह के समय कृष्ण कवि द्वारा लिखी गई पुस्तक – **ईश्वरी विलास**

## माधोसिंह

## भटवाडा का युद्ध – 1761 ई. में

- यह युद्ध कोटा तथा जयपुर रियासत के मध्य हुआ
- इसमें जयपुर रियासत विजयी हुई
- 1763 ई में सवाई माधोसिंह ने "**सवाई माधोपुर**" बसाया
- सवाई माधोसिंह ने जयपुर में **मोतीडूंगरी** के पहाडों पर महलों का निर्माण करवाया
- सवाई माधोसिंह ने '**चाकसू**' में शीतलामाता के मन्दिर का निर्माण करवाया।

सवाई माधोसिंह ने नाहरगढ के किले में अपनी नौ प्रेमिकाओं के लिये एक समान नौ महलों का निर्माण करवाया था।

## मावला मण्डौली का युद्ध (1767)

- यह युद्ध सवाई माधोसिंह और भरतपुर के शासक जवाहरसिंह के मध्य हुआ था।
- अंग्रेजों से संधि के समय जयपुर का शासक था – **जगतसिंह**
- सवाई प्रतापसिंह **ब्रज निधि** नाम से कवितायें लिखते थे।
- हवामहल का निर्माण **सवाई प्रतापसिंह** ने 1799 मे करवाया।
- हवामहल पांच मंजिल का है तथा इसमें **953** खिडकियां है।
- जयपुर का बदनाम शासक कहा जाता है – **जगतसिंह को**
- **गंधर्व बाईसी** – सवाई प्रतापसिंह के दरबार में 22 प्रसिद्ध संगीतज्ञों एवं विद्वानों की एक मण्डली थी।
- प्रतापसिंह के संगीत गुरू – **चाँद खां**
- प्रतापसिंह के काव्य गुरू – **गणपति भारती**
- **तुंगा का युद्ध (1787)** – इस युद्ध मे प्रतापसिंह ने मराठा सेनापति महादजी सिंधिया को पराजित किया था
- '**सितार ए हिंद**' की उपाधि – सवाई रामसिंह द्वितीय
- ब्रिटेन के सम्राट एडबर्ट पंचम जयपुर में आये – **1868 (रामसिंह द्वितीय के समय)**
- जयपुर के लिये पिंकसिटी शब्द का पहली बार प्रयोग किया गया।

# 11. अजमेर रियासत

**चौहानों की उत्पत्ति से संबंधित मत:-**

चन्द्रबरदाई के अनुसार राजपूतों की चार शाखायें अग्निकुण्ड से उत्पन्न हुई।

(1) प्रतिहार (2) परमार

(3) चालुक्य (सोलंकी) (4) चौहान

- चन्द्रबरदाई के अनुसार यह यज्ञ 'वशिष्ठ' के नेतृत्व में '**आबू पर्वत**' पर किया गया था।
- '**कर्नल जेम्स टॉड** एवं इतिहासकार '**स्मिथ**' के अनुसार चौहानों को विदेशी माना जाता है।
- बिजौलिया अभिलेख के अनुसार चौहानों को वत्स गोत्रिय ब्राह्मण माना गया है।
- चौहानों के इतिहास की जानकारी का प्रमुख स्रोत – **बिजौलिया अभिलेख**
- हम्मीर मर्दन पुस्तक के लेखक – **जयसिंह**
- राजस्थान के अन्य महत्वपूर्ण ग्रन्थों में चौहानों को सूर्यवंशी कहा गया है।

**जैसे –**

| | | |
|---|---|---|
| पृथ्वीराज विजय | – | जयानक |
| हम्मीर रासो | – | जोधराज |
| हम्मीर महाकाव्य | – | नयनचन्द्र सूरी |

## चौहानों का मूल स्थान

- राजस्थान के जांगल प्रदेश में सांभर के आसपास के क्षेत्र को **सापालदक्ष** कहा जाता था। चौहानों का प्रारंभिक अधिकार क्षेत्र यहीं माना जाता है।
- सपालदक्ष '**जांगल प्रदेश**' का उपभाग था।
- बिजौलिया अभिलेख में सांभर को कहा गया है – **शाकम्भरी**
- प्राचीनकाल में चौहानों की दो शाखायें थीं –

(1) नाडौल ( पाली) – **लक्ष्मण**

(2) सांभर (जयपुर) – **वासुदेव**

- चौहानों की सबसे प्राचीन शाखा है – **नाडौल**
- चौहानों का असली इतिहास माना जाता है – **सांभर के चौहान**

- सांभर के चौहान ही कालान्तर में अजमेर के चौहान कहलाये

वासुदेव
|
पृथ्वीराज प्रथम
|
अजयराज
|
अर्णोराज
|
जगदेव
|
विग्रहराज–चतुर्थ (वीसलदेव)

विग्रहराज–चतुर्थ (वीसलदेव)
|
अपरगांगेय
|
पृथ्वीराज द्वितीय
|
सोमेश्वर
|
पृथ्वीराज तृतीय
|
गोविन्द राज

- चौहानों का पहला शक्तिशाली शासक था – **अजयराज**
- अजयराज ने 1113 ई. में अजयमेरू दुर्ग बनवाया एवं अजमेर की स्थापना की।
- अजयराज ने अजयदेव नाम से चांदी के सिक्के चलाये
- अजयराज ने मालवा के शासक को हराया था – **नरवर्मन को**
- पुष्कर में ब्रह्मा मन्दिर का निर्माण करवाया था – **अर्णोराज**
- पुष्कर में ही अर्णोराज ने **वराहमन्दिर** का निर्माण करवाया था।
- अर्णोराज के समय प्रमुख विद्वान थे –

(1) **देवबोध**
(2) **धर्मबोध**

- अर्णोराज ने अजमेर की जमीन को पवित्र करने के उद्देश्य से **आनासागर झील** का निर्माण करवाया था।
- इतिहास में अर्णोराज को **'आनाजी'** कहा जाता है।
- अर्णोराज की हत्या उसके पुत्र **जगदेव** ने की थी
- अजमेर के इतिहास में पितृहन्ता – **जगदेव**

## विग्रहराज–चतुर्थ

- विग्रहराज चतुर्थ के दरबारी कवि का नाम – **सोमदेव**
- सोमदेव की प्रमुख पुस्तक का नाम – **ललित विग्रह**
- विग्रहराज चतुर्थ ने स्वयं **'हरिकेल नाटिका'** नामक पुस्तक लिखी।
- विग्रहराज चतुर्थ को इतिहास में **बीसलदेव** के नाम से भी जाना जाता है।
- विग्रहराज चतुर्थ को विद्वानों का आश्रयदाता होने के कारण कवि वांधव कहा जाता है।
- विग्रहराज चतुर्थ ने अजमेर में संस्कृत पाठशाला का निर्माण करवाया
- इस संस्कृत विद्यालय को कुतुबुद्दीन ऐबक' ने तुडवाकर **'अढाई दिन का झोंपडा'** नामक मस्जिद बनवाई।
- राजस्थान का पहला अरबी या फारसी अभिलेख इसी **अढाई दिन का झोंपडा** नामक मस्जिद में है।
- दिल्ली को जीतने वाला पहला चौहान शासक था – **विग्रहराज चतुर्थ**
- विग्रहराज चतुर्थ ने बीसलदेव झील का निर्माण करवाय जिसे कहा जाता है –**बींसलपुर बांध (टोंक)**
- विग्रहराज चतुर्थ के समय अन्य प्रसिद्ध साहित्यकार था – **नरपति नाल्ह**
- नरपति नाल्ह द्वारा लिखी गयी प्रमुख पुस्तक – **बीसलदेव रासो**
- विग्रहराज चतुर्थ के समय मुस्लिम आक्रमणकारी था – **अमीर खुसरब शाह**
- **अमीर खुसरव शाह** को **हम्भीर** भी कहा जाता है।
- चौहानों के इतिहास का स्वर्णकाल – **विग्रहराज चतुर्थ का समय**

## पृथ्वीराज तृतीय (1177 ई. –1192 ई.)

- इतिहास में पृथ्वीराज तृतीय को **रायपिथौरा** कहा जाता है।
- पृथ्वीराज तृतीय मात्र 11 वर्ष की आयु में शासक बना।
- पृथ्वीराज तृतीय के पिता का नाम था – **सोमेश्वर**
- पृथ्वीराज तृतीय की मां कर्पूरीदेवी पुत्री थी – **अनंगपाल (दिल्ली) तोमरवंश**
- पृथ्वीराज तृतीय के संरक्षक का नाम – **भुवनमल**
- पृथ्वीराज तृतीय के समय चौहानों की सत्ता के दो केन्द्र थे –
  (1) अजमेर
  (2) दिल्ली
- पृथ्वीराज तृतीय के प्रमुख दरबारी विद्वान – **जयानक, चन्द्रवरदाई, जनार्दन, नागेश्वर**
- पृथ्वीराज तृतीय के समय **ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती** राजस्थान आये थे।

## तराइन का प्रथम युद्ध :- 1191 ई में

- पृथ्वीराज चौहान तथा मुहम्मद गौरी के मध्य।
- पृथ्वीराज चौहान विजयी हुआ

## तराइन का द्वितीय युद्ध :- 1192 ई. में

- पृथ्वीराज चौहान तथा मुहम्मद गौरी के मध्य।
- मुहम्मद गौरी विजयी हुआ
- तराइन के दोंनों युद्धों को **'चौहान–तुर्क'** संघर्ष कहा जाता है।
- पृथ्वीराज चौहान से पहले गौरी को पराजित करने वाला शासक – **मूलराज (भीम–द्वितीय)** (1178 ई. गुजरात)
- **चन्द्रबरदाई** लिखित पृथ्वीराज रासो के अनुसार **मुहम्मद गौरी** को पृथ्वीराज ने अपने शब्द भेदी बाण से मारा था।
- इस बारे में पृथ्वीराज रासो पुस्तक में लिखा हुआ है।
  **''चार बांस चौबीस गज अंगुल अष्ट प्रमाण।**
  **ता ऊपर सुल्तान है, मत चूके चौहान''।।**
- पृथ्वीराज तृतीय के बाद उसके पुत्र गोविन्द राज ने रणथम्भौर में चौहान वंश की स्थापना की।

# 12. रणथम्भौर रियासत

- रणथम्भौर में चौहान वंश का संस्थापक था – **गोविन्द राज (पृथ्वीराज का पुत्र)**
- **गोविन्दराज,** अजमेर के **पृथ्वीराज चौहान** का पुत्र था।
- रणथम्भौर में **इल्तुतमिश** के आक्रमण के समय शासक था – **वीर नारायण**
- रणथम्भौर में **नसरूद्दीन महमूद (रजिया सुल्तान का भाई)** के आक्रमण के समय शासक था –**जैत्रसिंह**
- रणथम्भौर पर **जलालुद्दीन खिलजी** के आक्रमण के समय शासक था – **हम्मीर देव चौहान**
- रणथम्भौर पर अलाउद्दीन खिलजी के समय शासक था – **हम्मीर देव चौहान**
- हम्मीर देव चौहान ने मेवाड के किस शासक को हराया था – **समर सिंह**
- जलालुद्दीन खिलजी ने रणथम्भौर पर आक्रमण किये – **2** (1291, 1292 में)
- जलालुद्दीन खिलजी ने रणथम्भौर अभियान में विफल होने पर कहा था – **''ऐसे दस किलों को मैं मुसलमान के एक बाल के बराबर भी नहीं समझता।'' – जलालुद्दीन खिलजी**
- राजस्थान में सर्वाधिक मुस्लिम आक्रमण किस किले पर हुये – **रणथम्भौर**
- राजस्थान में सर्वाधिक आक्रमण करने वाला मुस्लिम आक्रमणकारी– **अलाउद्दीन खिलजी**
- अलाउद्दीन खिलजी का सबसे चर्चित आक्रमण – **चित्तौड**
- अलाउद्दीन खिलजी का सबसे चर्चित आक्रमण हुआ–**1301 में।**
- रणथम्भौर पर अलाउद्दीन खिलजी के आक्रमण का प्रमुख कारण – **मंगोल शासक को हम्मीर देव द्वारा शरण देना।**
- **मंगोल** शासक का नाम – **मोहम्मद शाह**
- अलाउद्दीन खिलजी के साथ देने वाले रणथम्भौर के विश्वासघाती सेनापति – **रतिपाल व रणमल**
- अलाउद्दीन खिलजी के आक्रमण के दौरान **हम्मीरदेव** वीरगति को प्राप्त हुआ एवं **महल की रानियों** ने **जौहर** किया।
- इस घटना को **राजस्थान का पहला शाका** (1301) कहा जाता है। यह शाका हम्मीरदेव चौहान की पत्नी **रंगदेवी** के नेतृत्व में हुआ था।
- अलाउद्दीन खिलजी ने युद्ध जीतने के बाद **मंगोल** शासक **मोहम्मद शाह** को बंदी बना लिया।
- अलाउद्दीन खिलजी के पूछने पर मोहम्मद शाह ने कहा था – **''सबसे पहले हम्मीर के पुत्र को शासक बनाउंगा व उसके बाद तुम्हारा कत्ल करूंगा।''– मोहम्मद शाह (मंगोल)**
- अलाउद्दीन खिलजी ने **मोहम्मद शाह** को **हाथी** से कुचलवा दिया।
- अलाउद्दीन खिलजी ने रणथम्भौर जीतने के बाद प्रतिनिधि नियुक्त किया – **उलूक खां को**
- हम्मीरदेव चौहान के राजकवि का नाम था – **विजयादित्य**
- हम्मीरदेव चौहान के गुरू का नाम – **राघवदेव**

# 13. जैसलमेर रियासत

- **यादव वंश** के **भट्टी** नामक व्यक्ति ने 285 ई में **भटनेर** बसाया था।
- भट्टी के वंशजों को कहा गया – **भाटी**
- भाटी वंश के आगामी शासकों ने जैसलमेर क्षेत्र में जाकर शासन किया।
- प्राचीनकाल में जैसलमेर को कहा जाता था – **मांड**
- जैसलमेर में भाटी वंश की प्राचीनतम राजधानी थी – **तन्नौट**
- तन्नौट के स्थान पर नई राजधानी बनायी गयी – **लोदरवा**
- लोदरवा को राजधानी बनाने वाला शासक था – **देवराज भाटी**
- जैसलमेर दुर्ग का निर्माण करवाया– **जैसलदेव भाटी**
- जैसलमेर दुर्ग का कहा जाता है – **उत्तर भाड किवाड़**
- जैसलमेर दुर्ग को उत्तरी सीमा का प्रहरी – – **जैसलमेर**
- उत्तरी प्रवेश द्वार का रक्षक – **भटनेर**
- जैसलमेर के भाटी शासकों की उपाधि थी – **रावल**
- **अकबर** के नागौर दरबार (1570) में उपस्थित होने वाला जैसलमेर का शासक था–**हरिराम (माली) भाटी**
- अंग्रेजों से संधि करने वाला जैसलमेर का शासक – **मूलराज भाटी**
- मारवाड के शासक **मालदेव** की पत्नी **उन्मादे,** जैसलमेर के शासक **रावल लूणकरण** की पुत्री थी।
- **सागरमल गोपा** के समय जैसलमेर का शासक था – **जवाहर सिंह रावल**
- जैसलमेर दुर्ग **ढाई शाके** के लिये प्रसिद्ध है।

# 14. जालौर रियासत

- जालौर में शासन था – **सोनगरा चौहानों का**
- जालौर में सोनगरा चौहान वंश का पहला शासक था – **कीर्तिपाल चौहान**
- **कीर्तिपाल चौहान**, चौहानों की **नाडोल** (पाली) शाखा से आया था।
- जालौर का प्राचीन नाम था – **जावालीपुर**
- जालौर किले को कहा जाता है – **सोनगढ (सुवर्णगिरि)**
- जालौर का सबसे शक्तिशाली शासक था – **कान्हणदेव**
  ''कान्हणदेव प्रबन्ध '' पुस्तक के लेखक – **पद्मनाथ**
- कान्हणदेव के समय मुस्लिम आक्रमणकारी – **अलाउद्दीन खिलजी**
- जालौर पर खिलजी का पहला आक्रमण – **1298**
- जालौर पर आक्रमण का उद्देश्य – **साम्राज्यवाद**
- जालौर पर अलाउद्दीन खिलजी का अधिकार हुआ – **1311 में**
- अलाउद्दीन खिलजी क जालौर अभियान का नेतृत्व किया– **उलूक खां, नसरू खां**
- जालौर अभियान में **उलूक खां** मारा गया था।
- **कान्हणदेव** के खिलाफ किले में खिलजी की सेना को प्रवेश दिलाने में सहायता की थी –**धइया राजपूत बीका** ने
- इस **धोखेबाज** सरदार की **हत्या** इसकी पत्नी ने की थी।

**<u>मुंहणोत नैणसी के अनुसार जालौर आक्रमण के बारे में</u>** –

- कान्हणदेव का पुत्र था – **बीरमदेव**
- **वीरमदेव** दिल्ली सल्तनत में रहता था।
- वीरमदेव सल्तनत की राजकुमारी **फिरोज** से शादी करना चाहता था। इसे अलाउद्दीन खिलजी ने सल्तनत का **अपमान** समझा।
- वीरमदेव भागकर जालौर आ गया।
- वीरमदेव को पकडने के लिये खिलजी ने जालौर पर आक्रमण किया।

**<u>सिवाणा आक्रमण</u>** –

- अलाउद्दीन खिलजी के सिवाणा आक्रमण के समय शासक था – **शीतलदेव**
- **शीतलदेव** के **दो वीर सेनापति** – (1) **सातल** (2) **सोम**
- सिवाणा किले को जीतने के बाद खिलजी ने इसका नाम रखा – **खैराबाद**
- **''राजस्थान का वह किला जिसके दरवाजे कोई नहीं खुलवा सका''** – **जालौर**
- इल्तुतमिश के जालौर आक्रमण के समय प्रसिद्ध इतिहासकार **हसन निजामी** ने कहा था।
- लोक देवता कल्लाजी का ऐतिहासिक नाम है – **कल्ला राठौड**
- कल्ला राठौड की वीर गाथायें जुडी हैं – **सिवाणा किले के**
- कल्ला जी ने युद्ध किया था – **अकबर से**

# 15. भरतपुर रियासत

- **औरंगजेब** की मृत्यु के बाद पहला **जाट** राज्य स्थापित किया – **चूढामन ने**
- इस क्षेत्र की राजधानी थी – **थून**
- भरतपुर रियासत का वास्तविक संस्थापक – **बदनसिंह**
- बदनसिंह ने राजधानी बनायी थी – **डीग**
- बदनसिंह को **ब्रजराज** की उपाधि दी थी – **सवाई जयसिंह ने**
- डीग के महलों का निर्माण करवाया – **बदनसिहं ने**
- भरतपुर के किले का निर्माण करवाया – **सूरजमल ने**
- सूरजमल को कहा जाता है –**अफलाटून, जाटों का प्लेटो।**
- भरतपुर **शहर का नाम** किस व्यक्ति के नाम पर रखा गया – **राम के भाई भरत क नाम पर**
- भरत के भाई **लक्ष्मण** को भरतपुर रियासत का **कुल देवता** माना जाता था।
- भरतपुर से संधि करने वाले **अंग्रेज गर्वनर जनरल** का नाम – **लार्ड बैलेजलि** (संधि 1803 में)
- इस संधि के समय भरतपुर का शासक – **रणजीत सिंह**
- भरतपुर पर अंग्रेजों ने घेरा डाला – **1805 में (लार्ड लेक ने)**
- अंग्रेजों के आक्रमण के समय भरतपुर का शासक था – **रणजीत सिंह**
- **गंगा मन्दिर** का निर्माण करवाया था – **महाराजा बलवन्त सिंह ने**
- इस मंदिर में गंगा की मूर्ति लगवायी थी – **अंतिम शासक विजेन्द्रसिंह ने**
- **लक्ष्मण मंदिर** का निर्माण करवाया था – **बलदेव सिंह ने**
- राजस्थान का ऐसा दुर्ग जो अपने निर्माण काल से स्वतंत्र भारत के समय तक पराजित नहीं हुआ –**लोहागढ भरतपुर**
- भरतपुर की कुल देवी – **राज राजेश्वरी**

| | | |
|---|---|---|
| **लोहागढ** | – | **भरतपुर** |
| **लोहा का गढ** | – | **चूरू** |
| **लोहार्गल किला** | – | **झुंझुनूं** |

- **मिट्टी का दुर्ग** कहा जाता है – **भरतपुर किले को**
- **जवाहर बुर्ज** बना हुआ है – **भरतपुर किले में**
- राजस्थान की पहली रियासत जिसने **नवयुग** में प्रवेश किया –**भरतपुर (किशनसिंह)**
- सन् **1900** से **1929** तक **किशनसिंह** भरतपुर के शासक रहे। इन्होंने शासन को नये आयाम दिये जैसे – **नगर पंचायतों का गठन, नगर पालिकाओं की स्थापना, हिन्दी राजभाषा बनाई, सहकारी बैंक कानून** आदि काम करने के कारण, राजस्थान में **''नवयुग का जनक''** कहा जाता है –**किशनसिंह**
- **वनयात्रा मेला** लगता है – **डीग में**
- **'सुजान चरित्र '** के लेखक कवि **'सूदन'** किसके दरबारी कवि थे – **महाराजा सूरजमल के समय**

# 16. संधियाँ

- भारत में सबसे पहले सहायक सन्धि किसने की थी – **डुप्ले (फ्रांसीसी गर्वनर)**
- अंग्रेजों में सहायक सन्धि का जनक कहा जाता है – **लार्ड बेलेजली**
- लार्ड बेलेजली ने सर्वप्रथम सहायक सन्धि की थी – हैदराबाद के निजाम के साथ
- लार्ड बेलेजली द्वारा राजस्थान में सन्धि की गयी थी –**1803 में** ( भरतपुर व अलवर से)
  ये संधियां मित्रवत संधियां थीं। इसलिये इन सन्धियों को राजस्थान की सन्धियों में शामिल नहीं किया जाता।
- राजस्थान में सहायक सन्धियों के समय गर्वनर जनरल था – **लार्ड हेस्टिंग्स**
- लार्ड हेस्टिंग्स ने राजस्थान में सहायक सन्धियों के लिये प्रतिनिधि नियुक्त किया –**चार्ल्स मैटकाफ**
- राजस्थान में सहायक सन्धियों का श्रेय दिया जाता है –**चार्ल्स मैटकॉफ**
- अंग्रेजों से सहायक सन्धि करने वाली राजस्थान की पहली रियासत –**करौली (यादव वंश)**
- अंग्रेजों से सन्धि करने वाली पहली राजपूत रियासत – **कोटा (हाडा चौहान)**
- अंग्रेजों से सन्धि के समय राजस्थान की रियासतों के सामने प्रमुख समस्यायें थीं –
  **(1) मुगलों की अधीनता**
  **(2) अंग्रेजों का आगमन**
  **(3) मराठों का आक्रमण**
  **(4) पिण्डारियों की लूटपाट**
- राजस्थान की रियासतों ने मराठों के आक्रमण एवं पिण्डारियों की लूटपाट से बचने हेतु सही विकल्प चुना- **अंग्रेजों से सन्धि**
- पिण्डारियों को संतुष्ठ करने के लिये अंग्रेजों ने पिण्डारियों के नेता नबाव अमीर खां को 17 नवम्बर 1817 को **टोंक** रियासत का नबाव (शासक) बना दिया।
- अंग्रेजों द्वारा सबसे अन्त में सन्धि की गयी – **सिरोही से**
- सिरोही से संधि करने में देरी का प्रमुख कारण – **मारवाड का हस्तक्षेप**
- अंग्रेजों ने मराठों से राजस्थान में जिस क्षेत्र को जीता था – **अजमेर** (मेरवाडा क्षेत्र)
- उस समय अजमेर मेरवाडा क्षेत्र में मराठों का सरदार था – **दौलतराव सिंधिया**
- राजस्थान की एकमात्र रियासत जो अंग्रेजों के प्रत्यक्ष नियंत्रण में रही – **अजमेर मेरवाडा**

## राजस्थान की रियासतों की सन्धियाँ

| | रियासत | शासक | समय |
|---|---|---|---|
| (1) | करौली | हरबख्श पाल | 15 नवम्बर 1817 |
| (2) | टोंक | नबाव अमीर | 17 नवम्बर 1817 |
| (3) | कोटा | महाराव उम्मेदसिंह | 26 दिसम्बर 1817 |
| (4) | मारवाड | महाराजा मानसिंह | 6 जनवरी 1818 |
| (5) | मेवाड | महाराणा भीमसिंह | 13 जनवरी 1818 |
| (6) | बूंदी | राव विष्णुसिंह | 10 फरवरी 1818 |
| (7) | बीकानेर | सूरतसिंह | 21 मार्च 1818 |
| (8) | किशनगढ | कल्याणसिंह | 7 अप्रेल 1818 |
| (9) | जयपुर | सवाई जगतसिंह | 15 अप्रेल 1818 |
| (10) | जैसलमेर | महाराजा मूलराज | 2 जनवरी 1819 |
| (11) | सिरोही | महाराव शिव सिंह | 11 सितम्बर 1823 |

- सन्धि प्रस्तावों को नकारने वाली रियासत – **जोधपुर (मारवाड)**
- 1823–1857 के समय को कहा जाता है – **अधीनस्थ सन्धि काल का समय**
- अधीनस्थ संधि काल के समय **डलहौजी** द्वारा राजस्थान की किस रियासत को हडपने की कोशिश की गयी थी – **करौली**
- 1823 के बाद ठिकानों को रियासतों के अधीन लाने के लिये जो संधियां की गई – **टांड कॉलनामे**
- अधीनस्थ काल के समय कर्नल जेम्स टॉड पॉलिटिकल एजेन्ट रहा था – **मेवाड रियासत**
- **कर्नल जेम्स टॉड** ने जागीरदारों एवं शासकों के मध्य संधियां करवायीं ये संधियां –**टॉड कॉलनामे**
- अधीनस्थ काल के समय संधियां सम्पन्न होने के बाद राजस्थान को अंग्रेजों ने कहा था –**राजपूताना स्टेट्स**
- राजपूताना स्टेट्स को राजपूताना रेजीडेन्सी नाम देकर यहां सर्वोच्च पद सृजित किया गया–ए.जी.जी.
- ए.जी.जी. (A.G.G.)का पूरा नाम – **AGENT TO GOVERNER GENERAL**
- राजस्थान का पहला ए.जी.जी. था – **सर लॉकेट (1832)**
- राजस्थान में ए.जी.जी. पद सृजित करने के समय भारत का गर्वनर जनरल था –**लार्ड विलियम बैंटिंग**
- राजपूताना रेजीडेन्सी या ए.जी.जी. का मुख्यालय था – **अजमेर**
- ए.जी.जी. का निवास स्थान था – **माउण्ट आबू (सिरोही)**
- 1845 में ए.जी.जी. का कार्यालय अजमेर से माउण्ट आबू स्थानान्तरित कर दिया गया ।

# 1857 की क्रान्ति

- 1857 की क्रान्ति के समय भारत में गर्वनर जनरल था – **लार्ड केनिंग**
- 1857 की क्रान्ति का श्रीगणेश भारत में हुआ – **29 मार्च बैरकपुर** (पं.बंगाल) **मंगलपाण्डे** ने किया
- 1857 की क्रान्ति का भारत में पहला विद्रोह –**10 मई मेरठ छावनी**
- 1857 की क्रांन्ति का श्रीगणेश राजस्थान में हुआ –**नसीराबाद (28 मई)**
- राजस्थान में 1857 की क्रान्ति से पहले महत्वपूर्ण क्रान्तिकारी घटना –**1847 में डूंगजी, जवाहरजी** नामक व्यक्तियों ने नसीराबाद छावनी को लूटा।
- 1857 की क्रांति के समय राजस्थान में छावनी थीं – **6**

**(1) नसीराबाद- अजमेर**
**(2) ब्यावर – अजमेर**
**(3) नीमच – मध्य प्रदेश**
**(4) देवली – टोंक**
**(5) ऐरिनपुरा – पाली**
**(6) खैरवाडा – उदयपुर**

**अंग्रेजों ने 3 सैनिक टुकडियां भी गठित की थीं** –

**1. शेखावाटी ब्रिगेड (1835)**
**2. जोधपुर लीजन**
**3. मेवाड भीलकोर**

- 1857 की क्रांति के समय राजस्थान में पॉलिटिकल एजेन्ट थे –

| | | |
|---|---|---|
| **मेवाड (उदयपुर)** | – | **शॉवर्स** |
| **मारवाड (जोधपुर)** | – | **मैकमेसन** |
| **कोटा** | – | **जॉन बर्टन** |
| **जयपुर** | – | **ईडन** |
| **भरतपुर** | – | **मॉरीसन** |
| **सिरोही** | – | **हॉल** |

- 1857 की क्रान्ति के समय राजपूताना रेजीडेन्सी का ए.जी. जी. था – **पेट्रिक लॉरेन्स**
- 1857 में अजमेर (मेरवाडा) का नागरिक प्रशासन कमिश्नर था – **कर्नल डिक्सन**
- 1845 में एजीजी का कार्यालय – **अजमेर से माउण्टआबू स्थानान्तरित कर दिया गया।**

## नसीराबाद में विद्रोह

- नसीराबाद में विद्रोह का प्रमुख कारण था –**अविश्वास**
- विद्रोह का दिनांक – **28 मई 1857**
- नसीराबाद छावनी में तैनात सैनिक टुकडी का नाम – **15 वीं नैटिव इन्फेंट्री**
- नसीराबाद में मुबई से बुलाये गये सैनिकों का नाम – **लासर्स सैनिक**
- इस टुकडी को **भालाधारी टुकडी** कहा जाता था।
- नसीराबाद छावनी का विद्रोह **राजस्थान का पहला विद्रोह** कहा जाता है।

## नीमच का विद्रोह :-

- नसीराबाद घटना के बाद नीमच छावनी में **कर्नल ऐबॉट** ने सैनिकों को परेड मैदान में बुलाया और बफादारी की शपथ दिलायी।
- एक घुडसवार सैनिक **अलीबेग** ने **कर्नल एबार्ट** का विरोध किया उसने अंग्रेजों को शपथ तोडने का उत्तरदायी ठहराया।
- इस कारण **अलीबेग** के नेतृत्व में **3 जून 1857** को नीमच में विद्रोह हुआ।

## ऐरिनपुरा में विद्रोह

- 21 अगस्त 1857 को एरिनपुरा के सैनिकों ने विद्रोह कर दिया।
- ऐरिनपुरा के सैनिकों ने नारा दिया था – **''चलो दिल्ली मारो फिरंगी''**
- एरिनपुरा के सैनिकों का साथ देने वाले ठिकानेदार का नाम–**ठाकुर कुशलपालसिंह चंपावत**
- ठाकुर कुशलपालसिंह **आउवा** ठिकाने का ठिकानेदार था।
- इस कारण एरिनपुरा सैनिकों की क्रान्ति को कहा जाता है – **आउवा क्रांति विद्रोह**

## विथोडा का युद्ध –

- यह युद्ध 8 सितम्बर 1857 को हुआ था।
- यह युद्ध **एरिनपुरा के विद्रोही सैनिकों** और अंग्रेजी सेना के मध्य हुआ।
- इस युद्ध में विद्रोही सैनिकों का साथ **ठाकुर कुशलपालसिंह** ने दिया
- इस युद्ध में अंग्रजी सेना का साथ जोधपुर रियासत के सेनापति **ओंकारसिंह (ओनार) पंवार** ने दिया।

## चेलावास का युद्ध :-

- यह युद्ध **18 सितम्बर 1857** को हुआ।
- इस युद्ध में जोधपुर का पोलिटिकल एजेन्ट **मैकमेशन** मारा गया।
- **मैकमैशन का सिर** आउवा के दरवाजे पर टांक दिया गया।
- इस युद्ध को **गोंरों और कालों का युद्ध** भी कहा जाता है।
- तत्कालीन ए.जी.जी. पैट्रिक लॉरेन्स ने 1857 के विद्रोह को दबाने में प्रत्यक्ष भाग लिया –**चेलावास युद्ध में।**
- आउवा के विद्रोह का दमन करने का श्रेय – **होम्स** को (जनवरी 1858 को)
- आउवा विद्रोह के बाद कुशलपालसिंह ने शरण ली थी– **सलूम्बर ठिकाना (मेवाड)**
- आउवा विद्रोह की जांच के लिये गठित किये गये आयोग का नाम – **मेजर टेलर कमीशन**
- कुशलपालसिंह ने 1860 में आत्म समर्पण किया था – **नींमच में**

## कोटा में विद्रोह –

- 1857 में कोटा में पॉलिटिकल एजेन्ट था – **जॉन बर्टन**
- कोटा में क्रान्ति के समय क्रान्तिकारियों का नेतृत्व किया – **महाराव खां जगदयाल ने**
- कोटा क्रान्ति के समय **महराव खां** को फांसी दी गयी थी।
- कोटा क्रांति के समय जिन प्रमुख अंग्रेज अधिकारियों की हत्या की गयी–**जॉन बर्टन व डॉ कार्टन**
- कोटा क्रांति का दमन करने का श्रेय – **जनरल रॉबर्टस**
- कोटा क्रांति के दमन में जिस रियासत ने अंग्रेजों का सहयोग किया – **मेवाड रियासत**
- कोटा क्रांति के अन्य प्रमुख क्रांतिकारी – **मोहम्मद खां, अम्बर खां व गुलमौहम्मद खां**
- 1857 की क्रांति के समय राजस्थान में जन विद्रोह का सबसे बडा केन्द्र था – **कोटा**
- 1857 की क्रांति क समय जिस छावनी के सैनिकों ने सबसे बडा विद्रोह किया – **एरिनपुरा**

## राजस्थान में अन्य प्रमुख क्रांतियां

### भरतपुर की क्रान्ति

मई 1857 में भरतपुर में मेव और गूजरों ने विद्रोह कर दिया।

- 1857 की क्रांति के समय भरतपुर का पॉलिटिकल एजेन्ट **''मौरिसन''** भाग गया था – **आगरा**
- अलवर के महाराजा **विनयसिंह** ने अंग्रेजों की मदद के लिये आगरा सेना भेजी। रास्ते में क्रांतिकारियों ने इस सेना को पराजित किया।
- अंग्रेज और क्रान्तिकारियों के इस संघर्ष को कहा जाता है – **अछनेरा युद्ध**

## टोंक की क्रान्ति

जून 1857 में आलम खां के नेतृत्व में टोंक में सैनिकों ने विद्रोह किया।

टोंक के विद्रोह को दबाने में प्रमुख भूमिका – **जयपुर के पॉलिटिकल एजेन्ट 'ईडन'**

- धौलपुर में क्रांतिकारियों का नेतृत्व किया – **रामचन्द्र तथा हीरालाल**
- राजस्थान में 1857 की क्रांति में अंग्रेजों का सर्वाधिक सहयोग करने वाली रियासतें –
  1. बीकानेर – सरदारसिंह
  2. मेवाड – स्वरूपसिंह
- राजस्थान का एकमात्र शासक जिसने 1857 की क्रांति में राजस्थान के बाहर अंग्रेजों का साथ दिया – **बीकानेर (सरदारसिंह)**
- राजस्थान का एकमात्र शासक या जागीरदार जिसने अंग्रेजों के विरूद्ध प्रत्यक्ष भाग लिया –**ठाकुर कुशलपालसिंह (आउवा)**
- 1857 की क्रांति में भाग नहीं लेने वाली छावनी थीं – **खेरवाडा छावनी व ब्यावर छावनी**
- 1857 की क्रांति के समय विद्रोहियों का 6 नगरों पर अधिकार रहा।

  **1. भरतपुर 2. कोटा 3. झालावाड 4 बांसवाडा 5. टोंक 6. धौलपुर**
- 1857 की क्रांति में राजस्थान का पहला शहीद – **अमरचंद बांठिया (बीकानेर)**

  अमरचंद बांठिया को फांसी दी गई – **जून 1857 (ग्वालियर में)**
- राजस्थान की किस रियासत को हडपने की कोशिश की गई– **करौली**

## राजस्थान में तांत्या टोपे

- तात्या टोपे का मूल नाम था – **रामचन्द्र पाडुरंग**
- तात्या टोपे का संबंध जिस रियासत से था – **ग्वालियर रियासत**
- तात्या टोपे ने 1857 की क्रांति का नेतृत्व किया – **कानपुर में**
- कानपुर में तात्या टोपे के साथ **नाना साहब** थे।
- तात्या टोपे का राजस्थान आने का प्रमुख कारण था – **रियासतों से सहायता लेना**
- तात्या टोपे राजस्थान में **दो बार** आया– **8 अगस्त और 11 दिसम्बर**
- तात्या टोपे का राजस्थान में पहली बार प्रवेश हुआ – **मांडलगढ (भीलवाडा)**
- तांत्या टोपे ने राजस्थान में दो रियासतों पर अधिकार कर लिया था –
  1. झालावाड
  2. टोंक
- तात्या टोपे का पीछा करने वाले अंग्रेज अधिकारी का नाम – **''जनरल रॉबर्ट्स**
- तात्या टोपे को पकडवाने में प्रमुख भूमिका निभायी थी – **मानसिंह नरूका (सीकर)**
- तात्यां टोपे को फांसी दी गई – **18 अप्रेल 1859 को शिवपुरी (मप्र) में**

# 17. किसान आंदोलन

## बिजौलिया किसान आन्दोलन

- बिजौलिया वर्तमान में **भीलवाडा** जिले में है।
- बिजौलिया और भेंसरोडगढ का संपूर्ण क्षेत्र कहलाता है- **ऊपरमाल**
- बिजौलिया का पहला ठिकानेदार था - **अशोक परमार ( जगनेर)**
- 1527 में खानवां का युद्ध में **अशोक परमार** ने सांगा का साथ दिया था।
- इस कारण **सांगा** ने अशोक परमार को बिजौलिया का ठिकानेदार बना दिया।
- बिजौलिया **मेवाड रियासत** की जागीर थी।
- बिजौलिया किसान आन्दोलन के समय बिजौलिया के जागीरदार थे - **कृष्णसिंह (1893),**
- कृष्णसिंह के बाद जागीरदार बनाये गये - **पृथ्वीसिंह (1906)**
- बिजौलिया आन्दोलन का श्रीगणेश हुआ - **1897 में**
- बिजौलिया किसान आन्दोलन का जनक - **साधु सीताराम दास**
- बिजौलिया किसान आदोलन का संपूर्ण भारत का **सबसे पहला सबसे लम्बा और सबसे सफल** किसान आन्दोलन माना जाता है।
- उस समय बिजौलिया जागीर में करो या लगान के प्रकार थे- **84 प्रकार के कर**
- उस समय बिजौलिया में भू-राजस्व की पद्धति थी - **लाटा कूटा**
- बिजौलिया के किसान आन्दोलन के समय मेवाड महाराणा से मिलने गये, दो किसान प्रतिनिधि थे -**नानजी तथा ठाकरी**

### चंवरी कर

- ठिकाने के प्रत्येक किसान को अपनी पुत्री की शादी पर 5 रूपये जागीरदार को देने पडते थे। कृष्णसिंह ने 1903 में चंवरी कर लगाया था।

### तलवार बंधाई -

- ठिकानेदार को गद्दी संभालते समय एक नश्चित राशि मेवाड के महाराणाओं को पहुंचानी पडती थी। यह उत्तराधिकार शुल्क था। पृथ्वीसिंह ने 1906 में तलवार बंधाई कर लगाया।
- **बैठ-बैगार** - बिना मजदूरी दिये कार्य करवाना।
- **<u>बिजौलिया किसान आन्दोलन और विजयसिंह पथिक</u>**
- विजयसिंह पथिक का मूल नाम - **भूपसिंह** (बुलंदशहर, यूपी)
- **रास बिहारी बोस** ने विजयसिंह पथिक को बिजौलिया किसान आन्दोलन में भाग लेने के लिये खरवा ठाकुर **गोपालसिंह** के पास भेजा।
- विजयसिंह पथिक ने **1916** में बिजौलिया किसान आन्दोलन का नेतृत्व संभाला।
- पथिक जी ने **1917** में **'ऊपरमाल पंच बोर्ड'** का गठन किया।
- **'ऊपरमाल पंच बोर्ड'** संगठन का प्रमुख किसने बनाया गया - **मन्ना पटेल**
- पथिक जी के प्रयासों से 1919 में राजस्थान के जन आंदोलन के लिये बनाये गये संगठन का नाम - **राजस्थान सेवा संघ**
- राजस्थान सेवा संघ का मुख्यालय **अजमेर** में कब परिवर्तित किया गया - **1920 में**
- बिजौलिया किसान आंदोलन के समाप्त करने के लिये **राबर्ट हॉलैण्ड** (ए.जी.जी.) तथा राजस्थान सेवा संघ के प्रतिनिधियों के मध्य समझौता हुआ - **1922 में**
- इस समझौते के तहत बिजौलिया के किसानों के राजस्व के **1/3** कर दिया गया।
- विजयसिंह पथिक बिजौलिया किसान आंदोलन से कब अलग हुये - **1927**
- विजयसिंह पथिक के बाद बिजौलिया किसान आन्दोलन का नेतृत्व किया था - **राजस्थान सेवा संघ**
- 1923 में विजयसिंह पथिक को गिरफ्तार करके **टाटगढ (अजमेर)** जेल भेज दिया गया।
- बिजौलिया किसान आंदोलन को राष्ट्रीय स्तर पर पहचान दिलाने वाला समाचार पत्र -**प्रताप (कानपुर)**
- प्रताप समाचार पत्र के संपादक - **गणेश शंकर विद्यार्थी**
- बिजौलिया किसान आंदोलन के दौरान किसानों की मांगों की जांच के लिये गठित आयोग का नाम- **बिंदू लाल भट्टाचार्य आयोग**
- यह आंदोलन <u>मेवाड रियासत</u> के प्रधानमंत्री **विजय राघवाचार्य** और **राजस्थान सेवा संघ** के नेता **माणिक्य लाल वर्मा** के मध्य समझौते से **1941** में समाप्त हुआ।
- बिजौलिया किसान आंदोलन सतत् रूप से चला - **44 वर्ष**
- संपूर्ण भारत में **सबसे पहला, सबसे लम्बे** समय तक चलने वाला और **सबसे सफल** आंदोलन -**<u>बिजौलिया किसान आंदोलन</u>**

## बेंगू किसान आंदोलन

- ◆ बेंगू वर्तमान में **चित्तोडगढ** में है।
- ◆ बेंगू किसान आंदोलन की शुरूआत **1921**
- ◆ बेंगू किसान आंदोलन का नेतृत्व -**रामनारायण चौधरी**
- ◆ बेंगू का ठिकानेदार - **अनूपसिंह**
- ◆ बेंगू कि किसानों की सबसे बडी पंचायत हुई -**मेनाल (भीलवाडा)**
- ◆ ठाकुर अनूपसिंह एवं राजस्थान सेवा संघ के मध्य इस आंदोलन को समाप्त करने के लिये एक समझौता हुआ इसे अंग्रेजों ने **''बौल्शेविक'** समझौता कहा।
- ◆ बेंगू किसान आंदोलन से विजय सिंह पथिक कब जुडे - **1923 में**
- ◆ बेंगू किसान आंदोलन में शहीद किसान - **रूपा जी कृपा जी**

# 18. जनजाति आंदोलन

## नीमूचाडा काण्ड :- 14 मई 1925 में

- नीमूचाडा **अलवर** जिले में है।
- अलवर के किसानों ने नीमूचाणा में एक सभा का आयोजन किया था जहां अंग्रेजों द्वारा गोली चलायी गयी। इस जघन्य हत्याकाण्ड को ही नीमूचाणां काण्ड कहा जाता है।
- नीमूचाणां काण्ड को गांधीजी ने कहा था – **'डायरिज्म डबल डिस्टल्ड** (जलियांवाला से दुहरा हत्याकाण्ड)

## बूंदी किसान आन्दोलन :- 1926 में

- बूंदी किसान आन्दोलन का नेता – पण्डित नेनूराम शर्मा
- बूंदी किसान आन्दोलन के दौरान पुलिस की गोली लगने से **नानक जी भील** नामक किसान की मृत्यु हो गयी
- नानक जी भील ने बूंदी के किसानों में जागृति फैलाने के लिये **झण्डा गीतों** का प्रचार किया था।

## मारवाड किसान आन्दोलन :-

- मारवाड किसान आन्दोलन की शुरूआत **1923** में हुयी
- मारवाड किसान आन्दोलन का प्रमुख नेता – **जयनारायण व्यास**
- मारवाड किसान आन्दोलन के लिये बनाये गये संगठन का नाम –**मारवाड हितकारिणी सभा**
- मारवाड हितकारिणी सभा का गठन **1923** में जयनारायण व्यास ने किया
- जयनारायण व्यास ने मारवाड के किसानों की व्यथा का वर्णन किस समाचार पत्र में किया–**तरूण राजस्थान**

## किसान आन्दोलन से संबंधित अन्य तथ्य

- बीकानेर में किसान आन्दोलन का नेतृत्व किया – **कुम्भाराम आर्य ने**
- बीकानेर किसान आन्दोलन में किसानों की प्रमुख मांग थीं – **आवियाना की दरों में कमी (जल टैक्स)**
- मेव किसान आन्दोलन (अलवर-भरतपुर) का नेतृत्व किया– **मुहम्मद अली ने**
- शेखावाटी क्षेत्र में किसान आन्दोलन का नेतृत्व किया – **नरोत्तम लाल जोशी**
- शेखावाटी के किसान आन्दोलन को कहा जाता है – **जकात आन्दोलन**
- तौल आन्दोलन का संबंध है – **मारवाड रियासत**

## डावडा काण्ड :-

- नागौर जिले के डीडवाना तहसील में किसान आन्दोलन के दौरान हुये गोलीकाण्ड को कहा जाता है।
- इस आन्दोलन के दौरान गोली लगने से शहीद हुये प्रमुख व्यक्ति का नाम – **चुन्नीलाल शर्मा**

## भगत आन्दोलन

- जनजाति आन्दोलन का उद्देश्य था– **आदिवासियों को सामाजिक** रूप से उन्नत करना।
- जनजातियों का सर्वाधिक प्रभाव क्षेत्र राजस्थान में– **दक्षिण राजस्थान**
- दक्षिण राजस्थान में आदिवासियों में सामाजिक सुधार के लिये प्रचार प्रसार का प्रयास किया – **सुरजी भगत**
- दक्षिण राजस्थान में आदिवासियों के उत्थान के लिये जनजाति आन्दोलनों का वास्तविक जनक माना जाता है – **गोविन्द गिरी को**
- राजस्थान में सामाजिक सुधार आन्दोलन का जनक माना जाता है – **दयानन्द सरस्वती को**
- दयानन्द सरस्वती ने समाज सुधार आन्दोलन के लिये राजस्थान में संगठन बनाया– **परोपकारिणी सभा** (अजमेर, 1883)
- दयानन्द सरस्वती से प्रेरणा लेकर गोविन्द गिरि ने दक्षिण राजस्थान में **सुरजी भगत के आन्दोलन** को नई दिशा दी इस कारण भगत आन्दोलन का वास्तविक जनक कहा जाता है – **गोविन्द गिरि को**
- गोविन्द गिरि ने 1883 में एक संगठन बनाया – **सम्प सभा (सिरोही)**
- गोविन्द गिरि का जन्म हुआ – **बसिया गांव (डूंगरपुर)**
- गोविन्दगिरी ने इस आन्दोलन को प्रचारित करने के लिये बांसवाडा जिले में **मानगढ पहाडी पर** मुख्यालय बनाया।
- **1908** में भगत आन्दोलन के दौरान एकत्रित भीड पर मानगड पहाडी पर एक गोलीकाण्ड हुआ।
- गोविन्द गिरी का **समाधि स्थल** बांसवाडा जिले में इस **मानगढ पहाडी** पर ही बना हुआ है।
- राजस्थान सरकार का पर्यटन विभाग इस स्थल को **मानगढ धाम** के नाम से पर्यटन के लिये विकसित कर रहा है।
- गोविन्दगिरी ने अपना अंतिम समय **कम्बोई (गुजरात)** नामक स्थान पर बिताया।

## एकी आन्दोलन

- एकी आन्दोलन का नेतृत्व **मोतीलाल तेजावत** ने किया।
- इस आन्दोलन की शुरूआत **1921** में हुयी।
- इस आन्दोलन की पहली आमसभा **झाडौल (उदयपुर)** में हुयी।
- इस आन्दोलन की वास्तविक शुरूआत **मातृकुण्डिया** (चित्तौडगढ) से मानी जाती है।
- एकी आन्दोलन का प्रभाव क्षेत्र **भोमट का पठारी** भाग है।
- **भोमट** :- उदयपुर, डूंगरपुर और सिरोही का क्षेत्र भोमट कहलाता है।
- इस कारण एकी आन्दोलन को **भोमट आन्दोलन** भी कहा जाता है।

- इस आन्दोलन के दौरान **7 मार्च 1922 को नीमणा गांव** में एक सभा हुयी उस सभा के दौरान हुये गोलीकाण्ड को **नीमणा काण्ड** कहा जाता है।
- महात्मा गांधी के निर्देश पर **मोतीलाल तेजावत** ने 1929 में स्वयं को पुलिस के हवाले कर दिया और 1945 तक जेल में बंद रहे।

## मीणा आन्दोलन

- यह जयपुर के आस पास रहने वाली **मीणा** जनजाति का आन्दोलन था।
- 1924 में ब्रिटिश सरकार ने एक अधिनियम पारित किया – **क्रिमनल ट्राइब्स कानून**
- क्रिमनल ट्राइब्स अधिनियम क तहत जयपुर रियासत में मीणा जनजाति से संबंधित एक कानून बनया गया – **जयराम पेशा कानून**
- **जयराम पेशा कानून** –इस कानून के अन्तर्गत 12 वर्ष के ऊपर के सभी मीणा युवकों को निर्देश दिया गया था कि प्रत्येक दिन थाने में उपस्थिति दर्ज करावें।
- जयराम पेशा कानून को समाप्त करने के लिये 1933 में एक संगठन बना था – **मीणा क्षत्रिय महासभा**
- 1944 में नीम का थाना (सीकर) में मीणा जनजाति की एक महासभा हुयी इसकी अध्यक्षता **जैन मुनि मगनसागर** ने की थी।
- इस महासभा के दौरान मीणा समाज के जागृति के लिये एक समिति का गठन किया गया – **मीणा सुधार समिति**
- मीणा सुधार समिति के अध्यक्ष थे – **प. बंधीधर शर्मा**

## दादर्शी कानून

- चौकीदार मीणाओं को **टैक्स या हरजाना** देना पडता था।
- **1945** में मीणाओं ने **राजव्यापी आन्दोलन** प्रारंभ कर दिया।
- **23 अक्टूबर 1946** को मीणाओं ने मुक्ति दिवस के रूप में मनाया।
- **1952** को जयराम पेशा कानून रद्द कर दिया गया।
- मीणाओं ने अपने मूलभूत अधिकारों को प्राप्त किया।

# 19. प्रजामण्डलों का विकास

- राजस्थान में राजनीतिक जागरण के लिये **बिजौलिया आन्दोलन** को उत्तरदायी माना जाता है।
- राजस्थान में जनजागृति का जनक कहा जाता है – **अर्जुन लाल सेठी को**
- राजस्थान में राष्ट्रीय चेतना का विकास किया – **दयानन्द सरस्वती**
- कांग्रेस ने रियासतों में होने वाली इस जनजाग्रति को राजनैतिक जाग्रति में बदलने के लिये तथा उत्तरदायी शासन की स्थापना कररने के लिये **अखिल भारतीय देशी लोक राज्य परिषद** का गठन किया।
- अखिल भारतीय देशी लोक राज्य परिषद की स्थापना – **1927 में मुम्बई** में तथा इसके अध्यक्ष **जवाहर लाल नेहरू थे।**
- राजस्थान में इस संस्था द्वारा उत्तरदायी शासन की स्थापना के लिये जिन इकाईयों को सहयोग दिया गया – **प्रजामण्डल**
- प्रजामण्डल आन्दोलन का प्रमुख उद्देश्य **लोकतांत्रिक सरकारों** की स्थापना या उत्तरदायी शासन की स्थापना।
- राजस्थान में पहला प्रजामण्डल स्थापित हुआ – **जयपुर प्रजामण्डल (1931)**
- राजस्थान में पहली उत्तरदायी सरकार स्थापित हुई थी – **शाहपुरा (भीलवाडा)**

## राजस्थान में प्रजा मण्डल

(1) **जयपुर प्रजामण्डल** – 1931
संस्थापक – अर्जुन लाल सेठी
अध्यक्ष – कपूर चन्द्र पाटनी

(2) **मेवाड प्रजामण्डल** – 1938
संस्थापक – माणिक्य लाल वर्मा
अध्यक्ष – बलवन्त सिंह मेहता

(3) **भरतपुर प्रजामण्डल** – 1938
संस्थापक – मास्टर आदित्येन्द्र
अध्यक्ष – गोपी लाल यादव
नोट :– 1939 में भरतपुर प्रजामण्डल का नाम बदलकर भरतपुर प्रजा परिषद' कर दिया गया।

(4) **कोटा प्रजामण्डल** – 1938
संस्थापक व अध्यक्ष – पण्डित नेनूराम शर्मा
कोटा प्रजामण्डल 1934 में हाडौती प्रजामण्डल के नाम से अस्तित्व में आ चुका था।

(5) **सिरोही प्रजामण्डल** – 1939 में
संस्थापक व अध्यक्ष – गोकुल भाई भट्ट

(6) **डूंगरपुर प्रजामण्डल** – 1944
संस्थापक व अध्यक्ष – भोगीलाल पाण्डया

(7) **बीकानेर प्रजामण्डल** – 1936
संस्थापक व अध्यक्ष – मेधाराम वैद्य

(8) **बूंदी प्रजामण्डल** – 1931

संस्थापक व अध्यक्ष – कांतिलाल

(9) **बांसवाडा प्रजामण्डल** – 1943

संस्थापक व अध्यक्ष – भूपेन्द्र नाथ त्रिवेदी

(10) **कुशलगढ प्रजामण्डल** – 1942

सस्थापक व अध्यक्ष – सांवरलाल निगम

(11) **करौली प्रजामण्डल** – 1939

संस्थापक व अध्यक्ष – त्रिलोकचन्द माथुर

(12) **शाहपुरा प्रजामण्डल** – 1938

संस्थापक व अध्यक्ष – रमेश चन्द्र ओझा

(13) **अलवर राज्य प्रजामण्डल** – 1938

संस्थापक वव अध्यक्ष – हरिनारायण शर्मा

(14) **धौलपुर प्रजामण्डल** – 1936

संस्थापक व अध्यक्ष – कृष्ण दत्त पालीवाल

(15) **जैसलमेर प्रजामण्डल** – 1945

संस्थापक व अध्यक्ष – मीठा लाल व्यास

जैसलमेर प्रजामण्डल 1939 में जैसलमेर राज्य परिषद के नाम से अस्तित्व में आ चुका था।

(16) **झालावाड प्रजामण्डल** – 1946

संस्थापक व अध्यक्ष – मांगीलाल

(17) **प्रतापगढ प्रजामण्डल** – 1945

संस्थापक व अध्यक्ष – चुन्नी लाल तथा अमृतालाल

(18) **मारवाड प्रजामण्डल** – 1934 में

अध्यक्ष – अभयमल जैन

**मारवाड प्रजामण्डल से सम्बन्धित –**

- मारवाड में राजनैतिक जाग्रति फैलाने के लिये चांदमल सुराणा ने **1920** में मारवाड सेवा संघ की स्थापना की।
- मारवाड रियासत ने इस संघ की गतिविधियों को प्रतिबंधित कर दिया।
- पुनः इस संघ के कार्यकर्ता **जयनारायण व्यास ने 1923** में मारवाड हितकारिणी सभा के नाम से नया संगठन बनाया।
- मारवाड प्रजामण्डल की स्थापना 1934 में **भंवरलाल सर्राफ** एवं **अभयमल जैन** ने की।
- 1938 में मारवाड प्रजामण्डल का नाम बदलकर मारवाड लोक सेवा परिषद किया गया।

# 20. एकीकरण

- विश्व का सबसे चर्चित एकीकरण माना जाता है – **जर्मनी का**
- जर्मनी के एकीरकरण का श्रेय – **बिस्मार्क**
- भारत के एकीकरण का श्रेय – **सरदार बल्लभ भाई पटेल**
- इसलिये भारत का विस्मार्क कहा जाता है – **सरदार बल्लभ भाई पटेल को**
- राजस्थान के एकीकरण का श्रेय – **बल्लभ भाई पटेल (राज. का निर्माता)**
- जबकि आधुनिक राजस्थान का जनक कहा जाता है – **मोहनलाल सुखाडिया को**
- भारत का लौह पुरूष कहा जाता है – **वल्लभ भाई पटेल को**
- राजस्थान का लौहपुरूष कहा जाता है – **दामोदर व्यास**
- राजस्थान के एकीकरण के समय रियासते थीं – **19**
- ठिकाने थे – **3**
- केन्द्र शासित प्रदेश – (1) **अजमेर मेरवाडा**

## रियासतों के नाम

| | | |
|---|---|---|
| 1. भरतपुर | 2. धौलपुर | 3. अलवर |
| 4. करौली | 5. कोटा | 6. शाहपुरा |
| 7. प्रतापगढ | 8. झालावाड | 9. किशनगढ |
| 10. डूंगरपुर | 11. बूंदी | 12. टोंक |
| 13. बांसवाडा | 14. उदयपुर | 15. जयपुर |
| 16. जोधपुर | 17. बीकानेर | 18. जैसलमेर |

## प्रमुख ठिकाने

1. **नीमराणा** ( अलवर)
2. **लावा** (जयपुर)
3. **कुशलगढ** (बांसवाडा)

- एकमात्र केन्द्र शासित प्रदेश था – **अजमेर मेरवाडा**
- इसे अंग्रेजों ने प्रत्यक्षतः (सीधे तौर) मराठों से छीना था इसलिये यह अंग्रेजों के पूर्ण नियंत्रण में रहा और **केन्द्र शासित प्रदेश** कहलाया।

## पहला चरण – मत्स्य संघ

- **रियासतें** –4 :– भरतपुर, धौलपुर, करौली, अलवर
- प्रथम चरण का नाम – **मत्स्य संघ**
- उद्घाटन तिथि – **18 मार्च 1948**
- उद्घाटन कर्ता – **एन. वी. गाडगिल**
- प्रधानमंत्री – **शोभारमा कुमावत**
- राजधानी – **अलवर**
- राज प्रमुख – **उदयभानसिंह (धौलपुर)**
- उप प्रधानमंत्री – **जुगलकिशोर चतुर्वेदी (भरतपुर)**
- **शोभाराम कुमावत** का संबंध अलवर प्रजामण्डल आन्दोलन से था।
- मत्स्य संघ नामकरण का सुझा दिया – **कन्हैया लाल माणिक्य लाल मुंशी**

## दूसरा चरण – राजस्थान संघ

- **रियासतें** – 9 –कोटा, शाहपुरा, प्रतापगढ, झालावाड, किशनगढ, बूंदी, टोंक, डूंगरपुर तथा बांसवाडा।
- उद्घाटन तिथि – **25 मार्च 1948**
- उद्घाटन कर्ता – **एन.बी.गॉडगिल**
- प्रधानमंत्री – **गोकुल लाल असावा**
- राजधानी – **कोटा**
- राजप्रमुख – **भीमसिंह (कोटा)**

## तीसरा चरण – संयुक्त राजस्थान

- **रियासतें** ( 9 + 1) = 10 राजस्थान संघ + उदयपुर
- उद्घाटन तिथि – 18 अप्रेल 1948 उद्घाटन कर्ता – **जवाहर लाल नेहरू**
- प्रधानमंत्री – **माणिक्या लाल वर्मा**
- राजधानी – **उदयपुर**
- राज प्रमुख – **भूपालसिंह (उदयपुर)**
- उप राज प्रमुख – **भीमसिंह (कोटा)**

## चौथा चरण –(वृहद राजस्थान )

- **रियासतें** – (10 + 4) = 14
- (संयुक्त राजस्थान + जयपुर, जोधपुर, जैसलमेर, बीकानेर)
- उद्घाटन तिथि –**30 मार्च 1949**
- उद्घाटन कर्ता – **बल्लभ भाई पटेल**
- प्रधानमंत्री – **हीरालाल शास्त्री**
- राजधानी – **जयपुर**
- राज प्रमुख – **मानसिंह द्वितीय (जयपुर)**
- उपराज प्रमुख – **भीमसिंह** (कोटा)
- महाराज प्रमुख – **भूपालसिंह** (उदयपुर)
- प्रत्येक वर्ष चौथे चरण की उद्घाटन तिथि को राजस्थान दिवस के रूप में मनाया जाता है – **30 मार्च**

## **पांचवा चरण** – संयुक्त वृहत्तर राजस्थान)

- **रियासतें** – 14 + 4 = 18 ( बृहद राजस्थान + मत्स्य संघ)
- उद्घाटन तिथि – 15 मई 1949

## छंठवा चरण – राजस्थान

- **रियासतें** – 18 + 1 = 19
- (संयुकत वृहतर राजस्थान + सिरोही)
- उद्घाटन तिथि – **26 जनवरी 1950**
- आधिकारिक रूप से राजस्थान शब्द का प्रयोग किया गया – **26 जनवरी 1950**
- राजस्थान के पहले मुख्यमंत्री – **हीरालाल शास्त्री**
- उससे पहले मुख्यमंत्री को प्रधानमंत्री कहा जाता था।
- संविधान लागू होते समय राज्यों की तीन श्रेणियां थीं
- A श्रेणी + B श्रेणी + C श्रेणी
- A श्रेणी – **राज्यपाल पद**
- B श्रेणी – **राजप्रमुख पद**
- C श्रेणी – केन्द्र शासित राज्य
- राजस्थान छठवें चरण में (संविधान लागू होते समय) **'बी'** श्रेणी का राज्य था।

## सातवां चरण :–एकीकृत राजस्थान

- उद्घाटन तिथि – 1 नवम्बर 1956
- सम्मलित क्षेत्र – **दिलवाडा तथा आबू** तहसीलें गुजरात से तथा मध्यप्रदेश का **सुनेल टप्पा** तथा **अजमेर मेरवाडा** प्रदेश को जोडा गया।

**बाहर किये गये क्षेत्र :– गुजरात व मध्यप्रदेश में से**

- झालावाड से **सिरोंज** – मध्यप्रदेश को दिया
- कोटा का कुछ भाग – मध्य प्रदेश को दिया
- सातवें चरण में राजप्रमुख के पद को समाप्त करके राज्यपाल पद प्रारंभ हो गया।
- राजस्थान 'बी' श्रेणी के राज्यों से निकलकर 'ए' श्रेणी का राज्य बना – **1 नवम्बर 1956**
- राजस्थान में पहला राज्यपाल बना – **1 नवम्बर 1956** **गुरूमुख निहालसिंह**

# 21. प्रमुख व्यक्तित्व

## अर्जुन लाल सेठी

- यह राजस्थान के क्रान्तिकारी आन्दोलन के प्रमुख नेता माने जाते हैं।
- इन्होंने जयपुर में क्रान्तिकारियों को प्रशिक्षण देने के लिये स्थापना की थी – **वर्धमान विद्यालय की** (1907)
- राजस्थान के ऐसे क्रान्तिकारी जिन्हें होते हुये दफनाया गया– **अर्जुन लाल सेठी**
- अर्जुनलाल सेठी की प्रमुख पुस्तकें –
  1. **मदन पराजय** 2. **पार्श्व यज्ञ**
- अर्जुनलाल सेठी का प्रमुख कार्य क्षेत्र जयपुर था।
- जयपुर प्रजामण्डल का संस्थापक माना जाता है – **अर्जुन लाल सेठी को**
- संपूर्ण राजस्थान में राजनैतिक जाग्रति के जनक कहे जाते हैं– **अर्जुन लाल सेठी**

## जमना लाल बजाज

- इन्हें गांधी जी का **पांचवा पुत्र** कहा जाता है।
- गांधी जी की हिन्दी साप्ताहिक समाचार पत्रिका – **नवजीवन**
- नवजीवन को पूर्ण वित्तीय सहायता **जमनालाल बजाज** ने दी थी।
- जमनालाल बजाज ने अंग्रेजों द्वारा दी गयी उपाधि लौटायी थी– **रायबहादुर की उपाधि**
- जमनालाल बजाज ने राजस्थान में प्रजातांत्रिक आन्दोलन को बढाने के लिये दिल्ली में एक संगठन की स्थापना की थी–**राजपूताना मध्य भारत सभा**
- राजस्थान में प्रजामण्डलीय आन्दोलन का सूत्रपात करने का श्रेय – **जमनालाल बजाज**
- जमनालाल बजाज ने सत्याग्रह आश्रम की स्थापना की थी – **1921 वर्धा**

## माणिक्या लाल वर्मा

- माणिक्या लाल वर्मा का संबंध **मेवाड प्रजामण्डल** आन्दोलन से है।
- **माणिक्य लाल वर्मा** को मेवाड प्रजामण्डल का संस्थापक/जनक कहा जाता है।
- माणिक्य लाल वर्मा ने राष्ट्रीय भावना जगाने के लिये प्रयोग किया था – **गीतों एवं कविताओं का**
- माणिक्य लाल वर्मा का **पंछीडा नामक गीत** काफी लोकप्रिय हुआ।
- माणिक्य लाल वर्मा को प्रधानमंत्री बनाया गया – **संयुक्त राजस्थान का**
- माणिक्य लाल वर्मा द्वारा लियी गयी प्रमुख पुस्तक – **मेवाड का वर्तमान शासन**

## जयनारायण व्यास

- इनका प्रमुख कार्य क्षेत्र था – मारवाड
- जयनारायण व्यास को राजस्थान में **सामन्तशाही** के खिलाफ आवाज उठाने वाला पहला व्यक्ति माना जाता है।
- जयनारायण व्यास ने राजस्थानी भाषा का पहला समाचार पत्र प्रकाशित किया –**(ब्यावर) अंगीबाज 193**2
- 1936 में जयनारायण व्यास ने **अखण्ड भारत** नामक दैनिक पत्र प्रकाशित किया।
- जयनारायण व्यास को **लोकनायक** उपाधि के नाम से जाना जाता है।
- जयनारायण व्यास ने एक अंग्रेजी समाचार पत्र प्रकाशित किया – **पीप समाचार पत्र**
- 1923 में जयनारायण व्यास ने **मारवाड हितकारिणी सभा** का गठन किया था।

## विजयसिंह पथिक

- इनका जन्म उत्तरप्रदेश के बुलन्द शहर में हुआ।
- विजयसिंह पथिक का मूल नाम था – भूपसिंह
- राजस्थान में किसान आन्दोलनों का अग्रदूत कहा जाता है – **विजयसिंह पथिक**
- 1920 में वर्धा से विजयसिंह पथिक ने एक समाचार पत्र प्रकाशित किय – **राजस्थान केसरी**
- 1921 में अजमेर में इन्होंने समाचार पत्र प्रकाशित किया – **नवीन राजस्थान**
- विजयसिंह पथिक ने वीर भारत समाज नामक संगठन की स्थापना की।
- राजस्थान सेवा संघ की स्थापना में प्रमुख भूमिका थी – **विजयसिंह पथिक की**
- विजयसिंह पथिक की प्रमुख पुस्तक का नाम – **''व्हाट आर द इण्डियन स्टेट''**

## केसरीसिंह वारहठ

- इनका कार्य क्षेत्र – **शाहपुरा (भीलवाडा)**
- केसरीसिंह वारहठ की प्रमुख पुस्तक – **रूठी रानी व चेतावणी री चूंगटिया।**
- रूठी रानी पुस्तक – **मारवाड के शासक राव मालदेव की पत्नी उन्मोद पर आधारित**
- **चेतावणी री चुंगटिया** – 1903 में लार्ड कर्जन के दिल्ली दरबार में जा रहे मेवाड के महाराणा फतेहसिंह को 13 सोरठे (चेतावणी री चूंगटिया) लिखकर भेजे जिन्हें पढकर महाराणा में स्वाभिमान जाग गया औंर दिल्ली दरबार में उपस्थित होने से इंकार कर दिया।
- केसरी सिंह बारहठ ने गोपालसिंह खरवा के साथ मिलकर जिस संगठन की स्थापना की –**वीर भारत सभा**
- केसरी सिंह बारहठ के भाई का नाम – **जोरावर सिंह बारहठ**
- जोरावर सिंह बारहठ ने 1912 में दिल्ली दरबार के समय लार्ड हार्डिंग्स पर बम फेंका था।

- केसरीसिंह बारहठ के पुत्र का नाम था – **प्रतापसिंह बारहठ**
- प्रतापसिंह बारहठ से संबंधित चर्चित जेल – **बरेली जेल**
- बरेली जेल में प्रतापसिंह से पूछताछ करने वाले जेलर का नाम– **क्लीव लैण्ड**
- क्लीव लैण्ड (जेलर) के द्वारा प्रतापसिंह को समझाने पर प्रतापसिंह का जबाब था – *''मेरी मां को रोने दो, जिससे किसी मां को रोना न पडे, अपनी मां को हंसाने के लिये मैं हजारों माताओं को रूलाना नहीं चाहता।''*

## सागरमल गोपा

- जैसलमेर जिले के प्रमुख क्रान्तिकारी थे।
- सागरमल गोपा को जले में यातनायें देकर जलाकर मार दिया गया – **1946 में**
- सागरमल गोपा ने जैसलमेर में सर्वहितकारी वाचनालय की स्थापना की।
- सागरमल गोपा की प्रमुख पुस्तक का नाम – **आजादी के दीवाने व जैसलमेर में गुण्डाराज।**
- उस समय जैसलमेर के शासक थे –**महारावल जवाहर सिंह**

## बलवन्त सिंह मेहता

- कार्य क्षेत्र – मेवाड
- 1938 में मेवाड प्रजामण्डल के पहले अध्यक्ष बलवन्त सिंह मेहता
- उदयपुर में प्रतापसभा की स्थापना की – **बलवन्त सिंह मेहता ने (जनजाग्रति के लिये)**
- उदयपुर में मोतीमगरी नामक स्थान पर राणा प्रताप स्मारक की स्थापना की थी –बलवन्त सिंह मेहता ने
- उदयपुर में बनवासी छात्रावास की स्थापना – **बलवन्तसिंह मेहता ने**
- हल्दीघाटी में बम बनाने का प्रशिक्षण शिविर लगाया था – **बलवन्त सिंह मेहता**

## भोगीलाल पांड्या

- कार्यक्षेत्र – डूंगरपुर
- भोगीलाल पाण्ड्या को बागड का गांधी कहा जाता है।
- इन्होंने बागड सेवा मन्दिर की स्थापना की थी।
- इन्होंने हरिजन सेवा समिति की स्थापना की थी।
- इन्हें डूंगरपुर प्रजामण्डल का संस्थापक माना जाता है।

## गोकुल भाई भट्ट

- कार्यक्षेत्र – **सिरोही**
- गोकुल भाई भट्ट को राजस्थान का गांधी कहा जाता है।
- ये राजस्थान के प्रमुख सर्वोदयी नेता माने जाते हैं।
- राजस्थान में शराबबंदी के लिये सबसे बडा अभियान चलाया था – **गोकुल**
- राजस्थान प्रदेश कांग्रेस के पहले अध्यक्ष थे – **गोकुल**
- सिरोही रियासत का प्रधानमंत्री बनाया गया था – **गोकुल**
- सिरोही को राजस्थान में सम्मलित करने का श्रेय – **गोकुल भाई भट्ट**

## हीरालाल शास्त्री

- हीरालाल शास्त्री का जन्म जयपुर के **जोबनेर** में हुआ था।
- हीरालाल शास्त्री राजस्थान के **प्रथम मुख्यमंत्री** थे।
- हीरालाल शास्त्री ने 1936 में **शांताबाई शिक्षा कुटीर** की स्थापना की।
- इसे वर्तमान में **वनस्थली विद्यापीठ** कहा जाता है।
- हीरालाल शास्त्री की प्रमुख पुस्तक – **प्रत्यक्ष जीवन शास्त्र**
- हीरालाल शास्त्री का प्रमुख गीत – **प्रलय प्रतीक्षा नमो नमो**

## हरिभाऊ उपाध्याय

- इनका जन्म 1893 ग्वालियर में हुआ था।
- इन्होंने अजमेर में 1927 में गांधी आश्रम की स्थापना की।
- 1952 में अजमेर के प्रथम मुख्यमंत्री बने।

## अमरचंद बांठिया

- इनका जन्म 1791 ईस्वी में बीकानेर में हुआ था।
- ये व्यापार करने गये थे – **ग्वालियर**
- ग्वालियर राज परिवार ने इन्हें उपाधि दी – **नगर सेठ**
- 1857 क्रान्ति में राजस्थान का पहला शहीद – **अमरचंद बांठिया**
- राजस्थान का **मंगल पाण्डे** कहा जाता है – **अमरचंद बांठिया** 1857 की क्रान्ति का **भामाशाह** कहा जाता है – **अमरचंद बांठिया**
- अमरचंद बांठिया को फांसी दी गई – **22 जून 1857 (ग्वालियर में)**

## डूंगजी-जवाहरजी

- ये सीकर जिले के रहने वाले थे।
- इन्होंने 1847 में नसीराबाद छावनी को लूट लिया था।
- डूंगजी को गिरफ्तार करके **आगरा के किले** में रखा गया था।

## कालीबाई

- 13 वर्षीय बालिका कालीबाई ने अपनी जान की बाजी लगाकर अपने गुरू को बचाया था।
- 19 जून 1947 को डूंगरपुर जिले के रास्तापाल गांव में पुलिस विद्यालय को बंद कराने गई थी।
- जहां सेंगा भाई नाम के अध्यापक को पुलिस ने ट्रक से बांधकर घसीटा।
- अपने गुरू को बचाने के लिये कालीबाई आगे आई। पुलिस ने उस पर गोलियां चलाई और 21 जून 1947 को कालीबाई की हत्या हो गई।
- इसे **रास्तापाल काण्ड** कहा जाता है।

## बाल मुकुंद बिस्सा

- इनका जन्म 1930 पीलवां गांव (डीडवाना) में हुआ था।
- भूंख हडताल के कारण 19 जून 1942 को जोधपुर में इनका निधन हुआ था।

## गोपालसिंह खरवा

- इनका जन्म अजमेर जिले के खरवा गांव में हुआ था।
- इन्होंने **वीर भारत सभा** नामक एक संगठन बनाया था।

## जोरावरसिंह बारहठ

- इनका जन्म 1883 में उदयपुर में हुआ था।
- इन्होंने 12 दिसम्बर 1912 को लॉर्ड हार्डिंग के जुलूस पर बम फेंका था।
- इन्हें **राजस्थान का चन्द्रशेखर** कहा जाता है।

## अन्य तथ्य

☞ मराठों का राजस्थान में सर्वप्रथम प्रवेश हुआ था – **बूंदी में**

☞ तात्यां टोपे ने राजस्थान में सर्वप्रथम प्रवेश किया था – **मांडलगढ (भीलवाडा)**

☞ किसने कहा था कि यदि मैं जीवित रहा तो जयपुर को धूल में मिला दूंगा – **महादजी सिंधियां (तुंगा युद्ध के बाद)**

☞ गोद निषेध नीति के तहत राजस्थान में सर्वप्रथम **ब्यावर** को अंग्रेजी साम्राज्य में मिलाया था।

☞ राज्य हडप नीति के तहत राजस्थान की किस रियासत को हडपने की कोशिश की गई – **करौली**

☞ 1857 क्रान्ति में अंग्रेजों की सर्वप्रथम सहायता किसने की थी – **स्वरूपसिंह (मेवाड)**

☞ नीमच में 1857 क्रान्ति का नेतृत्व किया था – **अली बेग और हीरासिंह**

☞ बिथौडा युद्ध में अंग्रेजी सेना का नेतृत्व किया था – **ओनाडसिंह (मारवाड का सेनापति) , हीथकोट (अंग्रेज अधिकारी)**
सबसे लम्बे समय तक कौनसी रियासत क्रान्तिकारियों के नियंत्रण में रही – **कोटा**

☞ **रानी जी** के नाम से जाना जाता है – **लक्ष्मीकुमारी चूडावत**

☞ महात्मा गांधी की मानस पुत्री – **श्रीमती सत्यभामा (बूंदी)**

☞ 'वागड वा' के नाम से जाना जाता है – **मणिबहिन पंड्या**

☞ राजस्थान की प्रथम महिला पत्रकार – **कमला देवी (अजमेर)**

☞ सर्वाधिक तेज गति से चरखा कातने का कीर्तिमान – **अंजना देवी चौधरी (सीकर)**

☞ **शिक्षा संत** के नाम से प्रसिद्ध हैं – **केशवानंद (सीकर)**

☞ **दीपक** नामक हिन्दी मासिक पत्रिका प्रकाशित की – **केशवानंद ने**

☞ प्रसिद्ध गांधीवादी एवं सर्वोदयी नेता – **सिद्धराज ढढ्डा**

☞ आज का बीकानेर नामक समाचार पत्र प्रकाशित किया – **रघुवर दयाल गोयल**

☞ प्रजामण्डल आन्दोलन में प्रथम सत्याग्रही – **रमेश चंद व्यास (भीलवाडा)**

☞ अमरदास वैरागी के नाम से वेश बदलकर रहे – **जोरावरसिंह बारहठ**

☞ हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोशियेशन की स्थापना – **अजमेर में (1931 में) ज्वाला प्रसाद शर्मा ने**

☞ लोक जीवन नामक समाचार पत्र प्रकाशित किया – **श्यामसुंदर व्यास ( जोधपुर)**

☞ शेखावाटी में **जकात किसान आंदोलन** का नेतृत्व किया – **पंडित नरोत्तम लाल जोशी**

☞ उदयपुर में वनवासी छात्रावास की स्थापना की – **बलवंतसिंह मेहता**

☞ खांदलोई आश्रम की स्थापना की – **सागवाडा (उदयपुर) में माणिकलाल वर्मा ने**

☞ राजस्थान में उग्र क्रान्ति का जनक कहा जाता है – **अर्जुनलाल सेठी**

☞ अलवर किसान आंदोलन का नेतृत्व किया – **माधोसिंह और गोविंद सिंह ने**

☞ नीमूचाणा हत्याकाण्ड का खलनायक – **गोपालदास**

☞ बिजौलिया किसान आंदोलन के समय किस स्थान पर मृत्यु भोज के समय सभा हुई – **गिरधारी पुरा**

# 22. प्रमुख संगठन

## राजस्थान सेवा संघ

☞ स्थापना –1919 ☞ मुख्यालय – बर्धा
☞ **संस्थापक** – विजयसिंह पथिक, अर्जुन लाल सेठी, रामनारायण चौधरी
☞ 1920 में राजस्थान सेवा संघ का मुख्यालय अजमेर परिवर्तित कर दिया गया।
☞ राजस्थान सेवा संघ द्वारा प्रकाशित प्रमुख समाचार पत्र – **राजस्थान केसरी, नवीन राजस्थान, तरूण राजस्थान**

## राजपूताना मध्य भारत सभा

☞ स्थापना – 1918 में (दिल्ली)
☞ प्रथम सभापति – जमनालाल बजाज
☞ राजस्थान में प्रजामण्डलों के विकास का सूत्रधार माना जाता है – **जमनालाल बजाज**
☞ राजस्थान मध्य भारत सभा का उद्देश्य था – राजस्थान में **प्रजातान्त्रिक विकास**

## परोपकारिणी सभा

☞ स्थापना – 1883, अजमेर
☞ संस्थापक – दयानन्द सरस्वती
☞ उद्देश्य – राष्ट्रीय चेतना का विकास एवं सामाजिक जाग्रति।

## दयानन्द सरस्वती से संबंधित

☞ **आर्य समाज** के संस्थापक।
☞ इन्होंने **शुद्धि आन्दोलन** चलाया।
• **'वेदों की ओर लौटो'** नामक नारा दिया।
• सत्यार्थ प्रकाश नामक पुस्तक लिखी इस पुस्तक का अधिकांश भाग उदयपुर में लिखा गया।
• अजमेर में इनकी मृत्यु हुयी। (दीपावली के दिन विष देने के कारण)
• दयानन्द सरस्वती का राजस्थान में प्रमुख केन्द्र था – अजमेर
• दयानन्द सरस्वती का प्रमुख आदिवासी शिष्य था – गोविन्द गिरि

## सम्पसभा

☞ स्थापना – 1883 में (सिरोही) ☞ संस्थापक – गोविन्द गिरी

## सर्व हितकारिणी सभा

☞ स्थापना – 1907 में (बीकानेर)
☞ संस्थापक कन्हैयालाल ढूंढ तथा स्वामी गोपालदास
☞ इस सभा का कार्यक्षेत्र बीकानेर–चूरू था।

## आचरण सुधारिणी सभा

☞ स्थापना – 1910 में ☞ संस्थापक – यमुना प्रसाद शर्मा

## नागरिक प्रचारिणी सभा

☞ स्थापना – 1934
☞ संस्थापक – ज्वाला प्रसाद जिज्ञासु (धौलपुर)

## वाल्टर कृत राजपूत हितकारिणी सभा

☞ स्थापना –1889
☞ संस्थापक – तात्कालीन ए.जी.जी. वाल्टर
☞ कार्य क्षेत्र – अजमेर

## वर्धमान विद्यालय

☞ संस्थापक – अर्जुन लाल सेठी ☞ प्रमुख क्षेत्र – जयपुर
☞ प्रमुख कार्य – क्रान्तिकारियों को प्रशिक्षण देना।

## वीर भारत सभा

☞ संस्थापक – गोपालसिंह खरवा एवं केसरी सिंह वारहठ
☞ प्रमुख कार्य –क्रान्तिकारियों का गुप्तचर संगठन था।

## वीर भारत समाज

☞ संस्थापक – विजय सिंह पथिक
☞ प्रमुख कार्य –क्रान्तिकारियों के लिये शस्त्र संग्रह करना।

## आदिवासी एवं दलित संगठन

1. **वाल्मिकी संघ** –हरिनारायण, अलवर
2. **चरखा संघ** – जमनालाल बजाज, जयपुर
3. **सेवा संघ** – भोगीलाल पांड्या ( डूंगरपुर)
4. **हरिजन सेवा समिति** – भोगीलाल पाण्डया ( डूंगरपुर)
5. **बागड़ सेवा मन्दिर** – भोगीलाल पाण्डया ( डूंगरपुर )

• लडकियो की शिक्षा के लिये पुत्री पाठशाला की स्थापना की थी – **सर्वहितकारिणी सभा ने**
• सर्वहितकारिणी सभा ने **अछूतों की शिक्षा** के लिये स्थापित किया था – **कबीर पाठशाला**
• मारवाड में तौल आन्दोलन चलाया था – **मारवाड सेवा संघ ने**
• **खादी विकास** के लिये बनाये गये संगठन का नाम – **चरखा संगठन**

## शुद्धि आन्दोलन

• शुद्धि आन्दोलन चलाया था – **परोपकारिणी सभा ने**
• भरतपुर रियासत में **कृष्णसिंह** के समय **ठाकुर देशराज** के नेतृत्व में शुद्धि आन्दोलन चलाया था।

**1857 की क्रान्ति के समय विभिन्न रियासतों के शासक**

| रियासत | शासक | रियासत | शासक |
|---|---|---|---|
| कोटा | रामसिंह | जोधपुर | तख्त सिंह |
| उदयपुर | सज्जन सिंह | बाँसवाडा | लक्ष्मण सिंह |
| कुशलगढ़ | हम्मीर सिंह | टोंक | नवाब वजीर खां |
| भरतपुर | जसवन्त सिंह | धौलपुर | भगवन्त सिंह |
| बीकानेर | सरदार सिंह | डूंगरपुर | उदय सिंह |
| करौली | मदनपाल | झालावाड | पृथ्वी सिंह |
| जयपुर | रामसिंह द्वितीय | अलवर | विनय सिंह |
| सिरोही | शिव सिंह | | |

**एकीकरण के समय रियासतों के शासक**

| | | |
|---|---|---|
| 1. | अलवर | तत्कालीन नरेश |
| 2. | भरतपुर | बृजेन्द्रसिंह |
| 3. | धौलपुर | उदयभानसिंह |
| 4. | करौली | गणेशपाल वासुदेव |
| 5. | कोटा | भीमसिंह |
| 6. | बूंदी | बहादुर सिंह |
| 7. | झालावाड | हरिश्चन्द्र बहादुर |
| 8. | बांसवाडा | चन्द्रवीरसिंह |
| 9. | डूंगरपुर | लक्ष्मणसिंह |
| 10. | प्रतापगढ | अम्बिकाप्रताप सिंह |
| 11. | शाहपुरा | सुदर्शन देव |
| 12. | किशनगढ | सुमेरसिंह |
| 13. | टोंक | नबाज अजीजउद्दौला |
| 14. | उदयपुर | भूपालसिंह |
| 15. | जयपुर | मानसिंह द्वितीय |
| 16. | जोधपुर | हनुवंतसिंह |
| 17. | जैसलमेर | रघुनाथसिंह बहादुर |
| 18. | बीकानेर | सार्दुलसिंह |
| 19. | सिरोही | अभयसिंह |
| 20. | नीमराणा ठिकाना | राजेन्द्रसिंह |
| 21. | लावा ठिकाना | बंसप्रदीपसिंह |
| 22. | कुशलगढ ठिकाना | हरेन्द्रकुमार सिंह |